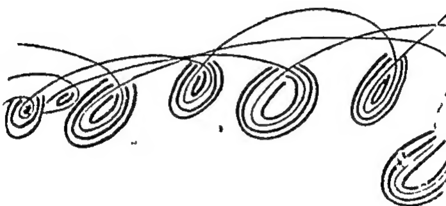
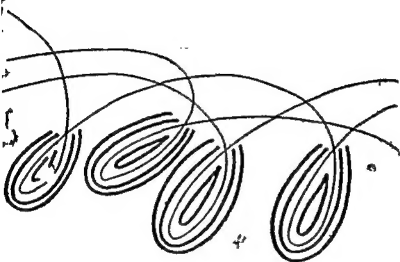
हिमालय के उस पार







हरिश्चन्द्र व्यास

© हरिश्चन्द्र व्यास

प्रकाशक आलोक प्रकाशन
[illegible], बीकानेर
प्रथम संस्करण 25 मई 1986
मूल्य तीस रुपये मात्र
आवरण हरिप्रकाश त्यागी
मुद्रक विकास आर्ट प्रिंटर्स, शाहदरा दिल्ली 32

HIMALYA KE US PAR
A Novel By
HARISH CHANDRA VYAS
Price Rs 30



स्मरणीय मा
को
उनकी प्रथम पुण्यतिथि
पर
सादर समर्पित

मेरी बात

'हिमालय के उस पार' मेरा प्रथम उपन्यास है।

पिछले पाच दशक के बदलाव का प्रत्यक्षदर्शी होने के नाते मैं समाज मे बनती बिगडती इकाइयो को देखता रहा हू।

ने समाज के ठेकेदारो, स्वार्थी अफसरो के घृणित व्यापारो एव बनावटी न्याय की चक्की मे पिसते गरीबो और निचले तबके के दबते लोगो को प्रत्यक्ष रूप मे देखा है।

मैंने इन पाच दशको मे अधी और महगी न्याय व्यवस्था की मार से बेगुनाह लोगो को दण्डित होते हुए भी देखा है।

वे सभी इस उपन्यास के पात्र हैं। मैं महसूस करता हू कि ये सभी पात्र आपको अपने इद गिर्द दिखाई देंगे।

इस उपन्यास के प्रकाशन पर मैं भाई शिवरतन डावाजी का आभारी हू जिन्होने इसे इस रूप मे प्रकाशित कर आपसे सम्पर्क करने मे मदद दी।

आशा है, आपको उपन्यास कैसा लगा मुझे लिखेंगे।

बीकाणी व्यासो का चौक
बीकानेर,
ततीया, सम्वत् 2043

हरिशचन्द्र व्यास

1

सुबह नौ बजे का समय है। सर्दियों का एक दिन। सूरज काफी चढ चुका है और धूप निकल रही है। लेकिन जाडा कम होने का नाम नही ले रहा। जनवरी के एक सुबह की वह ठण्डक प्राणी मात्र को कष्टप्रद प्रतीत हो रही है। लोग थर थर काप रहे हैं। सर्दी से बचने के लिए धनवान लोग अभी अपनी अपनी कोमल और गम रजाइया ओढे बिस्तरो मे ही पडे हैं, कुछ हीटर अथवा सिगडी के पास बठे गम पदाथ खा रहे है। कुछ समथ और सम्पन्न लोग अपने वातानुकूलित भवनो म मस्त बठे अपने भाग्य पर इतरा रहे हैं।

"राजू !" रसोई घर म बैठी उसकी मा ने पुकारा—"चाय तैयार है।" उसने उत्तर दिया—"अभी आया मा।" और वह फिर अपनी फटी हुई रजाई को मुह तक ओढ, करवट बदलकर सो गया। मा चाय पीने लगी। मा जब चाय पी चुकी और राजू आया नही तो मां ने फिर पुकारा—"चाय ठण्डी हो रही है राजू !" इस बार राजू ने कोई उत्तर नही दिया। यद्यपि उसकी नींद टूटे काफी समय हो गया था, लेकिन वह सर्दी से बचने के लिए अपने फटे पुराने गुदडू छोडने को तैयार नही था।

आखिर मा उसके कमरे मे, जो कच्चे पत्थरो से बना हुआ था, और जिस पर गोबर लीपा हुआ था, गई और वह फटी हुई रजाई एक ओर हटाते

हुए बोली—"तू कह रहा था, मेरे को सोमवार की सुबह साब ने बुलाया है।' राजू को जैसे कुछ याद आ गया हो, वह चौंक कर उठा। बोला—"हां, मां मैं तो यह बात भूल ही गया था।" और वह चारपाई से उठ खड़ा हुआ। वहां से सीधा रसोई घर में गया और बिना मुंह धोये ही उसने अपने हिस्से की चाय, जो एक पीतल के गिलास में ढक्कन देकर, चूल्हे के बीच में रखी हुई थी, पी ली। चूल्हे की आग अब तक बुझ चुकी थी और राख में रखे बर्तन में पड़ी उसकी चाय ठण्डी हो चुकी थी।

ठण्डी चाय पीने से उसे सन्तोष नहीं हुआ। कहने लगा—"मां, चाय तो पी ली है मगर वह ठण्डी बर्फ हो गयी थी क्या एक कप और बना देगी?" उसकी मां जो अभी उस कमरे में खड़ी बिस्तर समेट देने के बाद खाली डिब्बा में झांक रही थी, भीतर ही से बोली—"नहीं राजू न चाय है, न चीनी, और अभी जो आध पाव दूध लेकर आई थी, वह भी समाप्त हुआ। अब तक दो बार चाय बना चुकी हूं, पहले उठते ही पांच बजे बनाई थी, उस वक्त भी तुझे बहुत आवाजें दी, मगर तू बोला नहीं, दूसरी चाय नौ बजे बनी थी। इस बार भी कई बार पुकारने के बावजूद तू उठा नहीं। फिर चाय ठण्डी नहीं होती तो क्या गर्म होती?'

मां का उत्तर सुनकर राजू मौन हो गया। एक लोटा पानी से भर जंगल की ओर चला गया। शौचादि से निवृत्त हो, वह जल्दी घर लौट आया था। अब तक मां ने पुन चूल्हा चेता लिया था। मां ने पहले एक हण्डिया में कुछ पानी गर्म कर, चूल्हे में आग के पास रख दिया, और चूल्हे पर दूसरी हण्डिया रख दी जिसमें मुट्ठी भर दाल थी।

राजू के पांवों की आहट सुन मां रसोई घर से बाहर आई और राजू के हाथ जो मिट्टी से सने हुए थे धुलाए। राजू ने हाथ धो लेने के बाद, मां के हाथ से गर्म पानी से भरा हुआ वह बर्तन ले लिया, उसने अपने सिर पर थोड़ा-सा पानी डाला, सिर को धोया, फिर कोहनी तक हाथों को धो लेने के बाद, घुटनों से नीचे-नीचे पांव धो डाले। पानी यद्यपि गर्म था, फिर भी उसके दांत बज रहे थे और शरीर कांप रहा था। वह दौड़ कर अपने कमरे में गया और तेल की शीशी ढूंढने लगा। एक आले में उसे वह मट-मैली शीशी तो नजर आई, मगर उसमें तेल नहीं था।

राजू रसोई मे आकर मा से पूछने लगा—"थोडा तेल मिलेगा ?" मा ने उसकी ओर एक कटोरी बढाते हुए कहा—"शीशी मे इतना ही तेल था, जो मैं ले आई। चाहे दाल मे बघार दे लो, चाहे तुम अपनी इस जटा को सींच लो।" मा राजू के इन बडे-बडे बालो से बहुत परेशान थी, उसने राजू को कई बार टोका है और कई बार सलाह दी है कि तू भगवान के लिए इन बालो को कटा दे। राजू को इन बालो की हिफाजत और इन्हे सवार कर रखने के लिए रोज साबुन चाहिए रोज तेल। इस सौदे को राजू की मा बहुत ही महगा समझती थी और इसीलिए टोकाटाकी करती थी।

लेकिन राजू के लिए यह बात जैसे कोई बहुत ही मूल्यवान धरोहर थी। वह मा के लाख समझाने पर भी माथे को सफाचट नही करवा रहा था। वह मा को कह देता—"अबकी बार जब हजामत करवाऊगा तो तेरे को मेरे सिर पर एक भी बाल दिखाई नही देगा। घुटमुड करवा लूगा।" और जब वह महीने डेढ महीने बाद बाल कटवाकर आता तो मा को पता ही नही चलता। बालो की कटिंग कुछ इस तरह से वह करवाता था, जिससे बालो की लम्बाई मे कोई खास फर्क मा को नजर नही आता। हजामत बनवा लेने के बाद जब वह अपनी मा से पूछता—'मा कटिंग कैसी बनी है ?" और वह अपनी मा को आगे पीछे चारो तरफ घूमकर, नाई की कारीगरी दिखाता तो मा जल भुन जाती। कहती—'क्यो ऊन फैल करता है। बडे आदमियो की नकल करने मे कोई फायदा नही है। मैंने तेरे को हजार बार कह दिया है, तू सफाचट करवा ले, तेरा माथा हल्का हो जाएगा और साबुन तेल का फिजूल खर्च बचेगा सो अलग।" राजू फिर वही रटी-रटाई बात दोहराता। कहता—"अच्छी बात है, अगली बार ऐसा ही करूगा।' फिर वह पूछता—"और यह चोटी ?" मा झल्लाती—"चोटी तो हिन्दुओ की निशानी है। तू इसे मत कटा लेना।"

"यही तो पूछ रहा हू।"

"क्या खाक पूछ रहा है ?" मा ने कहा—' तूने साब की कोठी जाना है या यही बक झक करता रहेगा।' राजू अब तक अपने भीगे बालो मे तेल डाल चुका था और कघे से बाल सवार रहा था। बाल सवार लने के बाद, उसने सफेद लट्ठे का पायजामा और कमीज पहनी, जो ताजा धुले हुए

प्रतीत हो रहे थे। यह कपड़े कल ही उसकी मा ने धोकर रखे थे।

राजू ने मा के चरण छुए और घर से निकल पड़ा। उसको जाते देख मा ने पूछा—"रोटी खाने कब तक लौट आयेगा?" राजू ने दरवाजे के निकट रुककर कहा—"तू मेरा इन्तजार मत करना। मैं दिन मे नही आ सकूगा।" और वह एक लम्बे रास्ते पर आगे तथा और आगे बढ चला। वह सीधा आगे बढे चला जा रहा था। उसने मुडकर पीछे की ओर नही देखा।

2

कोठी पर पहुँचने पर चौकीदार ने राजू से कहा—"साब अभी-अभी दफ्तर के लिए रवाना हुए हैं।" साहब की कोठी से दफ्तर तीन मील दूर है और राजू के घर से साहब की कोठी चार मील दूर। चार मील पैदल चलकर आने से राजू कुछ थकान सी महसूस करने लगा। फिर उसके एक पाव म जख्म भी था। नई जूतिया पहनने से वह जख्म हुआ था। भूल से आज भी उसने वे नई जूतियां ही पहन ली थीं। चलने से एक पाव की जूती उसके जख्मसे रगड खाती और दद से उसके पावमे ऊपर तक करट-सा दौडता।

उसने दायें पाव की जूती निकालकर, अपने एक हाथ मे ले ली और वह दफ्तर की ओर बढ चला। राजू जब साहब के दफ्तर तक पहुँचा, उस समय एक बज चुका था। चपरासी को पूछने पर विदित हुआ कि साहब निकट के होटल मे चाय पीने के लिए गये हुए है। एक से दो बजे तक का समय 'लच' का होता है। लच टाइम मे साहब दफ्तर से बाहर निकल जाते हैं और प्राय उस होटल की एक केबिन मे बैठे रहते है। आस पास मे और भी अनेक सरकारी दफ्तर हैं। उन दफ्तरो के साहब भी इस समय होटल मे जा बैठते हैं। बडे साहबो मे बडी बातें चलती रहती है।

राजू लॉन म एक वृक्ष के नीचे बैठ गया, जहाँ पहले से अनेक व्यक्ति

बैठे हैं, शायद वे भी साहब से मिलने आये हैं और उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहे हैं। सभी लोग चुपचाप बैठे हैं। परस्पर कोई बोल नहीं रहा है। सबके चेहरों पर राजू के चेहरे की तरह ही उदासी है, मायूसी है। वातावरण में एक खामोशी है। दूर किसी घण्टाघर ने दो बजाये। राजू ने विचार किया, अब तो साहब आने ही वाले होंगे। चपरासी ने कहा था—एक से दो बजे तक लंच टाइम है। और चूंकि अब दो बज चुके थे, इसलिए साहब के आने की पूरी सम्भावना है।

लेकिन उधर साहबों में पूर्वी बंगाल की घटनाओं पर चर्चा हो रही थी। कोई कह रहा था—दो-एक दिनों में पाकिस्तानी सेना घुटने टेक देगी और बंगला देश स्वाधीनता का सच्चा सुख अनुभव करेगा। कोई कह रहा था—पूर्वी बंगाल की पाक सैन्य शक्ति के आगे कोई औकात नहीं, वह झुक जायेगा अथवा बर्बाद हो जायेगा। तो तीसरा कोई कहता—बंगला देश स्वतन्त्र हो जाने से भारत को तो कोई लाभ नहीं, उल्टा सिर दर्द हो जायेगा। पश्चिमी बंगाल तब बंगला देश में मिलने की चेष्टा करेगा और भारत के सामने एक और समस्या खड़ी हो जायेगी। तो बीच ही में कोई बोल पड़ता—पूर्वी बंगाल का विलय भारत में हो जायेगा।

इस तरह की चर्चा में अन्य साहबों की तरह बेकारी निवारण दफ्तर के साहब मि० खन्ना को भी समय का ध्यान नहीं रहा, होटल में बैठे बैठे ही चार बज गये। एक खद्दरधारी नेताजी, जिनके साथ कोई लड़की भी थी, आये और चपरासी से पूछने लगे—"तुम्हारा साहब कहां है ?" चपरासी ने बताया—"रूपम होटल में बैठे होंगे ?" नेताजी ने उस लड़की को वहीं दफ्तर के बाहर बेंच पर बैठने के लिए कहा और तब बड़बड़ाने लगे—"अफसर क्या हैं सरकार के जवाई हैं। साले एक कौड़ी का काम नहीं करते और फोकट में बड़ी-बड़ी तनख्वाएं लेते हैं। जनता की तो इन्हें परवाह ही नहीं। और परवाह हो भी तो क्यों इन हरामजादों को कोई पूछने वाला भी तो नहीं।"

उनके इस प्रवचन से दूब में, वृक्ष के नीचे बैठे लोगों को बड़ी राहत मिली। उनमें से प्रत्येक ने मन ही मन सोचा—'आखिर कोई शेर दिल खरी-खरी सुनाने वाला आया तो सही ?' यद्यपि वह नेता साहब को नहीं,

साहब के चपरासी को ही सुना रहा था। लेकिन उसकी इस वाणी से न तो साहब के चपरासी को तक्लीफ हुई, न किसी अन्य को।

आखिर वह नेता बडबडाट करता हुआ, उस होटल मे पहुचा, जो कि दफ्तर के निकट ही था। नेता जब वहा पहुचा तो खन्ना साहब को भी समय का ख्याल आया। चर्चा बीच ही मे छोड, नेताजी की ओर अभिमुख होकर बोले—"ठण्डा पियेंगे या गम ?" नेताजी ने उत्तर दिया—"मैं भ्रष्टाचारियो की ऊपर की कमाई मे से कुछ खा-पीकर पाप का भागी नही बनना चाहता। मुझे कुछ नही चाहिए।"

"आप तो नाराज हो रहे हैं।" खन्ना साहब ने कहा—"आपका काम तैयार हुआ पडा है। पहले आप कुछ पी लीजिए। फिर अपने दफ्तर चलते हैं। आपके कागज मैं अभी आपके हवाले करता हू।"

"ऐसी ही इच्छा है तो एक गिलास केवडा शर्बत मगवा लीजिए।" नेताजी ने मुस्कराते हुए कहा। अब तक उनका क्रोध शान्त हो गया था।

नेताजी जब शर्बत पी चुके तो खन्ना साहब भी उठ खडे हुए। काउटर के पास आकर नेताजी ने चोले की जेब मे हाथ डाला तो खन्ना साहब कहने लगे—"आप क्या करते हैं ? बिल चुकाने की यहा आवश्यकता नही। इस होटल मे मेरी उधार चलती है। हर महीने की पहली तारीख को हिसाब होता है।" खन्ना साहब का इतना कहना हुआ और नेताजी ने अपनी बन्द मुट्ठी जेब से निकाल ली। उनकी जेब मे उस समय कुछ था भी नहीं। अन्धे को चाहिए दो आखें, और नेताजी को तब आवश्यकता थी, खन्ना साहब के ऐसे ही शब्दो की। वे दोनो बाहर की दुकान पर, जो इसी होटल के मालिक की थी, पान खाकर दफ्तर मे चले गये।

वृक्ष के नीचे बैठे लोग, जिनमे राजू भी था, साहब को देखकर, सम्मान प्रकट करने के लिए एक बार खडे हुए और साहब जब दफ्तर मे प्रवेश कर गए तो वे पुन बैठ गए। साहब नेताजी से घुल-मिलकर बातें कर रहे थे, उन्होंने उस भीड को बैठे अथवा खडे होते नही देखा। साहब और नेताजी ने जब दफ्तर मे प्रवेश किया तो नेताजी ने मुडकर उस लडकी की ओर देखा तथा एक आख भींचकर, उसको भीतर आने का सकेत किया। नेताजी के पीछे पीछे वह लडकी भी उस दफ्तर मे घुस गई।

वह नेता किसी दल का, यूनियन या ग्रुप का नेता नही था, पदाधिकारी या कार्यकर्त्ता नही था। वह मत्री, ससद सदस्य या विधायक नही था। वह प्रमुख, प्रधान या किसी पचायत का पच सरपच भी नही था। वह नगर परिषद के अध्यक्ष का साला था, और अध्यक्ष का प्रभाव तथा शक्तिया अपने मे निहित समझता था। वह स्वभाव से निर्भय, अक्खड और लडाकू था। नगर के छोटे बडे अधिकारी और कर्मचारी उसके स्वभाव से परिचित थे। इस बात का सभी को पता था कि उसने एक बार किसी बात पर झगडा हो जाने पर एक तहसीलदार को उसी के दफ्तर मे थप्पड जमा दिया था। ऐसी ही कई हरकतो के कारण बडे बडे अफसर उससे खौफ खाते थे। दहशत मानते थे। इसलिए वर्षों का काम मिनटो मे कर देते थे।

नेताजी के साथ जो लडकी थी, वह उसी के पडौस की थी। बाल विधवा हो जाने के कारण वह जीविका के लिए कोई साधन ढढने म लगी थी। नेताजी ने उसको सरकारी सहायता और मा यता प्राप्त एक प्राइवेट मिडिल स्कूल से आठवी पास का फर्जी प्रमाण पत्र दिला दिया था और उसे कही नौकरी दिलाने के प्रयत्न मे थे। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे आज उस लडकी को लेकर बेकारी निवारण दफ्तर मे आये हुए है।

ख ना साहब ने कुर्सी पर बठते ही घटी का बटन दबाया तो बाहर खडा चपरासी भीतर चला गया। साहब ने कहा—"रमेश को बुलाओ।' चपरासी एक दूसरे कमरे मे से रमेश बाबू को बुला लाया। रमेश को देखते ही साहब ने पूछा—"सीता का इ टरव्यू काड तैयार है ?' रमेश ने कहा—' हा, साहब, तैयार है बस, आपके साइन होने बाकी हैं।" "वह काड ले आओ।" साहब ने कहा तो रमेश अपने कमरे मे जाकर, वह काड ले आया। साहब ने उस काड को सरसरी निगाह से देखा और उस पर साइन मार दिए।

काड नेताजी की ओर फेंकते हुए साहब ने कहा—"इ टरव्यू कल दस बजे है। दस अध्यापिकाओ की भर्ती होगी। मैंने सत्तर लडकियो के नाम काड इश्यू किए हैं। जिनम 14 तो एम ए हैं। 26 बी ए 30 इटर, 7 मैट्रिक और 3 मिडिल।'

"इ टरव्यू तो श्रीराम हाई स्कूल म ही होगा ?" नेताजी के पूछने

पर खन्ना साहब ने कहा—"जी।" नेताजी का अगला प्रश्न था—"क्या आप बता सकते हैं कि इन्टरव्यू लेने के लिए कौन कौन बैठेंगे ?" खन्ना साहब ने उत्तर दिया—"एक तो शिक्षा निरीक्षक सरदारजी हैं ही, एक श्रीराम हाई स्कूल का प्रधानाध्यापक होगा। एक कोई और सज्जन हैं, जिनका नाम मुझे याद नहीं आ रहा।"

"दो व्यक्तियों से तो आज ही मिल लू, तीसरे को ऐन मौके पर ही घर दबाएंगे।" कहता हुआ नेता कुर्सी से उठा और बोला—"अब इजाजत दीजिए।"

खन्ना साहब ने हाथ जोड़े। प्रत्युत्तर में नेता तथा उस लड़की ने भी हाथ जोड दिये। वे दोनों जब दफ्तर से बाहर निकल आये तो खन्ना साहब ने एक लम्बी और ठण्डी सांस ली तथा धीरे से कहा—"जान बची तो लाखों पाये।" वृक्ष के नीचे बैठी भीड़ ने नेता तथा उस लड़की को बाहर जाते हुए देखा। लड़की के हाथ में इन्टरव्यू कार्ड था और वह बहुत ही प्रसन्न प्रतीत हो रही थी, जबकि दफ्तर में आते समय वह भी उस भीड़ के लोगों की तरह उदास और खिन्न दिखाई दे रही थी। नेता भी प्रसन्न था, अफसरों पर अपनी धाक का अनुमान कर वह गर्व से सीना तानकर चल रहा था और उसकी आकृति पर अभिमान की छाया थी।

वृक्ष के नीचे बैठी भीड़ में से कुछ युवक उठे और दफ्तर के आगे बने बरामदे में खड़े हो गये, उन युवकों में एक राजू भी था। कुछ लोग अभी उस दरख्त के नीचे बैठे थे। दरख्त की छाया कुछ लम्बी हो गई थी और उसने पहले वाला स्थान छोड़ दिया था। इसलिए भीड़ के लोग भी उस छाया के साथ साथ एक कतार बनाकर बैठ गये। वे कभी उस छाया में बैठ रहे थे तो कभी धूप में। धूप सताती तो छाया में बैठ जाते और छाया नहीं सुहाती तो धूप सेवन करने लगते। लेकिन भीड़ के अधिकांश व्यक्तियों को धूप ही प्यारी लग रही थी। वे देर से धूप में जमे बैठे थे।

जो लोग बार-बार जगह बदल रहे थे, वे धूप अथवा छाया की वजह से कम और अपने मन की बेचैनी के कारण अधिक आन्दोलित थे। वे साहब के दर्शन और उनसे दो बातें करने के लिए आतुर हो रहे थे।

चपरासी की नजर बचाकर, राजू ने चिक उठाई और वह साहब के

दफ्तर म प्रविष्ट हो गया। साहब कुछ कागजो पर हस्ताक्षर रगड रहे थे, उन्हे यह आभास ही नही हुआ कि दफ्तर मे कोई घुस आया है। साहब को काय मे व्यस्त देख राजू एक कुर्सी के निकट, सीधा तनकर खडा हो गया और महात्मा गाधी के उस चित्र को देखने लगा—जो साहब की कुर्सी के पीछे वाली दीवार पर छत के करीब टगा हुआ था। गाधी जी एक हाथ के सकेत से जैसे कह रहे थे—धय रखो।

एकाएक टलीफोन की घण्टी बज उठी। साहब ने रिसीवर उठाया और कहा—"हैलो" उधर से कोई पुरुष बोल रहा था—"मैं एम एल ए ओसवाल बोल रहा हू, मि खन्ना चाहिए।"

"जी मैं खन्ना ही अरज कर रहा हू।"

"उस लडके का क्या हुआ ?"

"किस लडके का ?"

"जिसके बारे म आपसे मैंने कहा था।"

"हा, साहब, याद आ गया है। वही अमरनाथ ?"

"हा, हा, मैं अमर के बारे में ही पूछ रहा हू।"

"पच्चीस तारीख को राजस्थान नहर मे कुछ क्लक भर्ती किये जायेंगे, आप कल ही उस मेरे यहा भेज दीजिए। मैं उस इटरव्यू काड दे दूगा। आगे आप सम्भालिए।"

"आगे की बात आप मेरे पर छोडें, आप तो कृपा कर, उसे काड दे दीजिए। कल वह आपके पास आ रहा है।"

"ठीक है साहब।" खन्ना ने कहा और रिसीवर यथास्थान रख दिया। जब खन्ना साहब टेलीफोन पर एम एल ए मि ओसवाल से बात कर रहे थे, तभी उनकी दृष्टि राजू पर पडी। रिसीवर रख कर खन्ना साहब ने कहा—"तुम यहाँ क्यो खडे हो ?"

"आपने कल मुझे कहा था साहब।"

"क्या कहा था ?"

"मिलने के लिए।"

"मैंने तो कोठी पर मिलने का कहा था, और तुम इधर दफ्तर म सिर खपाने आ गये।"

"मैं आज घर भी गया था, आप मिले नहीं ?"

"वहाँ कब गया था ?"

"ग्यारह बजे।"

"लेकिन मैंने तो दस बजे का समय दिया था।"

"हा, साहब, आपने तो दस ही बजे का समय दिया था, लेकिन मुझे ही विलम्ब हो गया।"

"तुम इतने लापरवाह निकलोगे, मुझे यह खयाल नही था, तुम अभी यहाँ से निकल जाओ, भविष्य मे मुझे मुह दिखाने की आवश्यता नही।"

"साहब मैं " राजू की जुबान लडखडा गई। वह कुछ कहना चाहता था, लेकिन वह नही सका।

"मेरा मुह क्या देखते हो। मैंने कहा—तुम यहा से निकल जाओ।" यद्यपि खन्ना साहब ने ये शब्द गरजकर कहे थे। लेकिन राजू पर जैसे कोई प्रतिक्रिया ही नही हुई। वह वही किंकर्तव्यविमूढ खडा रहा।

खन्ना साहब जोर से चिल्लाया—"कोई है यहा ?" और तब चपरासी हक्का बक्का होकर भीतर चला गया। साहब ने आदेश दिया—"इसे धक्के देकर गेटआउट कर दो।' चपरासी ने राजू का हाथ पकडा और घसीटकर, उसे बाहर ले गया। साहब ने घटी बजाई तो चपरासी फिर भीतर गया। चपरासी को देखकर साहब आग बबूला हो गया। बोला—"तेरे को नौकरी नही करनी तो घर चला जा मैंने तेरे को हजार दफा कह दिया, कोई ऐरा गैरा नत्थू खैरा दफ्तर म नही घुसने पाये। लेकिन तू मेरा खून पीने पर उतारू लगता है।"

"माफ करो साहब, भविष्य मे ऐसी गलती नही होगी।'

"माफ करने की भी कोई सीमा होती है। कितनी बार माफ करू ?"

"आज, आज माफ कर दो साहब।' चपरासी हाथ जोडकर गिडगिडाने लगा। साहब को आखो मे आग बरसते देख, चपरासी भयभीत हो रहा था। साहब को उसकी रोनी सूरत पर कुछ दया आने लगी। फिर भी उन्होने रोप प्रकट करते हुए कहा—"गेट आउट, नोन सेन्स।'

और तब चपरासी बाहर चला गया। बरामदे मे खडे युवको ने वे सब शब्द सुने थे, जो साहब ने चपरासी को ताडना देने के लिए अभी कहे थे।

उपस्थित युवकों में आतंक व्याप्त हो गया। उन्होंने सोचा—साहब का मूड खराब है, इसलिए वे वहां से खिसक गये। उन्हें बाहर जाते देख, दूब में बैठे लोग भी चलते बने। क्योंकि अब तक चार बज चुके थे। और कोई काम होने की आशा नहीं थी।

साहब भी अब कोई काम करने की स्थिति में नहीं था। लड़की को साथ लेकर जो नेता आया था, और उसके बाद एम. एल. ए. ने टेलीफोन पर उसको जो हुक्म दिया था, इन सब बातों से खन्ना को ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे उसका अपना कोई अस्तित्व ही नहीं है। और अपने-आपको नितांत पराधीन अनुभव किया। उसकी मनःस्थिति उखड़ गई। वह बिखरे हुए कागजों को वहीं मेज पर छोड़कर उठ खड़ा हुआ और अपनी कार में आ बैठा।

इधर राजू सन्ध्या समय जब अपने घर पहुँचा तो उसकी मां ने उत्सुकतावश पूछा—'नौकरी मिल गई?' उसने अनमनस्क भाव से कहा—'मिल जायेगी।'' और वह अपने कमरे में जाकर सो गया। उसने सन्ध्या समय भी भोजन नहीं किया। मां ने उसको भोजन करने के लिए दो-एक बार कहा अवश्य, मगर उसने हां नहीं भरी। मां भी जानती थी कि राजू एक बार किसी काम के लिए ना कर देने पर हां नहीं भरता। वह भी रसोईघर में जहां उसके बिस्तर पड़े थे सो गई और जब तक उसे नींद नहीं आ गई—हरे राम—हरे कृष्ण करती रही।

3

आज राजू को जगाने के लिए मा को बार-बार आवाज नही लगानी पड़ी। क्योंकि वह रात-भर सोया ही नहीं था। कुछ तो भूख के कारण और कुछ चिन्ताग्रस्त होने से उसे नीद नही आई। सुबह पाच बजे उठकर, वह अपने नियम के अनुसार जगल गया, और टट्टी फिरने का उपक्रम कर, छह बजे से पूर्व घर लौट आया। मा अभी सो रही थी। राजू को जाडा सता रहा था, उसने माचिस ढूढकर, चूल्हा जलाया और अपने हाथ-पाव सेंकने लगा। उसने एक हण्डिया मे पानी भरकर, उसे चूल्हे पर चढा दिया। पानी जब गर्म हो गया तो उसने बाहर आगन मे रखी एक सिला पर बैठकर स्नान किया और तेल की शीशी सभाली। उसे याद आया कि जितना तेल था, वह मैंने कल ही काम मे ले लिया था। उसने पानी से भीगे हुए बालो को कघे से सवारा, कपड़े बदले और चुपचाप घर से निकल गया। मा को जगाने से कोई लाभ नही था। क्योंकि उसने कल ही कह दिया था कि न चाय है, न चीनी। राजू ने आज नई जूतिया नही पहनी। क्योंकि उन नई जूतियो के कारण ही कल साहब के यहा पहुचने मे विलम्ब हो गया था। इसलिए आज उसने फटी-पुरानी चप्पल पहन रखी थी। वह साहब की कोठी के बाहर जाकर खडा हो गया। कोठी के फाटक अभी बन्द थे। कुछ देर खड़े रहकर उसने इधर उधर देखा। सडक सुनसान थी। खन्ना

साहब की कोठी भी अन्य सरकारी अफसरों की कोठियों के साथ ही शहर से बाहर बनी हुई थी। उन कोठियों के बाद, जगल पडता था। कोठियों के आगे से जो सडक निकलती थी, उस पर आवागमन नाम मात्र का होता था। राजू उस सूनी सडक के किनारे, खन्ना साहब की कोठी के आगे जम-कर बैठ गया।

ठण्डक उसे सता रही थी। दात किटकिट कर रहे थे और पूरे शरीर मे एक कम्पन सा हो रहा था। उस दिन, सुबह का वह सूरज प्रकाश तो दे रहा था, मगर गर्मी नही। साढे आठ बजे किसी नौकर ने साहब की कोठी का दरवाजा खोला। वह नौकर एक शेर जैसे कुत्ते का, जिसके गले म एक चमडे का पट्टा और उस पट्टे से लोहे की साकल लगी हुई थी। साकल का एक छोर नौकर ने पकड रखा था, उस नौकर के एक हाथ मे डडा भी था।

नौकर ने कोठी के बाहर राजू को बैठे देखकर कुछ अधिकारपूण भाव से पूछा—"यहा क्यो बैठा है?"

"साहब से मिलना है।" राजू ने उत्तर दिया।

"कौन साहब से? मेम साहब से या खन्ना साहब से?" नौकर ने फिर पूछा। नौकर जानता है कि यहा कोठी पर मिलने आने वाले मेम साहब से ही मिलते हैं। उसे यह भी पता है कि किसी को नौकरी दिलाने का पक्का वायदा मेम साहब ही कर सकती हैं। वही लेन देन करती हैं और तब साहब को सम्बन्धित व्यक्ति के बारे मे सिफारिस करती हैं। नौकरी प्राप्त करने का यह एक कारगर तरीका है। नौकर ने सोचा—यह युवक भी बेकार प्रतीत होता है और शायद नौकरी की गरज से मेम साहब के पास आया है। इस लिए उसने उपरोक्त प्रश्न किया था।

लेकिन जब राजू ने कहा— "मैं खन्ना साहब से मिलना चाहता हूँ।" तब उसने सोचा शायद और किसी काम से आया है। उसने अपने मन से ही कह दिया—"साहब अभी नही मिलेंगे।" और वह कुत्ते को लेकर उस सूनी सडक पर आगे बढ गया। थोडी ही देर बाद एक व्यक्ति साइकिल लेकर, कोठी से बाहर निकला। कपडो से वह भी पहले वाले व्यक्ति की तरह सरकारी ही लगा। उसने भी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियो वाली—मोटी खादी की वर्दी पहन रखी थी। साइकिल रोक कर, उसने भी राजू से वही

प्रश्न किया —"यहा क्या बैठा है ?"

"मुझे खन्ना साहब से मिलना है।" राजू ने कह दिया।

"तो तुम भीतर क्यो नही चले जाते। यहा तुम्हारे सामने आकर साहब मिलने से रहे।"

"क्या मैं भीतर जा सकता हूँ ?" राजू ने सशंकित भाव से पूछा तो उस साइकिल सवार ने कह दिया—"साहब अभी लॉन म अकेले टहल रहे है, तुम उनसे मिल सकते हो। थोडी देर बाद बडे आदमियो की भीड हो जायेगी, तो तुम्हारा उनसे मिलना मुश्किल होगा।" युवक को नेक सलाह देकर, वह साइकिल सवार तो चलता बना। उसे बाजार जाने की जल्दी थी। वह बाजार से अभी सब्जी और फ्रूट खरीदकर लायेगा। उसे अभी दस मिनट के भीतर ही बाजार जाकर लौट आने का हुक्म मेम साहब से मिला है। वह अपना समय जाया नही कर सकता था।

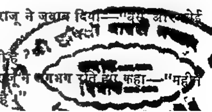
राजू उठ खडा हुआ, मगर उसके कदम आगे नही बढ रहे थे। उसको साहब का कल वाला वह उग्र रूप याद आ रहा था और वह मन ही-मन डर रहा था। आखिर उसने हिम्मत की, धीरे धीरे, सहमते-सहमते उसने कदम बढाये और वह कोठी के भीतर प्रविष्ट हो गया। सामने दूब मे खडे साहब सुबह की धूप सेवन कर रहे थे। साहब ने आगन्तुक युवक को देख लिया। बोले—"इधर चले आओ।" साहब के स्वर म मिठास था। उनकी आकृति भी तब सौम्य और शान्त प्रतीत हो रही थी। उनका मूड अनुकूल देख, राजू उनके निकट जा खडा हुआ। वह हाथ जोड कर बोला—'बहुत गरीब आदमी हू साहब! घर मे कोई कमाने वाला नही है। दो साल पहले मैट्रिक पास की है। फस्ट डिवीजन से। बेरोजगार हू। आपकी दया हो जाय तो रोटी लायक हो जाऊ।"

"घर मे और कौन है ?"

"एक बुड्ढी मा है साहब।" राजू ने जवाब दिया—"बस और कोई नही।"

"तो तुम्हारी गाडी कैसे चलती है ?"

"बहुत मुश्किल से साहब।" राजू ने लगभग रोते हुए कहा—"महीने मे पद्रह दिन भूखे पेट सोना पडता है।"



"तुम्हारी पढाई लिखाई कैसे हुई ?"

"मा ने मेहनत मजदूरी करके मुझे बडी कठिनाई से लिखाया-पढाया साहब ! उसे आशा थी कि मैं पढ़ लिख लेने के बाद उसके काम आऊगा। लेकिन अब वह भी निराश हो गई है। शरीर से इतनी लाचार कि अब उससे मेहनत मजदूरी भी नही होती।"

"तुम्हारा बाप ?"

"पिताजी तो तभी चल बसे जब मैं तीन महीने का था।"

"और कोई बड़ा भाई-बहिन ?"

"एक बडी बहिन है, उसकी शादी हो चुकी। वह अपने घर रहती है। बडा भाई कोई है नही।"

"घर मे तुम दो व्यक्ति हो, एक तुम्हारी बुडढी मा और एक तुम ?"

"जी।"

"जब तक तुम्हें नौकरी नही मिल जाती, तब तक तुम मेरी कोठी पर रहो, यही खाओ पीयो, मेरे बच्चो को पढाओ और मा के लिए तीस रुपया मेरे से हर महीने ले लिया करो ? क्यो ठीक है न ?"

"ठीक है साहब," राजू ने कहा—"मुझे आपका प्रस्ताव मजूर है।"

"आज ही से तुम्हारा एक रुपया प्रतिदिन शुरू हुआ।

"बडी मेहरबानी है साहब।"

साहब ने आवाज लगाई— 'जगदीश, ओ जग्गू।" साहब की आवाज सुनकर, एक नौकर भीतर से भागता हुआ आया। बोला—"बच्चे क्या कर रहे हैं ? नौकर ने जवाब दिया—"दूध पी रहे हैं साहब।' साहब ने कहा— दूध पी लेने के बाद, उन्हे यहा ले आओ, कहो मास्टरजी आये हैं।' और तब 'हुकम' कह कर नौकर वापस कोठी मे चला गया। थोडी देर बाद नौकर भीतर से तीन बच्चो को ले आया। सबसे छोटी लडकी थी, करीब चार साल की उसको नौकर ने गोद में उठा रखा था। उससे बडे दो लडके थे, एक छह साल का और दूसरा करीब आठ साल का।

"साहब ने कहा—"ये तुम्हारे गुरुजी हैं, इनको प्रणाम करो। दोनों लडको ने हाथ जोड दिए। छोटी लडकी अपने पापा के आदेश को समझ नहीं सकी। राजू ने उन दोनों की पीठ थपथपाने के बाद, बेबी को अपनी

गोद में ले लिया। बेबी न रोई न चिल्लाई, जैसा कि अक्सर बच्चे एक गोद से दूसरी गोद में जाते हुए करते हैं।

साहब ने कहा—"बेबी का नाम—सरला है। इससे बड़े बच्चे का नाम विमल और सबसे बड़े लड़के का नाम—कमल। सरला, विमल और कमल तीनों को तुम पढ़ाओगे। सरला और विमल पहली कक्षा में पढ़ते हैं, कमल दूसरी में। मैं समझता हूं कि पांचवीं तक के छात्रों को पढ़ाने में तुम्हें कोई असुविधा नहीं होनी चाहिए।"

"मैं आठवीं कक्षा के एक छात्र को पहले से पढ़ा रहा हूं।"

"वहां से क्या मिलता है?"

"बीस रुपये।"

"तब तो पचास रुपयों का महीना पड़ जाएगा?"

"हां साहब!" राजू ने कहा—"मुझे रोटी तो आप दे ही देंगे?"

"पचास रुपयों से तुम्हारी मां का काम आसानी से चल सकता है?"

"सरलतापूर्वक।" राजू ने जवाब दिया।

"आज मंगलवार है, आज ही से तुम बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दो।" साहब ने कहा—"मंगलमुखी, सदा सुखी।"

"लेकिन इस समय तो मैं उस ट्यूशन पर जाऊंगा।" राजू ने कहा—"उसका समय नौ से दस है।"

"तुम नित्यप्रति ग्यारह बजे यहां पहुंच जाया करो। बच्चे दिन भर घर ही में रहते हैं। तुम पांच बजे यहां से छुट्टी कर सकते हो, और बीच में घंटे-आध घंटे का विश्राम भी।"

"अच्छी बात है, साहब! आज्ञा हो तो मैं इस समय जाऊं।" राजू ने कृतज्ञतापूर्वक कहा—"ठीक ग्यारह बजे मैं यहां वापस आ जाऊंगा।"

"ग्यारह बजे मैं यहां नहीं मिलूंगा।" साहब ने कहा—"तुम मेरे साथ कोठी में चलो, मेम साहब से तुम्हारा परिचय करवा दूं।" और वे दोनों कोठी के भीतर चले गए। साहब ने राजू का परिचय मेम साहब को दिया—"आज से यह बच्चों को पढ़ाएगा। ग्यारह से पांच का समय तय किया है।" मेम साहब ने एक नजर राजू को देखा और प्रमाण पत्र दे दिया—"बहुत सीधा लड़का है।"

4

सन्ध्या समय, खन्ना साहब के बच्चो को पढ़ाने के बाद, राजू जब अपने घर पहुंचा तो वह मां को बहुत ही प्रसन्नचित्त प्रतीत हुआ।

"आज मेरे बेटे को कहीं नौकरी मिल गई लगती है ?" मां ने अपना अनुमान व्यक्त करते हुए कहा।

"नहीं मां" राजू ने कहा—"अभी नौकरी तो नहीं मिली है। मगर एक ऐसे व्यक्ति का आश्रय मिल गया है, जो जब चाहे अच्छी से अच्छी नौकरी दिला सकता है।"

"कौन सज्जन पुरुष है वो ?" मां ने पूछा।

"सरकार ने नौकरी का बन्दोबस्त करने के लिए जो दफ्तर खोल रखा है, उस दफ्तर का मालिक है। बड़ा साहब। नरेन्द्र नारायण खन्ना उसका नाम है।"

"क्या कहा है उसने ?"

"वह कह रहा है दो चार महीने मेरे बच्चों को पढ़ाओ, तब तक कहीं नौकरी का बन्दोबस्त कर दूंगा।"

"उसके बच्चो को मुफ्त पढ़ाना पड़ेगा ?"

"नहीं। राजू ने कहा—मैं दोनो समय भोजन वहीं करूंगा, ऊपर से तीस रुपया महीना भी मिलेगा।"

"तब तो दु:ख दूर हुआ समझो बेटा।" मां ने गद्गद होकर कहा—"मुझ अकेली पर पचास रुपये सब भी नहीं होंगे।" मां को अचानक जैसे कुछ याद आ गया, फिर कहने लगी—"सेठजी के लड़के को पढ़ाने के लिए समय तो देंगे न?"

"यह सब मैंने पहले खुलासा कर, बाद में उनके बच्चों को पढ़ाने की हां भरी है।"

"तब ठीक है।" मां ने संताप व्यक्त किया।

"आज मैं तेरा मुंह खांड से भरती।" मां ने कहा—"मगर दो दिन से खांड बिलकुल है ही नहीं।"

"मैं अभी दुकानदार के पास जाता हूं।" राजू ने जरा हौसले से कहा—"उसको बताऊंगा कि मुझे नौकरी मिल गई है। शायद वह दो चार रुपयों की उधार दे दे।"

"जा कोशिश कर—मिले तब तो चाय, चीनी और एक साबुन ले आना। साहब के घर रोज रोज बच्चों को पढ़ाने जायेगा तो मैले कपड़ों से कैसे चलेगा? नये न सही, कपड़े साफ-सुथरे जरूर होने चाहिए।"

और तब राजू पड़ौस की दुकान पर चला गया। सन्ध्या समय उस दुकान पर बहुत भीड़ रहती है। शहर के उस वार्ड में परचून की वह अकेली दुकान है। और उस वार्ड की जनसंख्या पांच हजार से भी अधिक है। यद्यपि इस वार्ड में अधिकाधिक लोग अनुसूचित तथा अनुसूचित जन-जातियों के ही हैं। और उनकी क्रय शक्ति बहुत ही क्षीण है। लेकिन इसके बावजूद एक रुपये का आटा, चार आने की दाल, एक आने की मिर्च-मसाले, दो पैसे की बीड़ी और एक पैसे की मीठी गोलियां करते करते ही सौदा हजारों पर बैठता है। यह दुकानदार रामकिशन मोदी नित्य रात को दो हजार नकदी लेकर उठता है और नहीं नहीं करते भी दो चार सौ की उधारी लिखता है। बीस वर्षों की लम्बी अवधि में उधार खाते का एक भी पैसा डूबा नहीं है। इसी दुकान के बलबूते पर मोदी ने शहर में पांच दुकानें खड़ी करके किराए पर दे दी हैं और रहन के लिए एक आलीशान बंगला बना लिया है। तीन लड़कियों और दो लड़कों की शादी धमधाम से कर दी है। और शहर तथा मंडी में अच्छी खासी प्रतिष्ठा जमा ली है।

सरकारी सस्ते अनाज का बीस नम्बर डिपो इसी की दुकान से सलग्न है। सैकड़ा फर्जी कार्ड बना रखे हैं और सैकड़ों गरीबों के कार्ड दबाए बैठा है। उन कार्डों की चीनी, चावल और गेहूं तथा डालडा बाजार के ब्लैक के भाव बेचता और बड़ी भारी आमदनी करता है। इसने दूसरे किसी दुकानदार को इस वार्ड में कभी पाव जमाने नहीं दिए। कई व्यक्ति आये और घाटा खाकर उठ खड़े हुए।

शहर के किसी भी व्यापारी ने इस वार्ड में आकर दुकान लगाई तो रामकिशन मोदी के पालतू गुण्डों ने उसके साथ झगड़े किए, मार पीट की या उसे लटकर बर्बाद किया दुकान में आग लगा दी अथवा जबदस्ती उधार उठाकर माल ले गए और पैसे नहीं चुकाए। इन्हीं सब परिस्थितियों में कोई नया दुकानदार सफल नहीं हो सका और मोदी का झण्डा ऊंचा और बहुत ऊंचा फहराता रहा।

रामकिशन मोदी की एकाधिकार वाली उस परचून की दुकान पर भीड़ जब कुछ कम हुई तब तक रात के दस बज गये। राजू दुकान के पास गया और बोला— "मेरे नाम पहले से कितने पैसे निकलते हैं?" यद्यपि मोदी अब दुकान बढ़ाने की जल्दी में था, लेकिन फिर भी उसने यह सोच कर कि आज कई दिनों के बाद राजू का चेहरा दिखाई दिया है। इसलिए कुछ न कुछ मुद्रा लाया ही होगा। उसने अपना पोथा देखा और कहा— 'दो रुपये छह आने हैं।"

राजू को ऐसा याद आया कि दो रुपये चार आने ही थे, ये छह आने कब हो गए? फिर उसने सोचा—शायद दो आने ब्याज के जुड़ गये होंगे? उसने हिम्मत करके कहा—"दो रुपये दस आने का सौदा और दे दीजिए, पांच रुपये पूरे हो जाएंगे। पहली तारीख को हिसाब चुकता कर दूंगा।'

"पहली तारीख को?' मोदी ने कहा— कहीं नौकरी कर ली है क्या?"

"जी" उसने उत्तर दिया—"एक बड़े साहब के यहां बच्चा को पढ़ाने का काम शुरू किया है, वहां से एक तारीख को पगार मिलेगी।"

"देख राजू!' मोदी ने कहा—"तू पहले भी कई वायदे कर चुका है। तेरे से कोई वायदा निभता तो है नहीं। झूठ मूठ मुझ गरीब पर क्यों बोझ

डालता है ?"

"इस बार कोई गडबड नही होगी सेठजी ।" राजू ने आश्वासन दिया ।

'एक बार फिर तेरी जुबान देख लेता हू ।" मोदी ने कहा—"जल्दी बोल, क्या लालू ?"

"एक रुपये की चीनी, आठ आने की चाय, आठ आने की मिर्च, आठ आने क दूसरे मसाले और छह आने की एक डमरू साबुन दे दीजिए ।"

मोदी ने अपने नौकर की ओर इशारा किया और नौकर ने सारा सामान तत्काल उसको दे दिया । नौकर सोच रहा था—कोई दूसरा ग्राहक नही आ जाये । उसे भी घर जाने की जल्दी थी । बेचारा सुबह छह बजे मोदी जी से पहले आकर दुकान खोलता है, झाड़ू देता है । सामान व्यवस्थित करता है, अगर बत्ती जलाता है और फिर सार्वजनिक नल से दो घड़े भर कर ग्राहको से निपटने लगता है । सारा दिन हाय तौबा करते बीत जाता है । रोटी खाने तक को फुर्सत नही मिलती । फिर ऊपर से मोदी जी की झिड़किया और गदी गदी गालिया ।

रात के दस बज रहे हैं । मोदी दुकान से बाहर आकर खड़ा हो गया है । नौकर दुकान बन्द करने के लिए बाहर पड़ा सामान भीतर रख रहा है । मोदी ने राजू को जाते हुए देखकर कहा—"अब तुम्हारी तरफ पूरे पाच रुपये हो गए हैं ।

' हा, सेठजी ' राजू ने जाते जाते कहा— "मुझे पूरा पूरा ध्यान है ।

मोदीजी अपने घर का रास्ता लेते हैं । उनके हाथ मे लाल रग की एक बडी सी थैली है । थैली म आज की बिक्री के लगभग दो हजार रुपये और दो सौ रुपया की रेजगारी है । सेठजी के चले जाने पर नौकर कुछ हेराफेरी करता है । अगरबत्ती के दो पुडे और सुगन्धित तेल की एक शीशी, एक नहाने का बढिया साबुन थले मे डालता है । वह थला बाहर पाटे के नीचे रखकर दुकान के दरवाजे बन्द करता है । और तालिया का गुच्छा अपनी जेब मे डाल, थैला उठाकर अपने घर चला जाता है ।

मोदी नौकर को केवल साठ रुपया महीना देता है । इन रुपया से घर-गृहस्थी की गाडी नही चलती । इसलिए रोज रात को मोदी के चले

जाने पर वह दो चार रुपयो की सामग्री चुरा लेता है और सामग्री घर मे एकत्रित कर, बाजार के किसी एक दुकानदार को, जिससे उसका सौदा बैठा हुआ है, महीने मे दो एक बार सस्ते भाव पर दे आता है। इस प्रकार करीब सौ रुपयो की आमदनी होती है और उसका काम चल जाता है। सेठ नौकर को निहायत ईमानदार और वफादार समझता है, उसकी नीयत पर कभी कोई शक नही करता, वह उसकी चोरी से भी अनभिज्ञ है। तभी तो दुकान की चाबिया उसको सौंप रखी हैं और अकेला ही उसको दुकान पर छोड़ कर जब चाहे चला जाता है।

राजू जब तक अपने घर पहुचा, मा सो चुकी थी। राजू ने अपने कमरे मे सामान रखा और वह भी अपने बिस्तर मे जा घुसा।

5

अगले दिन सुबह, जल्दी उठकर, नित्य क्रिया से निवत्त हो, राजू ने स्वय चाय बनाई और तब मा को जगाया। मा ने हाथ मुह धोकर, चाय पीते हुए कहा—"राजू। मोदी ने रात सामान दे दिया ?" राजू ने उत्तर दिया—"तभी तो चाय बनी है मा।" "उसने इन्कार नही किया ?" मा ने एक प्रश्न और किया, तब राजू ने कहा—"पहली तारीख को यह पाच रुपये दे देने के बाद, अपना खाता खुल जायेगा" राजू ने कहा—"तब कोई दिक्कत नही रहेगी मा ! फिर हर महिने की पहली तारीख को हिसाब कर दिया करेंगे और पूरे महिने भर सामान लाते रहेंगे।"

इसी प्रकार की चर्चा और भविष्य की कुछ सुखद कल्पना के साथ मा-बेटे ने चाय पी। आज की चाय का स्वाद ही कुछ और था। ऐसा स्वाद जो पहले कभी उन दोनो ने नही चखा था। सुखद भविष्य की कल्पना मात्र से उन दोनो को एक अनूठा आनन्द अनुभव हो रहा था।

घर के आवश्यक कार्यों को निपटाकर राजू सेठ लालचन्द के पुत्र को पढाने अपनी पुरानी ट्यूशन पर गया और वहां से सीधा खन्ना साहब की कोठी, जब वह खन्ना साहब की कोठी पर पहुचा तो पौने ग्यारह का समय हुआ था। अब तक खन्ना साहब अपने दफ्तर चले गये थे। बच्चे पहले ही से एक कमरे में बैठे पढने का उपक्रम कर रहे थे। उसने सबसे

पहले कमल को पूछा—"तुम्ह महा तक लिखना आता है ?" कमल ने उत्तर दिया—मैं पूरी बारहखडी जानता हू और पहली ए बी सी डी । दस तक के पहाड़े याद हैं।" तब उसने विमल से पूछा तुम्हें भी कुछ आता जाता है या सीधे भट्टाचाय हो ? उसने कहा—"मुझे १०० तक गिनती आती है।" राजू ने पूछा—"और भी कुछ—" "ए बी सी डी ई एफ ।"

"इससे आगे ?" राजू ने पूछा।

कमल बीच मे ही बोल पडा—"इसे और कुछ भी नही आता।" राज ने टोका— 'मैं इससे पूछ रहा हू, आप से नहीं, आप चुप रहिए।' कमल झेंप गया, प्रत्युत्तर मे कुछ बोला नही। वह फिर बेबी की ओर अभिमुख हुआ, उसके आगे स्लेट रखी और उसके हाथ म 'बरता' देते हुए बोला— 'इस पर लिखो बेबी, तुम्ह जो भी आता है।' बबी ने स्लेट पर पाच सात टढी मेढी लाइनें खीच दी और तब गुरुजी की ओर देखने लगी। उसकी आखो म बालोचित सहज सरलता थी, जबकि कमल और विमल भयातुर प्रतीत हो रहे थे।

इसी बीच मेम साहब उस कमरे मे आ गइ। कहने लगीं—"इन्हें कुछ भी नही आता राजू। साहब न लाड प्यार से इनको बिगाड रखा है। तुम्हें क ख स शुरू करना होगा, कडी मेहनत करनी होगी।'

"हा मेम साहब !" राजू ने कहा—"आप ठीक कह रही हैं। आयु देखते हुए बच्चे पढाई म बहुत ही कमजोर हैं। आपने इनको अब तक स्कूल क्यो नही भेजा ?'

"साहब की खोपडी उल्टी है।' मेम साहब ने कहा—'कहते हैं मिडिल तक प्राइवेट ही तयारी करवायेंगे। और इस प्राइवेट तैयारी के लिए कभी इस मास्टर को पकडते हैं, कभी उस टीचर को। कोई भी आता है वह इन बच्चा को कुछ कहता सुनता नही सोचता है, साहब के बच्चे हैं। कुछ कहना-सुनना उचित नही। फिर मारने-पीटने का तो सवाल ही नही उठता।

मेम साहब ने कहा— तू ही बता बिना भय के कोई बच्चा पढता है ?'

"देखिए मेम साहब" राजू ने कहना शुरू किया "बच्चों को मारने-पीटने के पक्ष में तो मैं भी नहीं हूं। मेरा सोचना यह है कि बच्चों को भरपूर प्यार दिया जाये। भय की अपेक्षा किसी भी मानव विशेषत बच्चों पर प्रेम का असर अधिक होता है। फिर नन्हें बच्चे अध्यापक से अधिक श्रम की अपेक्षा करते हैं। पहले जितने भी अध्यापक आये उन्होंने बच्चों के लिए मेहनत नहीं की और इन्हें अपेक्षित स्नेह नहीं दिया। अन्यथा ये बच्चे मुझे प्रतिभाशाली प्रतीत हो रहे हैं। अब तक इन्हें बहुत कुछ सिखाया जा सकता था।"

राजू के विचार यद्यपि मेम साहब की विचारधारा के विपरीत थे। लेकिन फिर भी उसने राजू के विचार ध्यानपूर्वक सुने और उसको राजू के विचारों में काफी वजन प्रतीत हुआ। राजू की बात उसकी समझ में आ रही थी। उसे याद आया अब तक जितने भी अध्यापक इन बच्चों को पढ़ाने के लिए नियुक्त किये गए थे, वे सब के सब साहब से अनावश्यक भय खाते थे और इसीलिए सहमे-सहमे रहते थे। वे बच्चों पर कोई विशेष ध्यान नहीं देते थे उनके स्नेह का स्रोत तो जैसे सूखा हुआ ही था।

वे तो इन बच्चों को पढ़ाने के लिए यहां तक आना और दो चार घण्टे यहां बैठे रहना ही पर्याप्त समझते थे। और एक बेगार समझकर, जैसे-तैसे अपने समय को पास करते थे। फिर कहीं नौकरी मिलने पर चले जाते थे। मेम साहब को अपने पति पर भी गुस्सा आ रहा था जिन्होंने बच्चों के लिए कभी कोई योग्य और परिश्रमी अध्यापक नियुक्त नहीं किया। नौकरी के लिए भटकते हुए शिक्षित युवकों में से किसी एक को पकड़ा और बच्चों में बैठा दिया। बेचारे उन युवकों का तो कोई दोष नहीं था, वे तो नौकरी की गरज से साहब को प्रसन्न करने के लिए यह बेगार निकालते थे। दोषी तो स्वयं साहब ही हैं।

काफी लम्बे मौन के बाद, विचारों में इधर उधर विचरण करने के बाद मेम साहब ने राजू से कहा—"देख राजू तू मुझे एक योग्य और परिश्रमी युवक लगता है तू यदि इन बच्चों पर परिश्रम करेगा तो मैं तुझे उचित पुरस्कार दूंगी, साहब जो पारिश्रमिक देंगे वह तो अलग है ही।

मेम साहब ने कहा— "मैं तुझे अच्छी नौकरी दिलाने में भी सहायक

हो सकती हूं। लेकिन शर्त यह है कि नौकरी मिल जाने के बाद भी सुबह-शाम समय निकाल कर दो चार घण्टे इन बच्चों को पढ़ायेगा।"

"मैं आपके साथ इस बात के लिए वचनबद्ध हूं मेम साहब!" राजू ने कहा—"आप मेरी नौकरी के लिए प्रयत्न करें, भगवान आपका भला करेगा।"

मेम साहब को अचानक कोई बात याद आ गई। वह चूल्हे पर दूध का बर्तन रखकर आई थीं और चूल्हा जल रहा था। नौकरानी जो रसोई के काम में मेम साहब की सहायता करती है, आज छुट्टी पर है। दूध उफन न जाये, यह सोचकर, मेम साहब रसोई में चली गईं। वह घर-गृहस्थी के काम में ऐसी उलझीं कि फिर पांच बजे तक बाहर ही नहीं आ सकीं, राजू तन्मयतापूर्वक पांच बजे तक तो बेबी, विमल और कमल को बारी-बारी पढ़ाता रहा। फिर पांच बज जाने पर भीतर गया। उसने मेम साहब से इजाजत ली और तब अपने घर चला गया।

6

रानी बाजार स्थित उस लाल रग की विशाल और गोलाकार भवन श्रृंखला के मध्य भाग मे, जहा राज्य सरकार के नियोजन विभाग का बेकारी निवारण कार्यालय है, आज विशेष रौनक, चहल-पहल और भारी भीड दिखाई दे रही है। भीड मे अधिकाश सख्या 18 से 25 वय वाले युवक युवतियो की ही है। लेकिन कुछ इससे भी अधिक आयु के, अधेड पुरुष और महिलाए भी दिखाई दे रहे हैं। अधिक आयु के लोगो म अव-काश प्राप्त सैनिक हैं। मोरारजी भाई के स्वण कानून से पीडित स्वणकार आदिम जातियो के लोग अथवा हरिजन हैं, जिनको सरकार की ओर से नौकरी प्राप्त करने मे कई अन्य सुविधाओ के साथ अधिक आयु की छूट भी प्राप्त है।

भीड के अधिकाश लोगा के कपडे-लत्ते फटे पुराने हैं और उनके चेहरे खिन्न तथा बुझे-बुझे। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिनके चेहरो पर न तो उदासी है, न खिन्नता के भाव। उनकी आखो मे उज्ज्वल भविष्य के प्रति सुखद आशाओ से युक्त एक गहरी चमक है। प्रतीत होता है जैसे उन्ह कोई विश्वसनीय आश्वासन मिला हुआ है, और उस आश्वासन के प्रति इन लोगा को पूण विश्वास है। ऐसे लोगा के परिधान भी नूतन आकपक और रगीन हैं अथवा साफ, स्वच्छ और सादगीपूण। इनके चेहरो के रग

भी परत्रा की तरह साफ स्वच्छ और नाम, गुलाबी अथवा गोरे हैं और चमड़ी पर चिकनाई।

आज का भीड़ म एक अनुशासन को जिस कुछ अंशों में विनम्रता अन्य दबाव भी कहा जा सकता है, साफ़ता दिखाई दे रही है। भीड़ के लोग इधर उधर बिखरे हुए नहीं हैं। युवक-युवतियां भी मस्त मलंग की तरह इधर-उधर घूम फिर भी नहीं रहे। वे सब के सब पंक्तिबद्ध हैं। उनमें अगर परस्पर वार्तालाप या हँसी ठट्ठा भी होता है तो बहुत ही शालीनता के साथ, शांत और धीमे स्वरों में। आज यहां और दिनों की तरह वातावरण में कोलाहल नहीं है।

यहां लम्बी खड़ी कतारों म भी भेद है। सम्पन्न और धनी वर्ग के युवक-युवतियां म अलग पंक्तियां बना रखी हैं। निर्धन और दुर्बल वर्ग के तरुण-तरुणियां म अलग। इन्हीं पंक्तियां म म एक पंक्ति म बड़ी राजू भी खड़ा है। यद्यपि उसके चेहरे पर अपनी पंक्ति के लोगों की तरह उदासी नहीं है। आज उसने कपड़े भी नये पहन रखे हैं। उसे देख कर लगता है, जैसे पंक्ति म खड़े होते समय उसे आज ही पहने नये कपड़ों का ध्यान नहीं रहा और वह भूल से उस पंक्ति म खड़ा हो गया, अन्यथा कपड़ों और चेहरे के भावों को देखते हुए तो उसे किसी अन्य पंक्ति में ही खड़ा होना चाहिए था। जहां आश्वासनयुक्त, निश्चिन्त और चिकने चुपड़े चेहरे वाले लोग खड़े हैं।

लेकिन यह उसकी भूल नहीं थी, उसे अपने कपड़ों का भी ध्यान था, और कुछ ही घंटे पूर्व प्राप्त एक ठोस आश्वासन का भी। इसके बावजूद वह गरीबों की पंक्ति म खड़ा हुआ। क्योंकि धनवानों की पंक्ति म खड़े होने म उसको एक हिचक और शर्म महसूस हो रही थी। उसे अपनी हैसियत का खयाल था। वह जानता था कि धनवानों वाली पंक्तियां में बहुत से ऐसे युवक स्कूल के समय से ही उसे जानते-पहचानते हैं, और उसकी हैसियत के बारे में उन्हें पता है। कई ऐसे युवक हैं युवतियां हैं जिनके घरों में उसकी मां पानी भरने, बर्तन साफ करने और अन्य मेहनत मजदूरी के काम कर चुकी है उन लोगों के बीच में जाकर खड़े होने से किसी भी व्यक्ति को वह बात अखर सकती है, उसके वहां खड़े होने से कोई भी व्यक्ति

अपमान महसूस कर सकता है और कोई अप्रिय विवाद उठ सकता है। झगड़ा हो सकता है।

इन्हीं सब सम्भावित बातों को ध्यान में रखते हुए राजू गरीबों की एक पंक्ति में जान बूझकर खड़ा हुआ था, जहां उसे कोई टोकने वाला नहीं था। लेकिन उस पंक्ति के कुछ लोगों का उसका वहां खड़ा रहना भी बहुत अखरा। उनका सोचना यह था कि यह युवक हम चिढ़ाने और अपनी उच्च स्थिति का प्रदर्शन करने के लिए यहां खड़ा हुआ है, अन्यथा इसका यहां क्या काम? लेकिन इस प्रकार वे ही सोच सकते थे, जो उसके बाह्य-स्वरूप को देख रहे थे और जिन्हें उसकी हैसियत के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। धनवानों की पंक्तियों में खड़े कुछ युवक-युवतियों की दृष्टि भी उस पर जमी हुई थी, और वे यही सोच रहे थे कि गरीबों को चिढ़ाने और अपनी विशेष स्थिति का प्रदर्शन करने के लिए ही वह युवक वहां खड़ा है, लेकिन जो व्यक्ति उसके पूर्व परिचित थे, उन्हें कोई आश्चर्य नहीं हो रहा था। यदि उनके लिए आश्चर्य का यत्किंचित कारण था तो सिर्फ इतना ही कि राजू की स्थिति में अब कुछ सुधार हुआ है।

बाहर से दौड़ती हुई चार जीप गाड़ियां उनके पीछे एक लम्बी सी कार और उसके पीछे एक बन्द जीप गाड़ी आई और उस भवन के मध्य में स्थित प्रांगण के दो चक्कर काट लेने के बाद, वे सब वाहन वहीं रुक गए। उन वाहनों से उतरकर, तीस पैंतीस व्यक्ति भवन के भीतर नियोजन कार्यालय की ओर चले गए। उनमें अधिकांश व्यक्ति प्रौढ़ अवस्था के थे, कुछ युवक भी। चार-छह महिलाओं को छोड़कर, शेष सभी पुरुष थे। अपवादस्वरूप दो एक व्यक्तियों को छोड़कर, शेष सभी ने काले, पीले, हरे नीले या बादामी रंग के सूट पहन रखे थे। दो एक ने खद्दर के धोती, कुर्ते। खद्दरधारी कार से उतरे। उनके साथ चार व्यक्ति सूटधारी थे उनमें से दो पुलिस के अफसर तथा दो अन्य थे।

यह भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन मन्त्रालय से सम्बन्धित एक टोली है, जिसका नेतृत्व इस मन्त्रालय के एक उपमन्त्री कर रहे हैं। कार से जो दो व्यक्ति उतरे थे, खादी वाले, उनमें एक वह उपमन्त्री था, दूसरा खद्दरधारी इस क्षेत्र से निर्वाचित संसद सदस्य है। उसी के

प्रयत्न से परिवार नियोजन के अधिकारियों की यह टोली यहां आई है। अभी कुछ ही दिनों पहले भारतीय संसद ने परिवार नियोजन को राष्ट्रीय महत्त्व की योजना के रूप में स्वीकार किया है, और नये बजट में करोड़ों का प्रावधान रखा गया है। इस योजना को सफल बनाने के लिए देश भर में व्यापक स्तर पर कर्मचारियों और अधिकारियों की भर्ती का अभियान तूफानी चाल से चल रहा है। हजारों की संख्या में डॉक्टर, कम्पाउंडर, नर्सें, परिचारिकाएं, दाइयां और प्रशासनिक अधिकारी चाहिए। लाखों की संख्या में ऐसे कर्मचारी, कार्यकर्ता और प्रचारक शिक्षक चाहिए, जो शहरों में वार्ड वार्ड, घर घर और गांवों, ढाणियों में दूर-दूर तक पहुंच कर, *परिवार नियोजन का महत्त्व समझा सकें, निरोध और गोलियां बांट* सकें, नसबन्दी और आपरेशन करवाने के लिए, महिलाओं को लूप लगाने के लिए तैयार कर सकें।

इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए शीघ्रातिशीघ्र लाखों वैतनिक अवैतनिक कर्मचारियों तथा कार्यकर्ताओं की भरती करने के लिए भारत सरकार ने कुछ वरिष्ठ अधिकारियों की एक विशेष टोली नियुक्त कर दी है। यह टोली देश भर में घूम फिरकर भरती का कार्य कर रही है। हजारों लोगों की भरती की जा चुकी है और लाखों स्थान अभी रिक्त पड़े हैं। इन रिक्त स्थानों की संभव पूर्ति के लिए ही यह टोली आज इस नगर में आई हुई है। तीन दिन और तीन रात यह टोली इस नगर में रुककर भर्ती का कार्य करेगी।

इण्टरव्यू के लिए नियोजन कार्यालय को एक मात्र उपयुक्त स्थान समझा गया है, ताकि अधिकाधिक लोग इण्टरव्यू में सम्मिलित हो सकें। तीन रात और तीन दिन लगातार इण्टरव्यू तथा नियुक्ति का कार्य निरन्तर होगा। और हाथोंहाथ लोगों को नियुक्त किया जाएगा, ताकि आगामी माह की पहली तारीख तक नियुक्त लोगों को किसी निर्धारित क्षेत्र में भेजा जा सके या किसी चिकित्सालय कार्यालय अथवा परिवार नियोजन केन्द्र पर नियोजित किया जा सके। सरकार की मंशा यह है कि आगामी 15 अगस्त से पूर्व, जिसके अभी केवल मात्र 6 महीने और 5 दिन ही शेष रह गए हैं देश के एक करोड़ पुरुष नसबन्दी करवा लें और कम-

से कम इतनी ही महिलाएं लूप लगवा लें। सरकार इसी अवधि मे पाच करोड स्त्री-पुरुषो को परिवार नियोजन के उपकरण मुफ्त बाट देना चाहती है। और इस प्रकार देश के 6 करोड व्यक्तियो को इस अत्यधिक महत्वपूर्ण आन्दोलन मे सम्मिलित कर लेना चाहती है।

इन्ही सब लक्ष्यो और आकडो की पूर्ति के लिए शीघ्र काम का अभियान चल रहा है। पाच पाच अधिकारियो की पाच टुकडिया अलग अलग कक्षा मे आवश्यक कागज पत्रो, चार्ट नक्शो और उपकरणो को लेकर, इण्टरव्यू के लिए बैठ गई हैं। भर्ती के इच्छुक आवेदको का नाम लेकर पुकारा जाता है। आवेदको की लम्बी सूचिया अधिकारियो के सामने पडी हैं। नियोजन अधिकारी ने सूचना मिलते ही, इण्टरव्यू की तिथि से 6 दिन पूर्व, नियोजन कार्यालय म रजिस्टर्ड सभी बेरोजगारो के नाम इण्टरव्यू कार्ड इश्यू कर, अपनी तत्परता का परिचय दे दिया है। डाक की गडबडी से जिन बेरोजगारो के पास कार्ड नही पहुच सके उनको छोडकर सभी बेरोजगार जिनकी पजीकृत सख्या तब पाच हजार से अधिक थी, आज यहा उपस्थित हैं, किन्ही विशेष कारणो से जो बेरोजगार आज यहा उपस्थित नही हो सके उनकी गणना नगण्य है। इण्टरव्यू कार्ड के साथ आवेदको को एक विशेष सूचना भी भेजी गई थी उसमे लिखा था कि परिवार नियोजन विभाग मे नियुक्त कर्मचारियो को बाद मे, आवेदन करने पर सरकार के किसी अन्य विभाग मे, जो कि आवेदको का इच्छित विभाग ही होगा, सेवाए स्थानान्तरित की जा सकेंगी और पिछला कार्यकाल, आगामी सेवा मे जोड दिया जाएगा। इस सूचना का एकमात्र उद्देश्य यह रहा कि एक बार परिवार नियोजन के राष्ट्रीय कार्यक्रम का सुचारु रूप से सचालित करने के लिए आवश्यक और अपेक्षित सख्या मे भर्ती कर ली जाय और आगे चल कर ज्यो-ज्यो नई भर्ती होगी, पुराने कर्मचारियो को, यदि वे चाहेंगे तो अन्यत्र भेज दिया जाएगा।

इसी कारण आज नियोजन कार्यालय के सामने करीब चार हजार व्यक्ति, जो कि बेरोजगारी के राज रोग से पीडित हैं, आ खडे हुए। प्रार्थियो का सोचना भी यही था कि एक बार सरकारी सेवा का दरवाजा तो खुल जाए, बाद म जो होगा सो देखा जाएगा। चार हजार बेरोजगारो

"इस नगर से 10 मील दूर एक छोटा सा ग्राम है—पलाना, वही का हू। लेकिन पिछले 10 11 वर्षों से यही रहता हू।"

"पलाना कोलरी ?"

"जी।"

"गावो मे काम करना पसन्द करोगे ?"

"कोई आपत्ति नही साहब।"

'विवाहित हो ?"

' नही।"

"निकट भविष्य मे विवाह करने की सोचते हो ?"

"नही साहब।"

"घर मे कुल कितने सदस्य हैं ?"

' एक बुड्ढी मा है, बस।"

"वह तुम्हे शादी के लिए मजबूर करेगी तब ?"

"वह मुझे मजबूर नही कर सकती।"

"परिवार नियोजन के बारे म क्या जानते हो ?"

मूल प्रश्न पर आते हुए, उस अधिकारी न राजू के मुह पर अपनी दृष्टि जमा दी।

"परिवार नियोजन एक राष्ट्रीय महत्त्व की योजना है, एक ऐसा व्यापक, विशाल और महान कायक्रम है, जिसके पीछे मानव समाज के कल्याण की भावना छिपी हुई है।" राजू ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—' यह योजना भारत जैसे अधिक आबादी वाले देशो के लिए तो और भी अधिक महत्त्वपूण तथा उपयोगी है।' उसन कहा—"जब तक किसी भी देश की आबादी सीमित नही हागी, तब तक वहा प्रगति नही हो सकती। दूसरी योजनाए सफल नहा हो सकती। खाद्यान्न तथा जीवनोपयोगी वस्तुओ का अभाव नही मिट सकता। जनता का जीवन स्तर ऊपर नही उठ सकता। और हमारे राष्ट्र का घोषित उद्देश्य समाजवाद भी नही पनप सकता।" उसने अपने शब्दो पर तनिक जोर देते हुए कहा — "हम समाजवाद का उद्देश्य छोड देना चाहिए या फिर परिवार-नियोजन के कायक्रम को देश के प्रत्यक नागरिक पर, जोकि विवाहित है, कानूनन

का इस फौज मे एक राजू भी है। वह भी किसी पक्ति म खडा अपन नाम की पुकार के इन्तजार म सास थाम खडा है। उसके हाथ म भी अन्य प्राथियो की तरह एक मोटे कागज का सफेद सा, कहना चाहिए मटमले रग का काड और उस पर ख ना साहब के हस्ताक्षरो वाली रबर स्टाम्प का निशान भी है।

कत रें ता व्यवस्था, सुविधा और अनुशासन प्रदर्शित करने के लिए बनाई गई हैं वाकी किसी भी पक्ति मे स, किसी भी व्यक्ति को किसी भी कक्ष से बुलाहट आ सकती है। जिस पक्ति म राजू खडा है, उसम अब केवल मात्र दस बारह युवक और तीन युवतिया शेष रह गई है। शेष सभी लोग किसी न किसी कक्ष मे इण्टरव्यू के लिए बुलाए जा चुके हैं, और उनम से प्राय सभी इण्टरव्यू देकर, अपने अपने घरो को चले गए हैं।

आखिर पाच नम्बर के कमरे से राजू को बुलाहट आई। उसका नाम लेकर पुकारा गया। राजेन्द्र कुमार वमा, तो वह लपककर उस चपरासी के पास वरामदे म जा खडा हुआ, चपरासी ने हाथ के इशारे से जिस कमरे की ओर इगित किया, वह उसी मे प्रविष्ट हो गया और वहा कुर्सियो पर बठे पाच अधिकारियो के सामने सीधा, सावधान स्थिति मे खडा हो गया—उन पाचो म से एक ने, जो मध्य मे बैठा था, जिसकी खोपडी गजी थी और आखें बिल्ली जैसी चमकदार तथा भूरी भूरी। जिसने काला सूट पहन रखा था और एक हाथ म पसिल ले रखी थी, राजू से पूछा—"तुम्हारा नाम ?

श्रीमान मेरा नाम राजेन्द्र कुमार वमा है।

'बकवड क्लास म आते हो ?'

"जी।'

"आयु ?'

"21 वष 2 माह, 6 दिन।'

'शक्षणिक योग्यता ?"

"मैट्रिक फस्ट डिवीजन स सन 62 63 म की, अब प्राईवेट तोर पर इण्टर की तैयारी कर रहा हू।

"मूलत वहा के रहने वाले हो ?'

"इस नगर से 10 मील दूर एक छोटा सा ग्राम है—पलाना, वही का हू। लेकिन पिछले 10 11 वर्षों से यही रहता हू।"

"पलाना कोलरी ?"

"जी।"

"गावो मे काम करना पस द करोगे ?"

"कोई आपत्ति नही साहब।"

'विवाहित हो ?"

' नही।"

"निकट भविष्य मे विवाह करने की सोचते हो ?"

"नही साहब।"

"घर मे कुल कितने सदस्य हैं ?"

"एक बुड्ढी मा है, बस।"

"वह तुम्हे शादी के लिए मजबूर करेगी तब ?"

"वह मुझे मजबूर नही कर सकती।"

"परिवार नियोजन के बारे मे क्या जानते हो ?"

मूल प्रश्न पर आते हुए उस अधिकारी ने राजू के मुह पर अपनी दृष्टि जमा दी।

"परिवार नियोजन एक राष्ट्रीय महत्व की योजना है, एक ऐसा व्यापक, विशाल और महान कायक्रम है, जिसके पीछे मानव समाज के कल्याण की भावना छिपी हुई है।" राजू ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—"यह योजना भारत जसे अधिक आबादी वाले देशो के लिए तो और भी अधिक महत्त्वपूण तथा उपयोगी है। उसने कहा—"जब तक किसी भी देश की आबादी सीमित नही होगी, तब तक वहा प्रगति नही हो सकती। दूसरी योजनाए सफल नही हो सकती। खाद्यान्न तथा जीवनोपयोगी वस्तुओ का अभाव नही मिट सकता। जनता का जीवन स्तर ऊपर नही उठ सकता। और हमारे राष्ट्र का घोषित उद्देश्य समाजवाद भी नही पनप सकता।" उसने अपने शब्दो पर तनिक जोर देते हुए कहा—"हम समाजवाद का उद्देश्य छोड देना चाहिए या फिर परिवार नियोजन के कायक्रम को देश के प्रत्येक नागरिक पर, जोकि विवाहित है, कानूनन

थोप देना चाहिए बिना परिवार नियोजन के समाजवाद एक नारा बन कर रह जायेगा।"

राजू किसी नेता की तरह अपने विषय पर धाराप्रवाह बोल रहा था। दो चार मिनट तो अधिकारी उससे प्रभावित हो सुनते रहे, लेकिन जब उन्हें बाहर खड़े प्रार्थियों का ध्यान आया तो एक अधिकारी ने रबड़ की एक वस्तु उसके सामने मेज पर रखते हुए पूछा—"यह क्या है ?"

"इसे निरोध कहते हैं साहब ! यह पुरुषों के काम आता है। परिवार नियोजन के अनेक उपकरणों में यह भी एक सस्ता, सुन्दर, टिकाऊ और सुविधाजनक उपकरण है।"

"और यह ?" उसी अधिकारी ने दूसरी वस्तु मेज पर रखते हुए पूछा तो राजू ने कह दिया—

"इसे लूप कहते हैं। यह महिलाओं के काम आता है, जो महिलाएं ऑपरेशन से घबराती हैं, वे इसका उपयोग कर लेती हैं। यह एक बार फिट करने के बाद, किसी भी समय निकला जा सकता है।" तब उस मुख्य अधिकारी ने कहा—"तुम जा सकते हो।" और राजू अपने घर चला गया। उसे अच्छे परिणाम की आशा थी।

7

तीन दिन बाद राजू को अपने घर के पते पर डाक के जरिए एक लिफाफा मिला। लिफाफा खाकी रंग का था और पते के पास ही दायी तरफ नीचे की ओर प्रेषक शब्द के ऊपर ही एक रबर स्टाम्प लगी थी, लिखा था, जिला परिवार नियोजन कार्यालय, श्री गगानगर। राजू ने अनुमान लगाया—नियुक्ति पत्र होगा और लिफाफे को किनारे पर से फाड़ कर, अन्दर का पत्र पढने लगा। लिखा था—श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, मकान न० 640, वार्ड नम्बर 20, श्री गगानगर। दूसरी ओर लिखा था—जिला अधिकारी, परिवार नियोजन कार्यालय, श्री गगानगर। इन दोनों पतों के नीचे लिखा था—श्रीमान जी, आपको 1 जनवरी सन 62 से श्री गगानगर जिले के अन्तर्गत ग्राम सगरिया म स्थित परिवार नियोजन केन्द्र पर मुख्य प्रचारक नियुक्त किया जाता है। यह नियुक्ति 3 माह के लिए अस्थायी है। इस अवधि में आपको 210) रुपये मासिक वेतन और 40) रुपये विशेष भत्ता मिलेगा। काय सन्तोषजनक रहने पर नियुक्ति स्थायी कर दी जाएगी तथा उक्त पद के लिए केन्द्रीय सरकार की ओर से निर्धारित वेतन, भत्ता तथा अन्य आवश्यक सुविधाए दी जायेंगी। कृपया आप 1 जनवरी सन 62 से पूर्व उक्त केन्द्र पर पहुच कर अपना काय भार सम्भालें और केन्द्र पर उपस्थित अधिकारी के आदेशा-

नुसार अपना कार्य प्रारम्भ कर दें। आपको कार्य के प्राध्यक्ष द्वारा नियत 10 गांवों में प्रचार करना और सहायक प्रचारकों का निर्देशन तथा उन पर नियन्त्रण करना होगा। कार्य भार सभालने के बाद निम्न हस्ताक्षर-कर्ता के कार्यालय को सूचित करें।" जहा पत्र समाप्त हुआ, वहा एक कोने मे अग्रेजी मे हस्ताक्षर थे और हस्ताक्षर के नीचे कोष्टक मे लिखा था—जयदेव सिंह यादव और इस कोष्टक के नीचे लगी हुई थी एक और रबर स्टाम्प—जिला अधिकारी, परिवार नियोजन कार्यालय, श्री गगानगर।

राजू ने उस पत्र को एक बार पढा दो बार पढा और फिर कई बार। उसे आश्चर्य हो रहा था और साथ ही अविश्वास भी। उसने कलेंडर पर नजर फेंकी। कहीं आसपास मूर्खों का दिन—एक अप्रैल तो नहीं? एक बार पहले भी उसके कई शरारती मित्रों ने उसके साथ मजाक की थी और इस प्रकार का एक नियुक्ति पत्र भेजा था। तब बेरोजगारी से पीडित बेचारा राजू उस बैंक मैनेजर के पास नौकरी के लिए गया था और बैंक मैनेजर उसे पढा-लिखा मूर्ख जानकर अट्टहास हँसा था। बाद में बैंक के किसी कर्मचारी ने बताया कि यह 1 अप्रैल की मजाक है, नियुक्ति पत्र नहीं। और तब अपने भाग्य को कोसता हुआ राजू घर चला आया था।

राजू सोच रहा था कि फिर उसको मित्रों द्वारा मूर्ख तो नहीं बनाया जा रहा। लेकिन जब उसे ध्यान आया कि फिलहाल तो दिसम्बर ही चल रहा है, अभी अप्रैल कहा! उसे यह भी याद आया कि उसने कुछ समय पूर्व इण्टरव्यू दिया था और इण्टरव्यू लेने वाले अधिकारी परिवार नियोजन विभाग से ही सम्बन्धित थे। लेकिन जब उसे ध्यान आया कि इण्टरव्यू तो सिर्फ तीन ही दिन पहले हुआ था, इन तीन दिनों में उन हजारों प्रार्थियों में से मेरा चयन कैसे हो सका, कब यह पत्र लिखा गया, कब टाइप हो गया, कब इस पर अधिकारी के हस्ताक्षर हुए, कब डिस्पैच हुआ, कब कितने समय मे श्री गगानगर मुख्य डाक घर से चलकर, यह पत्र यहाँ तक पहुंच गया? वह सरकारी कार्यालयों और सरकारी अधिकारियों की मनोवृत्ति जानता था, उसके हिसाब से इतने सारे कार्य में कम से कम तीन महीनों का समय तो लगना ही चाहिए। तीन महीनों का कार्य तीन ही दिन में कैसे सम्पन्न हो गया, इसी बात का उसे आश्चर्य था।

फिर उसको याद आया कि एक बार मेम साहब ने उसको बहुत अच्छी नौकरी दिलवा देने का आश्वासन दिया था, हो न हो उन्हीं की कृपा और संकेत पर यह कार्य शीघ्रता के साथ सम्पन्न हुआ है। बड़े आदमी चाहें तो क्या नहीं कर सकते? इंटरव्यू के लिए कार्ड तो खन्ना साहब ने ही जारी किया था, निश्चय ही उन्होंने मेम साहब की सिफारिश पर ही वह कार्ड बनाया होगा। फिर उसे याद आया कि मेम साहब कह रही थी—नौकरी तो दिलवा दूंगी, मगर शर्त यह है कि नौकरी करते हुए तुम्हें इन बच्चों को सुबह शाम समय निकाल कर, घण्टे दो घण्टे पढ़ाना होगा। अगर मेम साहब ही नौकरी दिलवाती तो वह मुझे यहीं शहर ही में रखती। लेकिन इस नियुक्ति पत्र के अनुसार तो मुझे समरिया और उसके आसपास के गांवों में कार्य करना होगा, ऐसी स्थिति में खन्ना साहब के बच्चों को कैसे पढ़ाया जा सकेगा?

इन्हीं सब विचारों में खोया हुआ राजू खन्ना साहब की कोठी पहुंच गया। आज साहब दफ्तर नहीं गये थे, वे कोठी पर ही मिल गये। राजू ने अपनी जेब में से वह लिफाफा निकाल कर, साहब को दिखाया, साहब ने उस लिफाफे में से पत्र निकाला और एक ही सांस में उसे पढ़ गये। पढ़-कर उन्होंने अपने मन में उठे भावों को छिपाने की चेष्टा करते हुए कहा—"यह नौकरी तो सिर्फ तीन महीने की है।"

राजू ने कहा— इसमें लिखा है कि बाद में नौकरी स्थायी कर दी जायगी।"

"इसमें तो यह भी लिखा है कि सेवाएं सन्तोषजनक होने पर।" साहब ने कहा—"सरकारी शब्दावली का गूढ़ अर्थ जितना मैं समझता हूं राजू, उतना तू नहीं समझ सकता।"

"हां, साहब, यह तो है ही, मैं कल का छोकरा क्या समझूंगा, आपका तो पूरा ही जीवन सरकारी सेवा में व्यतीत हुआ है, आप अनुभवी हैं।"

"मेरी सलाह मानो तो इस चक्कर में मत पड़ो क्योंकि यह विभाग ही अस्थायी है। पता नहीं कब इस योजना को सरकार रद्द कर दे। अपने किन्हीं खास कृपा पात्रों और भाई भतीजों को डायरेक्टर या सचिव बनाने के लिए सरकारी मंत्री नित नये डिपार्टमेंट कायम करते रहते हैं और इस

प्रकार अपने व्यक्तियों के लिए सरकारी सेवाओं का रास्ता खोलते रहते हैं। कुछ ही समय बाद जब उनके आदमी परमानेण्ट हो जाते हैं तो उन्हें तो किसी अन्य विभाग में स्थानान्तरित कर दिया जाता है और अस्थायी विभाग तोड दिया जाता है और ऐसे किसी अस्थायी विभाग में काम करने वाले हजारों कर्मचारी जिनके पीछे कोई ताकत नहीं होती, फिर बेरोजगार हो जाते हैं। बेचारे कई युवक तो ऐसे ही विभागों में उलझे रहकर, पच्चीसी पार कर जाते हैं और उसके बाद उन युवकों पर "धोबी का कुत्ता घर का न घाट का" वाली कहावत चरितार्थ होती है।

साहब ने कुछ समय रुककर कहा—"मैं सोच रहा हूं कि कहीं तुम्हारे साथ भी ऐसा जुल्म न हो जाये। यदि तुम मेरे पर यकीन कर सकते हो तो कुछ समय प्रतीक्षा करो, मैं तुम्हें यहीं न कहीं पक्की नौकरी दिलवा दूंगा।" साहब की बात राजू को सर्वथा उचित और उनकी सलाह नेक प्रतीत हो रही थी। उसने कहा—"मैं वही करूंगा, जो आप कहेंगे।" और तब वह निश्चिन्त हो साहब के पास एक कुर्सी पर बैठ गया। उसे परिवार नियोजन विभाग का वह नियुक्ति पत्र एक धोखे की टट्टी प्रतीत हो रहा था।

साहब अपनी भूल पर मन ही मन अफसोस कर रहे थे। आखिर मैंने इसके नाम इन्टरव्यू कार्ड जारी ही क्यों किया। मैं यदि कार्ड ही नहीं बनाता, तो हाथ आया हुआ यह पंछी कैसे निकल कर भाग सकता था। लेकिन साहब ने तब कोई विचार ही नहीं किया था, और हजारों कार्डों के साथ ही उसके कार्ड पर भी हस्ताक्षर की मोहर का ठप्पा लग गया था, खन्ना साहब राजू को अपने बच्चों के लिए एक योग्य और परिश्रमी अध्यापक के रूप में मन से स्वीकार कर चुके थे। मेम साहब ने भी इस राजू को एक भला और सीधा लडका कहकर, तारीफ की थी। खन्ना साहब समझते थे कि इतने कम पारिश्रमिक में इतना योग्य अध्यापक नहीं मिल सकता और इसीलिए वे उसे छोडना नहीं चाहते थे। हालांकि इतने ही, या इससे भी कम पारिश्रमिक में अध्यापक तो उन्हें उपलब्ध हो सकता था लेकिन इतना जिम्मेदार और वफादार व्यक्ति मिलना कठिन था। खन्ना साहब ने नौकरी की तलाश में आए हुए कई अन्य युवकों को राजू

से पहले बच्चो के लिए अध्यापक नियुक्त किया था, लेकिन कोई भी युवक बच्चा को सफलतापूर्वक नही पढा सका।

और इस राजू ने तो एक ही महीने मे बच्चो को बहुत कुछ सिखा-पढाकर, होशियार कर दिया था। राजू की पढाने की शैली मनोविज्ञान पर आधारित थी, और वह बच्चों से प्यार भी बहुत करता था। खन्ना साहब के तीनो बच्चे राजू से बहुत हिलमिल गये थे, घुलमिल गये थे जैसे दूध मे पानी। बच्चे भी इस नये अध्यापक को छोडने के लिए तैयार नहीं हो रहे थे।

इन्ही सब बातो को ध्यान मे रखते हुए खन्ना साहब स्वार्थ के वशीभूत हो, राजू की जिन्दगी से, उसके उज्ज्वल भविष्य से खिलवाड करने पर उतारू हो गये। और इधर यह मूर्ख राजू भी साहब की नकली सहानुभूति मे फसकर, बना बनाया खेल बिगाडने की सोचने लगा। वह नही जानता था कि उसके साथ, 'खाल के लिए भैंस को मार देने वाला' यह खन्ना साहब भयकर धोखा कर रहा है।

8

एक जनवरी मे केवल दो ही दिन शेष रह गये थे। तब उसकी भेंट अपने एक पुराने सहपाठी घनश्याम से हो गई। घनश्याम भी मटिक तक राजू के साथ साथ पढा था। बाद मे निधनता के अभिशाप से पीडित राजू ने तो पढाई छोड दी और घनश्याम ने शहर के गवनमेंट कालेज मे प्रवेश ले लिया। उसने इसी वष इण्टर किया है। वह भी राजू के साथ ही इण्टरव्यू मे सम्मिलित हुआ था और उसे भी परिवार नियोजन विभाग मे प्रचार-प्रसार अधिकारी का पद मिल गया था। उसकी ड्यूटी सगरिया के निकट ही हनुमानगढ टाउन मे लगी थी।

घनश्याम ने परिवार नियोजन विभाग द्वारा नवनियुक्त कमचारियो और अधिकारियो की सूची पढ रखी थी, एक सूची मे उसने राजेन्द्र कुमार वर्मा का नाम भी पढा था। सावजनिक वाचनालय के बाहर लॉन मे राजू को खडा देख घनश्याम को उसकी नई नियुक्ति का ध्यान आ गया और उसने आगे बढकर राजू को बधाई दी। तब राजू ने कहा—' मैं इस नौकरी पर नही जा रहा हू।" राजू की यह बात सुनकर घनश्याम को बडा दुख और आश्चय हुआ, उसने पूछा—"क्यो भाइया, ऐसी क्या बात हो गई ?' तब राजू ने खन्ना साहब का हवाला देकर बताया कि " यह नौकरी अस्थायी है और खन्ना साहब मुझे बहुत शीघ्र कोई पक्की नौकरी दिलवा

देंगे।"

खन्ना का नाम सुनकर, घनश्याम सारी स्थिति को समझ गया। बोला—"खन्ना महान् स्वार्थी और नीच प्रवृत्ति का आदमी है। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं। तुम स्वभाव से भोले हो, कहीं उसके चक्कर में मत आ जाना।" घनश्याम ने कई लड़कों के नाम गिनाए और कहा— "इस शैतान ने कई युवकों के साथ विश्वासघात किया है और अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए कइयों की जिन्दगी बरबाद की है।" घनश्याम ने अपने सहपाठी की बुद्धि पर तरस खाते हुए सलाह दी—"तुम कल सुबह की गाड़ी से सगरिया चले जाओ और अपना पद-भार संभाल लो। हनुमानगढ़ तक मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा। मुझे भी इसी विभाग में प्रचार-प्रसार अधिकारी का पद मिला है।

राजू ने घनश्याम की सलाह मानते हुए कहा—'लेकिन मेरा नियुक्ति पत्र तो खन्ना साहब के पास ही है।' घनश्याम ने कहा—'भाड़ में जाने दो नियुक्ति पत्र को, सगरिया कार्यालय में भी एक प्रतिलिपि पहुंची ही होगी। तुम कह देना कि मेरा नियुक्ति पत्र कहीं खो गया है। किसी बड़े उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसा झूठ, जिससे किसी का हानि न होती हो, बोलने में कोई पाप नहीं है। अगर तुम फिर खन्ना साहब से मिलोगे तो वह तुम्हें किसी न किसी तरह उलझा लेगा। इसलिए तुम उसके पास जाओ ही मत।"

"मैं उसके बच्चों को पढ़ाता हूँ। इस बारे में तो उसे इन्कार करने के लिए कहना ही पड़ेगा और फिर एक महीने की पगार भी तो उससे लेनी है।'

'वह पगार-वगार कुछ नहीं देगा।" घनश्याम ने कहा—' आज तक उसने किसी अध्यापक को पगार के नाम पर एक पैसा नहीं दिया। तुम व्यर्थ चक्करबाजी में मत फंसो। और बच्चों को पढ़ाने से इन्कार करने की आवश्यकता भी नहीं, जब दो चार दिन वहां नहीं पहुंचोगे तो वह स्वयं समझ लेगा।

'अच्छी बात है, मैं खन्ना से नहीं मिलूंगा।" राजू ने अपनी विवशता प्रकट करते हुए कहा—"मेरे पास सगरिया तक पहुंचने का किराया भी नहीं है और अगर किसी तरह पहुंच भी जाऊंगा तो वहां आगे जाकर

खाऊंगा क्या, तनख्वाह तो एक महीने तक काम करने पर ही मिलेगी न ? और इधर मा की भी चिन्ता है।'

राजू की स्थिति को समझकर, घनश्याम ने कहा—"तुम अभी मेरे साथ घर चलो, मैं तुम्हे सौ रुपया उधार दे देता हू। तुम पचास रुपया मा को दे देना और पचास अपने साथ ले जाना। इससे दोनो तरफ का काम चल जायेगा। जब तुम्हे तनख्वाह मिले तो दो तीन बार मे अपनी सुविधा के अनुसार यह ऋण चुका देना।"

घनश्याम की यह बात उसे पसन्द आ गई। इससे उसकी सभी समस्यायें हल होती थी। वह उसी समय घनश्याम के साथ, उसके घर गया। घर जाते ही घनश्याम ने उसको सौ का एक नोट दे दिया। घनश्याम मध्य वित्त परिवार का था। सौ पचास रुपया के लिए उसका हाथ अडता नही था। राजू वह नोट लेकर सीधा मोदी की दुकान गया और बोला—"यह लो सेठजी, अपने पाच रुपये काट लो और पचानवें रुपये वापस कर दो।'

मोदी ने सौ रुपये का नया नोट लेते हुए कहा—"आज तो सत्ताइस तारीख ही हुई है, राजू बाबू।'

'हा सेठजी।"

"तनख्वाह तो सब को एक तारीख को मिलती है ?"

"कही से उधार लाया हू सेठजी। मुझे कल कही बाहर जाना है। इसलिए सोचा, जाते जाते सेठजी का हिसाब तो चुकता करता जाऊँ ?"

'वापस कब लौटोगे बाबू ?"

'हर महीने की एक तारीख के बाद, दो एक दिन के लिए अवश्य आया करूगा। आप पीछे से मा को तकलीफ मत होने देना। वह अगर कोई सामान लेने आये तो दे देना। मैं आकर आपका हिसाब कर दिया करूगा।'

'आप ही की दुकान है राजू बाबू। मैं तो सौ दो सौ रुपयो का नौकर हू। आप लोगो का दास। मा को मेरे रहते तकलीफ कैसे हो सकती है ?"

"बस इतनी सी कृपा चाहिए सेठजी।"

"हा, बाबू फिलहाल क्या सौदा दू ?'

"अभी तो कुछ नही चाहिए, सुबह मा आयेगी, यह जो भी ले, दे दीजिएगा।"

मोदी ने अपने हिसाब के पाच रुपये काटकर, तत्काल खाते मे जमा कर दिये और शेष पचानवे रुपये राजू को वापस लौटा दिये। राजू ने घर आकर मां को पचास रुपये दिय और कहा—"जो सामान मोदीजी के यहा मिल जाये वह तो उधार ले आना, और यह रकम सुरक्षित रखना। बाजार से कोई सामान लाना हो तो तुम्हारे पास यह रुपय हैं ही। मैं कल सुबह की गाडी से हनुमानगढ़ जाऊगा, मुझे वहा नई नौकरी मिल गई है।"

"वापस कब लौटेगा ?"

"जब भी समय मिल जायगा, चक्कर लगा लूगा। रात दिन बसें आती-जाती रहती हैं। बीच मे समय नही मिला तो पहली तारीख के बाद, अगले महीने की पहली तारीख के बाद, दो-चार दिन के लिए आऊगा ही। तब तक मुझे इस एक महीने की तनख्वाह भी मिल जायेगी।"

"सरकारी नौकरी है ?"

"हा मा।"

"तनख्वाह कितनी ?"

"ढाई सौ रुपया।"

"नौकरी पक्की है ?"

"फिलहाल तो पक्की नही।" राजू ने कहा—"तेरा आशीर्वाद होगा तो तीन महीने बाद पक्की भी हो जायेगी।"

"मैं यहा अकेली रहूगी बेटा।"

"तीन महीने बाद, अगर नौकरी पक्की हो गई, जैसी कि आशा है तो मैं तुझे अपने साथ ही ले जाऊगा।"

"परमात्मा सब ठीक करेगा बेटा।" मा ने कहा—"ईमानदारी और इज्जत को बट्टा नही लग जाये, बस, इस बात का ध्यान रखना, सरकार और जनता की सेवा करना।"

"तेरे इन शब्दो को सदैव याद रखूगा—मा।"

और इस प्रकार मा बेटे के मध्य आधी रात तक बातचीत होती रही।

सोते सोते मा ने पूछा—"साहब ने एक महीने की पगार दे दी ?" राजू ने कहा—"अभी तक तो नही दी है। अगली बार आऊगा, तब उनसे माग लूगा। कमाये हुए पैसे कहाँ जाते हैं ?"

"मेरे को अभी जो पचास रुपये दिये हैं, यह कहा से ले आया ?"

"मेरा एक दोस्त है मा, उसने सौ रुपये दिये हैं। पाच रुपये मादी जी को देकर, खाता खुला कर लिया, अब वह एक महीने बोल नही सकेगा। पचास तेरे को दे दिये। पतालीस रुपये मैं अपने साथ ले जाऊगा। वहा मुझे भी तो एक महीने का वक्त गुजारना है।"

"जब मोदी मुझे उधार तोलता रहेगा तो फिर यहा पचास रुपयो की क्या जरूरत है। मुझे तो बीस ही बहुत होगे। तू तीस रुपये और ले जा। वहा तुझे कोई तकलीफ नही हानी चाहिये।"

'नहीं, मा।" राजू न कहा—"महिने भर के लिए पतालीस रुपये बहुत होगे। अधिक रुपये पास म होने तो खच भी अधिक होगा।"

आखिर बातचीत करते-करते ही मा-बटे का सुख की नींद आ गई। सुबह पाच बजे घनश्याम ने ही आकर उसे जगाया। उसके साथ बैंडिंग और दूसरा मामान लिए एक व्यक्ति और था। राजू के पास कोई बॉडिंग बैंडिंग तो था नही, उसने एक थले म आवश्यक सामान डाला, एक पुराना कम्बल लिया और वह भी मा के चरण छू कर घनश्याम क साथ चल पडा। छह बजे एक बस हनुमानगढ होत हुए सगरिया के लिए रवाना होने वाली थी, वे दोनो उसम बैठ गये। घनश्याम राजू को सगरिया तक छोडने क लिए गया। राजू ने जब काज ले लिया तो घनश्याम लौट कर हनुमानगढ आया और उसने अपना पद भार सम्भाला।

9

राजू जब दो तीन दिन तक लगातार गैर हाजिर रहा और खन्ना साहब के बच्चो को पढ़ाने के लिए नही आया तो खन्ना साहब ने अनुमान लगा लिया कि वह निश्चित रूप से सगरिया पहुच गया है और उसने परिवार नियोजन विभाग मे नौकरी कर ली है। खन्ना साहब का इस बात पर बडा रज हुआ कि उसने मेरे सामने तो इकार कर दिया था और बाद मे बिना मिले, बिना पूछे चुपचाप चला गया। वह अपनी पगार मागने भी नही आया।

खन्ना साहब ने अपनी बीवी से जो उनके पास ही बैठी थी, कहा—"तू तो कह रही थी लडका बहुत सीधा और भोला भाला है?"

"शकल सूरत से तो सीधा ही लग रहा था।"

"सूरत से सीधे दिखाई देने वाले बडे जालिम होते हैं मेम साहब!"

"यह बात अब तो मेरी समझ म भी आ गई।"

"मैंने साले का पगार नही दी, यही अच्छा हुआ, भागते भूत की लगोटी ही अच्छी।"

"नही तो आपने किस को चुका दिया। आप मे यही तो एक रोग है, पहले तो बीस-तीस रुपयो मे योग्य अध्यापक ढूढते हो, फिर वह रकम भी जरूरत पडने पर उसको देते नही। यही कारण है कि हमारे यहा कोई

अध्यापक ठहरता नही। आपकी इस मक्खीचूस मनोवृत्ति ने मेरे बच्चा की जिन्दगी ही बरबाद कर दी।" मेम साहब ने राजू को दोष न देकर, खन्ना साहब की ही आलोचना कर दी।

मेम साहब के मुह से यह कटु सत्य सुनकर, खन्ना साहब भल्लाए। कुम्हार जब कुम्हारी को कुछ नही कह सकता तो वह गधे के कान ऐंठता है। यही कहावत यहा चारितार्थ हो रही थी। मेम साहब की आलोचना से चिढ कर, खन्ना साहब राजू को कोसने लगा। कहने लगा—"साला मेरे को धोखा देकर, किस बिल म घुसेगा। ऐसा फँसाऊगा कि बच्चू को नानी याद आजायेगी।

"किसी गरीब को फसाने से क्या फायदा ?"

आई धर्मात्मा की बच्ची।" खन्ना साहब ने क्रोधित होकर कहा—"उस हराम के पिल्ले ने मेरे को जो धोखा दिया, वह तो दिखाई ही नही देता। और लगी है, तरस खाने उस गरीब पर। वह गरीब है ? दगाबाज कही का। हरामजादे को कहा था, मैं नौकरी दिला दूगा। उसे विश्वास ही नही हुआ, जैसे मैं तो झूठ ही झूठ बोलता हूँ।"

"लेकिन गोद क बच्चे को छोडकर, पेटवाले की आशा कौन करे ? जब उसे नौकरी मिल गई तो वह फिर दूसरी नौकरी के लिए इतजार क्यो करता ?"

"उसे नौकरी मिल ही गई है, इस बात की क्या गार टी ? मिली हुई नौकरी से उसे हाथ धोना न पडे तो मुझे खन्ना साहब कौन कहेगा ?'

"अब आप क्या कर लेंगे ?"

'तू देखती जा। खन्ना ने कहा—"मेरा भी कमाल देख। साला दो ही दिनो बाद रोता गिडगिडाता न आए तो मुझे कहना।

"आप किसी गरीब की दुआ नही, हाय लेंगे।"

"हाय तौबा तो उसके खानदान म मच जायेगी। मेरा भी नाम खन्ना है। भाड नही झोकी, अफसरी की है। अफसरी! हजारो लाखो लोगो पर हुकूमत की है। मैं भी भेड बकरिया नही चराता, आदमियो से पाला पडता है।

काफी देर तक बक-झक कर लेने के बाद खन्ना साहब चुप हो गये।

मौन और बहुत ही गभीर। तब वे मन ही मन कोई षडयन्त्र रचने लगे। एक निहायत ही गरीब और तगहाल आदमी के प्रति एक नितान्त असहाय और अदने आदमी के प्रति वे कोई कुचक्र गढने लगे। घण्टे, दो घण्टे और उसके बाद, देर रात गये तक वे अपने कमरे मे अकेले बैठे कुछ सोचते रहे। एक के बाद एक सिगरेट फूकने लगे। सिगरेट का उडता हुआ धुआ जैसे उन्हे कोई अनोखी सूक्ष्म बूझ और विचार-शक्ति दे रहा हो।

रात दस बजे, उन्हे अचानक होश आया, खन्ना साहब जैसे सोकर जाग उठे। उनकी षड्यन्त्रकारी बुद्धि मे कोई ऐसा विचार आया, जिसके बाद उन्हें और अधिक सोचने विचारने की आवश्यकता नही थी। जसे खोया हुआ खजाना उन्हें वापस मिल गया था। उन्होने आवाज देकर, अपने एक विश्वस्त नौकर को बुलाया, उसके कान मे कुछ शब्द फूंके और सौ का एक नोट आलमारी म रखे अपने पस से निकाल कर दे दिया। वह उसी वक्त कोठी से रवाना हुआ और रात दस बजे वाली बस पकड कर, सीधा सगरिया पहुचा। रात को करीब बारह बजे उसने परिवार नियोजन केन्द्र के मुख्य अधिकारी को, उसके बगले पर जाकर जगाया और उन्हें नियोजन अधिकारी खन्ना साहब का सदेश सुना दिया। वहा का मुख्य अधिकारी खन्ना साहब का परिचित और उनके एक अन्तरग मित्र का निकट सम्बन्धी था।

मुख्य अधिकारी जैन ने खन्ना साहब क विशेष दूत की बात को ध्यान से सुना और पूरी बात सुन लेन के बाद उसे आश्वस्त करते हुए बोला—"तुम बेफिक्र हाकर सोओ, बाहर बरामद मे एक चारपाई पडी है। मैंने आपकी बात और खन्ना साहब के आदेश का पालन करने का निश्चय कर लिया है। तुम कल दिन भर यही मेरे बगले पर रहो। मैं कल सुबह राजू को चाज देकर, बारह बजे की बस से गगानगर चला जाऊगा और कल रात मे तुम अपना काय कर, परसा पहली बस से चले आना।"

"बहुत अच्छी बात है, साहब।" कह कर, चपरासी उस कमरे से बाहर, बारामदे मे पडी उस चारपाई पर जा सोया। सुबह चपरासी जल्दी उठकर, बगले के भीतरी भाग मे किसी कमरे म छिपकर बैठ गया।

सुबह दफ्तर खुलते ही मुख्य अधिकारी ने आकस्मिक अवकाश की

एक अर्जी लिखी तब तक गगानगर से उसके घरवालो की ओर से एक तार भी आ गया था। मुख्य अधिकारी ने राजू को अपने कमरे मे बुलाया और वह तार तथा छुट्टी का प्रार्थना पत्र उसे दिखाते हुए बोला—' मैं चार दिन की छुट्टी जा रहा हू। तुम मेरा चार्ज ले लो।" राजू ने निसकोच भाव से स्थिति को देखते हुए मुख्य अधिकारी का चार्ज ले लिया। क्योंकि तब कार्यालय म मुख्य अधिकारी के अतिरिक्त और कोई अधिकृत व्यक्ति था भी नही, जो चार्ज लेने म वैधानिक दृष्टि से सक्षम हो। कार्यालय के सामान तथा कागजो, रजिस्टरो और फाइलो की सूचिया तो रात ही म बन चुकी थी। सूचियो की एक एक प्रति पर राजू और मुख्य अधिकारी ने चार्ज लेने और चार्ज देने के प्रमाण स्वरूप हस्ताक्षर किये। मुख्य अधिकारी ने राजू को कार्यालय की एक एक वस्तु दिखाई और कागज पत्र विधिवत सम्भलवाये। और तब मुख्य अधिकारी दोपहर की एक बस पकडकर, गगानगर चला गया।

राजू का इस कार्यालय मे आये अभी पूरा एक सप्ताह भी नही हुआ होगा। इसी बीच अस्थायी तौर पर ही सही उसे मुख्य अधिकारी का चार्ज मिल गया था। इस घटना को राजू ने बहुत ही शुभ और सुन्दर भविष्य की कामनाओ के साथ जोड लिया। उसे इस बात पर मन ही मन बडी प्रसन्नता हो रही थी। वह किसी अप्रिय घटना की तो कल्पना भी नही कर सकता था। उसके मन म किसी प्रकार की आशका भी नहीं थी। जिस दिन उसने चार्ज लिया, उस दिन सध्या समय उसने अपने कई मित्रो को प्रसन्न भाव से होटल म चाय पिलाई और मिठाइया खिलाकर, उनका मुह मीठा किया।

रात को वह निश्चिन्त अपने क्वाटर मे जा सोया। उसे बेफिक्री की गहरी नीद आ रही थी। जैसे वह घोडे बेचकर सोया है। इधर राजू अपने क्वाटर म सो रहा था और उधर खन्ना साहब का वह विशेष दूत परिवार नियोजन केन्द्र के कार्यालय मे अपना 'फर्ज' निभा रहा था खन्ना साहब ने जिस काय के लिए उसे सौ का नोट दिया था, वही काय कर रहा था। उस चपरासी ने आधी रात के बाद कार्यालय के दरवाजे पर लगे तालो को तोडा वहा जो भी कीमती सामान था, कागज पत्र थे, सब उठाये

और मुख्य अधिकारी के बगले म जो कि केन्द्र के बहुत करीब था, रख, निश्चिन्त हो सा गया। एक जीप गाड़ी करीब चार बजे उस बगले के भीतर आकर रुकी और ड्राइवर न उस चपरासी को जगाया। चपरासी को इस जीप का इन्तजार था, पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार ठीक चार बजे वह जीप आ गई थी, वह जीप भी गगानगर से खन्ना साहब ने ही भेजी थी। ड्राइवर भी उनका अपना और अत्यन्त विश्वस्त था।

ड्राइवर तथा उस चपरासी ने जल्दी जल्दी में परिवार नियोजन केन्द्र का वह सामान और रेकार्ड, जो बगले म जमा था, जीप म डाला और वह जीप हवा से बातें करने लगी। सूर्योदय से पूर्व ही जीप खन्ना साहब की कोठी म जा खड़ी हुई। एक बहुत गहरा दस फुट गहरा गड्ढा कोठी के पिछवाड़े म पहले स खुदा हुआ था, सारा सामान और रेकार्ड उस गड्ढे म डालकर, ऊपर मिट्टी डाल दी गई और उस पर तत्काल ही गुलाब के कुछ पौधे रोप दिये गये। अब जाकर खन्ना साहब के जी मे जी आया।

खन्ना साहब ने उस ड्राइवर को दो सौ तथा चपरासी को सौ रुपये बतौर इनाम दिया। चपरासी के पास भी अब तक खन्ना साहब की ओर से दो सौ रुपये पहुच चुके थे। लेकिन ड्राइवर ने सोचा—साहब ने मेरी भूमिका को अधिक महत्वपूर्ण समझा है। इस बात से ड्राइवर और चपरासी दोनो ही बहुत प्रसन्न थे, क्योंकि उन्हे एक बहुत ही गोपनीय और बहादुराना (?) काय के लिये पुरस्कृत किया जा चुका था। खन्ना साहब भी बहुत प्रसन्न थे, क्योंकि उनकी सोची हुई एक स्कीम पार पड़ चुकी थी। और उसका परिणाम बहुत ही शीघ्र सामने आने वाला था जिसकी प्रतीक्षा खन्ना साहब उत्सुकता से कर रहे थे।

इधर समरिया मे सुबह 10 बजे एक चपरासी परिवार नियोजन केन्द्र के कार्यालय का ताला खोलने के लिए गया और उसे ताले टूटे हुए दिखाई दिये तो वह दौड़ा दौड़ा तत्कालीन केन्द्र इन्चार्ज राजेन्द्र कुमार वर्मा के पास गया और टूटे हुए ताले की सूचना दी। राजू भी भागता हुआ दफ्तर म आया, जब उसने देखा कि ताले टूटे हुए हैं तो उसके होश उड़ गये। उसने दफ्तर के भीतर जाकर देखा, वहा न तो केन्द्र का वह ध्वनि-प्रसारण यन्त्र था, न पखे, न रेडियो सेट, कमरा, बाल्टी, लोटे आदि सभी

रेकार्ड गायब थे। वह इस अप्रत्याशित अप्रिय घटना की चोट बर्दाश्त नहीं कर सका और सुध बुध खोकर, वहीं गिर पड़ा।

केन्द्र के कर्मचारियों ने पुलिस को सूचित किया तो एक थानेदार और चार सिपाही घटना स्थल पर आ पहुंचे। राजू को अस्पताल भेजा गया, वहां कुछ घण्टों बाद उसे होश आ गया। थानेदार ने उसके बयान दर्ज किये, कर्मचारियों की सूचना के आधार पर रपट दर्ज की और मामले की तफ्तीश जारी कर दी। चार दिनों का अवकाश पूर्ण होने पर केन्द्र के मुख्य अधिकारी भी वापस सर्गारिया आ गये। और उन्होंने सार्वजनिक तौर पर अपने आपको खुश किस्मत घोषित किया। पुलिस ने मुख्य अधिकारी के बयान भी दर्ज किये।

पुलिस को लाख सिर पटकने के बावजूद चोरी का सुराग नहीं मिल रहा था। पुलिस ने इस मामले की छानबीन के लिए बड़ी दौड़ धूप की। पूछताछ के लिए सैकड़ों व्यक्तियों को थाने बुलाया गया। सर्गारिया मंडी और उसके आसपास के सभी नामी गरामी चोरों, गुण्डों तथा दस नम्बरियों को बुलाया गया और उनकी सांगोपांग धुलाई की गई। लेकिन परिणाम कुछ भी नहीं निकला।

परिवार नियोजन केन्द्र के चपरासियों, चौकीदारों और बाबुओं का भी पुलिस ने दिल दहला देने वाली यातनायें दीं और राजू को भी बहुत मारा पीटा। लेकिन इस सब के बावजूद 'खोदा पहाड़ और निकली चुहिया' वाली कहावत ही चरितार्थ हुई। आखिर मुख्य अधिकारी की मौखिक सलाह पर राजू और करीम बक्स चौकीदार का जिसकी चोरी की रात दफ्तर पर ड्यूटी थी, चालान कर दिया गया और उन्हें गंगानगर की एक अदालत में पुलिस द्वारा पेश किया गया। करीम बक्स की जमानत तो उसके कुछ प्रभावशाली रिश्तेदारों ने उसी दिन करवा ली। लेकिन राजू दो दिन और तीन रात हवालात में ही बन्द रहा। उस गरीब की जमानत कौन देता ? आखिर खन्ना साहब आगे आए, उन्होंने ही किसी व्यक्ति को तैयार कर, राजू की जमानत का प्रबन्ध किया।

10

राजू नई-नई नौकरी से निलम्बित हो गया था और उस पर चोरी के अभियोग मे मुकदमा चल रहा था। वह फिर हार कर खन्ना साहब की शरण मे आ गया था और उनके बच्चो को पढ़ाने लग गया था। अभी दस दिन पूर्व, उसने जो एक और ट्यूशन छोड दी थी, वह उसने पुन पकड ली। क्योंकि इसके अतिरिक्त और विकल्प उसके सामने नही था।

यद्यपि राजू अब पहले की तरह प्रफुल्ल और प्रसन्नचित नहीं था, उसे मुकदमे के खर्च और सम्भावित सजा का भय था। वह सुबह से शाम और शाम से सुबह तक बहुत ही भयग्रस्त, घबराया हुआ और चिन्तातुर रहता था। चिन्ता के कारण उसको रात मे नींद नही आती और दिन मे कोई भी कार्य वह सफलतापूर्वक नही कर सकता था।

खन्ना साहब के बच्चो का पढाना लिखाना भी उसके लिये अरुचिकर और पहाड की चढाई जैसा दुरूह कार्य था। फिर भी वह बच्चो को पढाने का उपक्रम तो करता ही था। वह खन्ना साहब के एहसान के भारी बोझ से दबा हुआ था। दो दिन और तीन रात की हवालात के बाद, उन्होंने ही जमानत का प्रबन्ध किया था, अन्यथा वह हवालात ही मे पडा सडता। इतने बड़े शहर मे अपना कहने के लिए राजू के सामने कोई नही था। उसका यदि कोई हमदर्द था तो एक अकेला खन्ना साहब। खन्ना

साहब के कहने से ही राजू की पैरवाई करने के लिए एक वकील खड़ा हुआ था। अन्यथा वकील के अभाव मे उसे तत्काल सजा हो जाती।

राजू कभी अपने दिनमान को दोष देता तो कभी अपनी अदूरदर्शिता-पूर्ण बुद्धि को कोसता। बेचारे खन्ना साहब ने पहले ही सलाह दी थी कि इस नौकरी के चक्कर म मत पड़ो, लेकिन मैंने ही उनकी नेक सलाह को ठुकराया। कभी वह अपने उस सहपाठी घनश्याम को मन ही मन गालियां देता, जिसने उसे दो सौ रुपये उधार दिये थे और खन्ना साहब के विरुद्ध भड़काया था।

राजू का पूरा समय इन्हीं खयालो में डूबते उतराते बीत जाता। अब तक वह अपने जीवन से ऊब चुका था। उसे चारो ओर अधेरा ही अधेरा नजर आता। जीवन के उस घोर अन्धकार मे कभी कभी उसे प्रकाश की एक हल्की सी किरण भी दिखाई देती, वह प्रकाश किरण राजू को खन्ना साहब के परोपकारी और दयालू व्यक्तित्व मे नजर आती थी।

राजू के मुकदमे का निर्णय अभी हुआ नहीं था, मामला न्यायालय में विचाराधीन था और इसी बीच खन्ना साहब का स्थानान्तरण हो गया। खन्ना साहब राज्य सरकार के श्रम मन्त्रालय म सचिव होकर, राजधानी जा बैठे। अब तो राजू का रहा सहा सहारा भी छिन गया। प्रकाश की वह हल्की सी किरण भी लुप्त हो गई। उसका अपना भविष्य घोर अन्धकारपूर्ण प्रतीत हो रहा था।

खन्ना साहब का गये छह महिने बीत गये, और एक दिन राजू के विरुद्ध न्यायालय ने निर्णय सुना दिया। उसे तीन वर्ष की कठोर सजा सुना दी गई। अब राजू जेल में था।

11

जेल म जेल अधीक्षक सरदार सुरेन्द्रपाल सिंह का व्यवहार राजू के प्रति बहुत ही उदार और मानवीय भावनाओ से ओत प्रोत रहा। सरदार सुरेन्द्रपाल सिंह की खन्ना साहब से बहुत गहरी दोस्ती थी। सरदारजी प्राय खन्ना साहब के बगले पर आया करते थे। वहा उन्होंने राजू को कई बार देखा था। एक बार खन्ना साहब ने राजू और सरदारजी का परस्पर परिचय भी करवाया था। तब खन्ना साहब ने राजू के बारे मे कहा था, यह बहुत ही होनहार और प्रतिभाशाली युवक है। इसमे एक कुशल अध्यापक की प्रतिभा है। उन्होंने कहा था कि राजू एक ईमानदार और चरित्रवान युवक है। बच्चो को पढाने और समझाने की इसमे आश्चर्य-जनक क्षमता है। यह कठोर परिश्रमी और उदभट विद्वान है।

सरदारजी को खन्ना साहब के उक्त शब्द भलीभाति स्मरण थे। फिर उन्होने राजू को अध्यापन काय म प्रवत्त, खन्ना के बच्चो को पढाते हुए देखा भी था। उसकी अध्यापन शैली तब सरदारजी को बहुत पसन्द आई थी। सरदार जी को यह भी ज्ञात था कि राजू की जमानत का प्रबन्ध भी खन्ना साहब ने किया था और खन्ना साहब ने ही राजू के लिए एक वकील को खडा किया था। राजू के प्रति खन्ना साहब की इस अनुकम्पा का कारण सरदार जी की दष्टि मे यही था कि राजू एक आला इन्सान

और कुशल अध्यापक हैं।

सरदारजी ने जेल मे भी राजू को उसकी रुचि और प्रवृत्ति के अनुकूल अध्यापन का काय ही सौपा। राजस्थान के कारागहो मे तब तक सुधार कायक्रम लागू हो चुका था और उसी कायक्रम के अन्तगत अन्य कारागृहो की भाति उस कारागह मे भी स ध्या समय कक्षाए लगती थी। जेलियो को पढाया जाता था और पढाने का काय भी शिक्षित कैदी करते थे। राजू भी जेल मे अध्यापन का काय प्राप्त कर, स तुष्ट ही था।

सरदारजी के एक जवान लडकी थी—पम्मा। वह नवीं तक तो यनकेन-प्रकोरण उत्तीण होती रही। दसवी मे आकर उसकी गाडी एकदम रुक गई थी। वह दसवी की परीक्षा म गत तीन वर्षों से बराबर असफल हो रही थी। यद्यपि सरदारजी न इस वष उसका स्कूल आना जाना ब द कर दिया था। लेकिन प्राइवेट तौर पर आगामी वष वे फिर पम्मा को दसवी की परीक्षा मे सम्मिलित करना चाहते थे और इसी उद्देश्य से उ होंने पम्मा का परिवर्तित नय पाठयक्रम की सभी पुस्तकें खरीद कर दी। पम्मा भी दिल से यह चाहती है कि मैं किसी तरह मैट्रिक तो कर ही लू।

सरदारजी का निवास स्थान भी जेल की चहार दीवारी के भीतर ही है। कुछ दिनो पूव तक पम्मा को घर पढाने के लिए एक अध्यापिका आती थी। लेकिन उसने कम पारिश्रमिक के कारण पम्मा की ट्यूशन छोड दी। वह सौ रुपये प्रति माह माग रही थी, जबकि सरदार जी तीस पतीस से अधिक देने की स्थिति म नही हैं। सरदार जी के परिवार म छोटे-बडे कुल प द्रह सदस्य खाने वाले हैं, और कमाने वाले केवल मात्र एक सरदार जी। गाव म बुडढा बाप और मा भी है, हर महिने उ हे भी कुछ भेजना पडता है। फिर सरदार जी की तनख्वाह भी कोई खास नहीं। चार सौ रुपये प्रति माह मिलते हैं। ऊपर की आमदनी का तो कोई प्रश्न ही नहीं। सरदारजी प्रारम्भ स ही भ्रष्टाचार के सख्त खिलाफ हैं। व भ्रष्टाचार को समाज के लिए एक अभिशाप समझते हैं और भ्रष्टाचारियो को देश-द्रोही। उनकी मा यता के अनुसार भ्रष्टाचार की कमाई मा की अस्मत बेचने से भी अधिक खराब और पाप का मूल कारण है।

ऐसी स्थिति म वे किसी महगे अध्यापक अथवा अध्यापिका को पम्मा

के लिए नियोजित नही कर सकते। उस अध्यापिका के चले जाने पर सरदारजो न पद्मा के लिए एक सस्ते से अध्यापक की व्यवस्था की थी। वह विधुर और मन का मैला था। शरीर से बहुत ही दुबल, क्षय रोग से ग्रस्त और बुड्ढा होते हुए भी जवान लडकियों से छेडछाड करने का आदी था। उसने एक बार पढाते समय पद्मा से कुछ अट सट कहा था। लेकिन पद्मा जहर का घूंट पीकर रह गई। एक दिन उसने पद्मा की छाती मे हाथ डाला तो वह नाग की तरह फुकार मार कर खडी हो गई और अपने पिता के सामने सारा किस्सा कह सुनाया।

आखिर उस कुटिल, खल, कामी अध्यापक को छुट्टी दे दी गई और तब से पद्मा स्वयमेव जितना पढ सकती है, पढती है। पिता उसके लिए फिर से कोई उपयुक्त अध्यापक ढूढ रहे थे। और इसी बीच जेल मे राजू आ गया था। सरदार जी की दृष्टि मे राजू एक कुशल और सक्षम अध्यापक तो था ही, एक सच्चरित्र इन्सान था। जेल तो उसे दुभाग्य सयोग अथवा कानूनी जटिलता के कारण हो गई थी। लेकिन जेल अधीक्षक की दृष्टि मे वह चोर, बदमाश, डाकू, गुण्डा अथवा अपराधी नही था।

जेल अधीक्षक जानते थे कि यहाँ बहुत से निर्दोष व्यक्ति भी दिनमान के फेर से आ जाते हैं। सरदारजी की दृष्टि मे राजू भी निर्दोष प्रतिकूल ग्रहो का मारा हुआ है। उसके प्रति सरदारजी के मन मे सहानुभूति थी और एक अज्ञात श्रद्धा की भावना भी। इसी कारण वे राजू के प्रति सहृदय और उदार थे।

एक दिन सरदारजी ने राजू से कहा—"राज बाबू, सन्ध्या समय तुम दो घण्टे जेल म क्लास लेते हो, बाकी दिन का समय तो यू ही नष्ट होता है?"

"आप मुझे दिन के लिए कुछ और काय सौप दीजिए।" राजू ने कहा—"मुझे तो कोई आपत्ति नही।"

"क्या काय करोगे?"

"जो भी आप कहगे।" राजू ने कहा—"आपके आफिस मे कोई लिखा-पढी का काय हो तो, या फिर टाईप का काय सौंप दीजिए। मैं हिन्दी और अंग्रेजी मे टाईप करना जनता हू। शोर्ट हैंड भी मुझे आता है।

'तुम्ह यदि आपत्ति न हो तो एक काय करो।" सरदारजी न जरा सहमते हुए कहा —'मेरी लडकी पद्मा को घण्टे दो घण्टे पढा दिया करो, वह प्राइवेट मट्रिक की तयारी कर रही है। पाठयक्रम नया और कठिन है। यदि तुम थोडा परिश्रम करो तो उसका बेडा इस वष पार हो सकता है।" उन्होने क्षणभर रुककर कहा—'मैं तुम्हारी मा को हर महिने गुप चुप मे तीस रुपये भेज दिया करूगा। इससे अधिक देने की शक्ति तो मुझ मे नही।'

सरदारजी ने कहने को कह तो दिया मगर व जानते थे कि यह काय कानून के विरुद्ध है। जेल नियमो के सख्त खिलाफ। किसी भी कदी से जेल का कोई भी अधिकारी निजी काय नही करवा सकता। और यह काय तो जेल अधीक्षक का सवथा निजी और व्यक्तिगत ही था। जेल और पद्मा की शिक्षा दीक्षा का परस्पर क्या सम्बन्ध हो सकता है? वे यह भी जानते थे कि राजू एक सुशिक्षित, जागरूक तथा कानून का ज्ञाता, तथा जेल के कायदों का जानकार है। उन्हें इस बात की पूरी-पूरी आशका थी कि राजू इस काय के लिए इन्कार कर सकता है, और इसे इन्कार करने का पूरा पूरा अधिकार भी है।

सरदारजी यह भी जानते थे कि मेरे द्वारा प्रस्तावित काय एक प्रकार का साधारण भ्रष्टाचार ही है। लेकिन एक तरफ तो उनके सामने अपनी पुत्री की शिक्षा का प्रश्न था, साथ ही अपनी दुबल आर्थिक स्थिति का प्रश्न भी। फिर उनके सामने कानून कायदे का एक प्रश्न अलग था। वह समझ नही पाये कि उन्होने यह प्रस्ताव राजू जसे जागरूक युवक के सामने रख कैसे दिया। लेकिन तीर तरकस से निकल चुका था, अब क्या हो सकता था?

इधर राजू के सामने भी एक तरफ तो कानूनी स्थिति थी, जेल के कायदे थे, दूसरी तरफ मा की चिन्ता। वह इसी ऊहापोह म देर तक खामोश रहा, सोचता रहा। सरदारजी के प्रश्न पर विचार करता रहा। वह सरदारजी की आर्थिक स्थिति के बारे मे बहुत कुछ जानता था। सरदारजी खन्ना साहब से प्राय ऋण लेते रहते थे। और अपनी आर्थिक दुरावस्था के बारे म जिक्र करते रहते थे। खन्ना साहब भी सर दारजी को

नैतिकता, भ्रष्टाचार विरोधी नीति, सिद्धातप्रियता और उन सबके कारण उत्पन्न विपन्नता की बातें कहते ही रहते थे। राजू ने मन ही मन अनुमान लगाया एक बाप के उस दृष्टिकोण का जो सन्तान के प्रति स्वाभाविक तौर पर होता है।

सरदारजी के मन में पप्पा की शिक्षा के प्रति जो उत्कण्ठा थी, जो चिन्ता थी, वह उनके प्रस्ताव की रोशनी में राजू को स्पष्ट दिखाई दे रही थी। आखिर अपने और सरदारजी के पक्षों पर पर्याप्त विचार कर लेने के बाद उसने मन ही मन एक निर्णय कर लिया—पप्पा को पढ़ाने का निर्णय। राजू जब काफी देर तक विचारों में खोया रहा और बोल कर, कोई उत्तर नहीं दिया तो आखिर सरदारजी ने ही उस लम्बे मौन को भंग करते हुए कहा—"कोई बात नहीं, राजू बाबू। मैंने तो यूं ही तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए कह दिया। मैं पप्पा के लिए किसी अन्य अध्यापक की व्यवस्था कर लूंगा। जाओ, तुम अपने कमरे में जाओ और आराम करो।"

'नहीं, सरदारजी।' राजू ने कहा—"आपको पप्पा के लिए किसी अन्य अध्यापक की आवश्यकता नहीं।"

12

राजू जब पहले दिन सरदारजी के क्वाटर मे पद्मा को पढाने के लिए गया तो उसने एक ही बैठक में यह मान लिया कि यह लड़की प्रतिभा-शून्य है। इसके मन म न तो शिक्षा के प्रति प्रेम है न शिक्षक के प्रति श्रद्धा अथवा सद्भावना। फिर भी राजू ने धैर्य और साहस से काम लेने का निश्चय किया तथा उस दिन के बाद, नियमित रूप से सुबह-सुबह आठ से दस बजे तक दो घण्टे पद्मा को पढान का, उसे कुछ समझाने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया। राजू को यह पूर्ण विश्वास था कि मेरा प्रयास अकारण नही जायगा।

हिन्दी हो या अंग्रेजी, गणित हो या सामान्य ज्ञान, इतिहास हो या भूगोल। पद्मा हर विषय म कमजोर थी। राजू को कभी-कभी इस बात पर आश्चर्य होता कि इस जड बुद्धि छोकरी को नवी उत्तीर्ण का प्रमाण पत्र किसने दे दिया। वह तो पाचवी के योग्य भी नहीं थी। राजू ने एक साप्ताहिक समय सारिणी बना ली थी और वह उस सारिणी मे निर्धारित वार तथा विषय को देखकर, एक एक विषय को बारी-बारी पढ़ाता। वह उसे एक ही बात को एक बार और कभी-कभी अनेक बार समझाता। कभी-कभी किसी किसी बात को वह समझ भी लेती लेकिन अधिकांश बातें उसकी समझ से बाहर ही रहती। और एक बात को, एक प्रसग

अथवा एक प्रश्न को समझ लेने और एक बार अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर उसे सुना देने के बाद भी वह उसे कुछ ही दिनों के बाद भूल जाती। जब कभी राजू उसे सिखाए हुए ऐसे किसी प्रसंग, पाठ अथवा प्रश्न को दोहराने के लिए कहता तो वह अजीब परेशानी में फँस जाती और राजू का मुह ताकती रहती। कभी-कभी मुह ताकते समय वह बहुत ही गम्भीर, उदास, खिन्न और दु खी प्रतीत होती तो कभी-कभी उसके होठो पर एक विचित्र और कुटिल मुस्कान दिखाई देती।

राजू ने धीरे धीरे उसके व्यक्तित्व, चरित्र और मानस का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। पद्मा उसके लिए एक शिष्या अथवा एक छात्रा न रहकर, एक ऐसी पुस्तक बन गई, जिसकी लिपि बहुत टेढी मेढी, अनपढी और दुरूह है, तथा उस पुस्तक को पढने-पढाने मे किसी योग्य और अनुभवी शिक्षक की सहायता तथा मार्गदर्शन भी नही। वह पद्मा का एक अध्यापक बन कर आया था, और स्वयम् एक छात्र बन कर रह गया।

राजू नित्य प्रति सरदारजी के क्वार्टर मे नियमपूर्वक अब भी दो घटे के लिए जाता है। लेकिन अब वह पद्मा को पढाने के लिए नही, पद्मा रूपी एक पुस्तक को पढने के लिए। प्रारम्भ मे तो इस अजानी पोथी के अक्षरो, मात्राओ, वाक्यो और पदो को पढने मे उसे कुछ कठिनाई सी अनुभव हुई लेकिन बाद मे धीरे धीरे सब कुछ उसकी समझ मे आने लगा।

राजू ने अनुभव किया कि पद्मा को घर-परिवार मे मा बाप का, भाई बहिनो का, बुड्ढे बुजुर्गों का कभी स्नेह नही मिला। बाल्यावस्था मे वह पारिवारिक सदस्यो की ओर से यत्किंचित भी स्नेह सम्मान अथवा आदर प्यार प्राप्त नही कर सकी। बाद मे स्कूल का वातावरण भी उसे अनुकूल प्राप्त नही हुआ। वहा भी सयोग से अध्यापिका या अध्यापक ने, किसी छात्रा या छात्र ने उसको वह सब कुछ नही दिया, जिसकी इसे अपेक्षा थी

प्यार और सम्मान की जगह उसे मिला अनादर और तिरस्कार। दुत्कार और डाट डपट। गालिया और ताडना। ज्यो ज्यो इसको अनादर और यातनायें मिलती गई, गालिया और ताडना पडती रही, त्यो-त्यो यह

उच्छृंखल और उद्दण्ड होती गई। जब इसके किशोर व्यक्तित्व में उच्छृंखलता और उद्दण्डता के तत्त्व समाविष्ट होते गये, इस पर अनुशासन, मर्यादा और व्यवस्था के नाम पर कुछ ऐसे अत्याचार हुए, कुछ ऐसा अमानवीय व्यवहार हुआ, जिसके कारण बाह्य रूप में प्रतीत होने वाले वे व्यक्तित्व-दोष तो अदृश्य हो गये, लेकिन साथ ही इसकी बुद्धि भी जड़ होती चली गई। चेतना जैसे लुप्त हो गई।

राजू ने अनुभव किया कि इसके अवचेतन मन में प्यार और सम्मान की बेहद भूख अत्याचारों और आतंक की मोटी परतों के नीचे दबी हुई पड़ी है। वह सोचता कि अब अगर उन परतों का प्रयत्नपूर्वक धैर्य और साहस के साथ उठाया जाये और तब सम्मान और प्यार की वह भूख विकराल होकर सामने आ जाए तो उस भूख को शांत कैसे किया जाये? राजू यह भी जानता था कि घर में वातावरण अनुकूल नहीं है। वह जिस घर में रहती है, वह जेल के भीतर एक और जेल है। कोठरी के भीतर एक और अंधेरी कोठरी। राजू यह भी जानता है कि घर से बाहर पाँव रखने की इजाजत इसको मिल नहीं सकती।

राजू ने सोचा—'आयु के साथ सम्मान और प्यार की यह भूख सेक्स में भी बदल सकती है। और ऐसा सेक्स जो प्यार और सम्मान के अभाव में उत्पन्न होता है, वह कितना भयंकर और विनाशकारी होता है? राजू ने मनोविज्ञान और सेक्स सम्बन्धी हजारों लेख तथा सैकड़ों पुस्तकें पढ़ी हैं। इसलिए वह ऐसे सेक्स के परिणामों के बारे में भी सोच सकता है।

एक दिन उसने अनुभव किया कि वह स्वयम् एक धर्म संकट में फँसता जा रहा है। वह पद्मा को स्वास्थ्य विज्ञान का कोई पाठ पढ़ा रहा था। उसमें स्त्री और पुरुष की शरीर रचना के सम्बन्ध में कई प्रश्न थे। एक प्रश्न यह था कि स्त्री और पुरुष की शरीर रचना में आधारभूत अन्तर को स्पष्ट कीजिए। पद्मा ने पहले से इस प्रश्न पर लाल पेंसिल से लिख रखा था—मोस्ट इम्पोर्टेण्ट। उसने मौखिक रूप से भी कहा था—"गुरुजी, यह प्रश्न हर साल परीक्षा में अवश्य आता है। तीन बार तो मैं स्वयम् परीक्षा दे चुकी यह प्रश्न आता ही है। आप इस पर थोड़ा प्रकाश

शालिए।" तब इस प्रश्न पर प्रकाश डालते हुए राजू ने लिंग भेद की बात कही थी। प्रसगवश कही गई उस बात को पकडते हुए पद्मा ने कहा था—"आप इस अतर को शब्दो म नही व्यावहारिक रूप म समझा सकें तो बडी कृपा होगी।" तब राजू ने यह समझा था कि पद्मा एक नादान लडकी है और अजाने मे सुने सुनाए शब्दो क आधार पर ऐसी मूर्खता कर रही है। यही सोच कर राजू ने कह दिया था—"व्यावहारिक रूप से बताई, समझाई गई बात भी अधिक समय तक याद नही रहती। अभी तुम्हारी परीक्षा के बीच मे बहुत समय पडा है।"

राजू ने कहा था—"परीक्षा मे कुछ समय पूर्व ही तुम्हे इस प्रश्न के उत्तर मे वह व्यावहारिक शिक्षा दी जायगी ताकि वह व्यावहारिक ज्ञान परीक्षा म तुम्हारे काम आ सके और तुम्हे उसका पूरा पूरा लाभ मिल सके।" तब पद्मा ने भोलेपन के साथ पूछा था—"लिंग दो ही प्रकार क होते हैं?"

नही, स्त्री लिंग और पुलिंग के अतिरिक्त एक नपुसक लिंग भी होता है।"

"आप स्त्रीलिंग हैं, पुलिंग अथवा नपुंसक लिंग?"

"पुलिंग।" तब पद्मा न हँसते हुए धीरे से कह दिया था—"नही, आप तो मुझे नपुंसक लगत हैं।"

पद्मा की यह बात राजू के मन म काटे की तरह चुभ गई थी। बात कहने के लहजे से ही राजू समझ गया था कि पद्मा न तो इस मामले मे भोली है न मूर्ख। इस बात के पीछे उसकी एक बहुत लम्बे अर्से से दबी पडी कामना बोल रही थी। एक इच्छा हुकार रही थी। राजू को उसकी वह इच्छा सर्वथा स्वाभाविक ही प्रतीत हुई। बाहर आगन मे उसकी विमाता खडी हुई नही होती तो राजू उसे तत्काल ही बता देता कि वह स्त्री है पुरुष है या नपुसक। वह स्वास्थ्य विज्ञान क उस मोस्ट इम्पोर्टेन्ट प्रश्न का व्यावहारिक उत्तर भी तत्काल ही दे देता।

लेकिन राजू क सामने उसकी विमाता व्यवधान बन गई। पद्मा की मा बहुत पहले ही जब वह तीन वर्ष की थी मर गई। उसके पिता ने दूसरी शादी की थी। वह बडी ही शकालू प्रकृति की थी, और पद्मा क प्रति

बहुत ही सतक। पद्मा चूकि जवान थी। 19 20 साल की। इसलिए वह उस पर कड़ी दृष्टि रखती थी। उसका व्यवहार तो प्रारम्भ से ही पद्मा के प्रति कठोर है ही। पद्मा की जड बुद्धि के लिए भी बहुत अशो में सरदारजी की दूसरी पत्नी ही है। राजू पढाते समय पद्मा की विमाता के व्यवहार और उसकी गतिविधिया को देखता रहता है। उसकी आखो म निरतर तैरने वाली सन्देहास्पद भावनायें राजू से छिपी हुई नही थीं। इसीलिए राजू उस दिन पद्मा द्वारा उसके पौरुष को चुनौती मिलने के बाद भी स्थिर समुद्र की तरह शान्त रहा। शान्त और गम्भीर।

13

सुबह आठ का समय था। गर्मी का मौसम। एक ओर तो चढते हुए सूरज की तपन, दूसरी ओर सरदारजी के घर के बाहर, दीवार के निकट खड़े नीम के वृक्ष से टकराकर, उसके हरे नीमफर लग पत्ता और कूपलों से छन-छनकर आने वाली ठण्डी-ठण्डी मादक औरसुगन्धित हवा। जैसे सुबह की तपन और उमस से उस ठण्डी और मादक पवन का शीत-युद्ध चल रहा था। तपन हार रही थी और हवा जीत रही थी।

पद्मा और राजू दीवार के निकट ही घर के भीतरी भाग मे एक चारपाई पर बैठे थे। पद्मा एक कॉपी मे कुछ नोटस ले रही थी और राजू पढाने से पूव उस वार के लिए—शनिवार के लिए निधारित किसी विषय से सम्बंधित एक मोटी पुस्तक को देख रहा था। यह उसका पूर्वाभ्यास था।

कभी-कभी हवा का एक झोंका आता और वह पद्मा तथा राजू के शरीर का स्पश कर, आगे बढ जाता। हवा के बार बार आने वाले झोंको से कभी पद्मा के सूखे बाल उडते और एक लट उसके चेहरे को ढक देती। क्षण भर वह बाला की उस लट को चेहरे पर ही पड़ी रहने देती और बाद मे एक हाथ से उसे हटाकर, पीछे की ओर कर देती और तब अपने माथे पर हाथ फेरती। उसका हाथ पहले सिर पर जाता और फिर केश राशि

के साथ-साथ पीछे कमर तक चला जाता, उसके केश बहुत घने और लम्बे थे, कमर तक पहुंचे हुए। वह माथे में तेल कम ही डालती थी, उसके रूखे-सूखे बाल हवा के साथ उड़ते रहते। बालों की यह बिखरी हुई राशि ऐसी प्रतीत होती जैसे सावन भादों की काली घटाएं हैं। और उस घनीभूत केश-राशि के मध्य उसका लाल सुर्ख चेहरा चांद सा प्रतीत होता।

हवा के वे शैतानी झोंके न केवल उसके बालों को अस्त व्यस्त करते, बल्कि उसके शरीर पर पहले से अस्त व्यस्त कपड़ों से भी छेड़ छाड़ करते। कभी उसकी साड़ी का वह पल्लू जो सिर पर या कन्धों पर होना है, सरक जाता तो कभी साड़ी का वह भाग जो उसने पांवों के बीच में दबा रखा था, फर फर उड़ने लगता। यही नहीं हवा के वे जिद्दी झोंके क्वार्टर के दरवाजे पर लगे फाटक का भी बार-बार खटखटा रहे थे। कभी एक फाटक दीवार से टकराता तो कभी दूसरा फाटक। कभी कभी दोनों फाटक जोर से भिड़ते और एक अप्रिय लगने वाली आवाज होती।

फाटक की वह खटखटाहट पद्मा को अच्छी नहीं लगी, वह खड़ी हुई और उसने फाटक बन्द कर, साकल लगा दी। वह फिर अपने स्थान पर आ बैठी। राजू पुस्तक पढ़ने में इतना तल्लीन था कि उसे पता ही नहीं चला कब फाटक बन्द हो गये और उन पर साकल जड़ दी गई।

'हां, गुरुजी।" पद्मा ने अपनी नोट बुक बन्द करते हुए कहा—"अब बताइए, आप आज क्या पढ़ायेंगे?" पद्मा की मधुर वाणी सुन, राजू ने पुस्तक पर से ध्यान हटाया और पद्मा की ओर देखा। पद्मा की आंखों में एक छात्रा की सी जिज्ञासा कुछ पढ़ने या समझने जैसी उत्कण्ठा न देखकर, उसने एक और ही भाव देखा। वह भाव राजू उसकी आंखों में अक्सर तैरते हुए देखता था, मगर आज उसकी प्रबलता थी तीव्रता थी। जैसे उसकी आंखें किसी युवती की आंखें न होकर, तस्करियों की जीप पर लगी दो सर्च लाइट हों, चकाचौंध कर देने वाली रोशनी।

राजू देर तक उसकी आंखों में झांकता रहा। देखता रहा। कुछ ढूंढता रहा। वह देर तक उसके प्रश्न का कोई भी उत्तर नहीं दे सका। उस नीम से छन छनकर आने वाली वह ठण्डी हवा उतनी मादकता नहीं दे रही थी, जितनी कि पद्मा के प्रकाशयुक्त विलक्षण प्रकाश से भरी हुई वे आंखें। वह

स्वयम तरुण था, उसमे भी तरुणाई की आग थी, और वह पद्मा उस आग मे कभी अपने नेत्रो से, कभी आकृति की भावभगिमा से, कभी वाणी से, तो कभी व्यवहार से बराबर घी डाल रही थी। राजू के दिल दिमाग और सारे शरीर म वह आग भभका मार रही थी। वह बसुध सा था। उठती हुई उमगो की भ्रूण हत्या करने मे वह सदैव पहल करता रहा है। आज जैसे उसके मन ने, उसकी आत्मा ने, उसके सयम ने उत्तर दे दिया है। कह दिया है, उमगो की भ्रूण हत्या अब नही होगी। हृदय मे उठ रहा वह ज्वार भाटा अब शान्त नही होगा। मस्तिष्क म उठा हुआ वह ज्वालामुखी अब नही दबेगा। मन मे आया हुआ वह तूफान अब नियन्त्रित नही होगा। आत्मा म उठा वह भूचाल अब नही रुकेगा। लेकिन फिर भी उसने अपने इष्ट शिव को स्मरण किया।

वह मन ही मन शिव शिव की रट लगाने लगा। लेकिन उसे लग रहा था, आज शिव भी ताण्डव नृत्य दिखाने को आतुर है। वह अपना तीसरा नेत्र खोलने ही वाला है और प्रलय होने ही वाली है। फिर भी उसने विवेक को पुकारा और मन की सम्पूर्ण सकल्प शक्ति के साथ इन्द्रियो को आदेश दिया कि शान्त हो जाओ। वह शान्ति, ओम् शान्ति का जाप करने लगा। उसने आखें मूद ली और समाधिस्थ हो गया।

सरदारजी की पत्नी अपन किसी धम भाई से मिलने के लिए कही बाहर गई हुई है। वह जब कभी धम भाइ स मिलने को कहकर जाती है शाम स पूव नही आती। सरदारजी जेल के अपने कार्यालय म बैठे हैं, उन्हें कभी रात पडे तक फुसत नही मिलते। बच्चे स्कूल गय हुए हैं, बारह बजे से पूव उनके आने की कोई सम्भावना नहीं है। घर मे नितान्त एकान्त है। शाति और नीरवता।

आज जैसा अवसर बहुत ही कम, यदाकदा सयोग से ही आता है। घर का वह एकान्त वातावरण और नीम के हरे पत्तो से छनकर आने वाली वह ठण्डी हवा पद्मा को उकसाने के लिए पर्याप्त है। वह भी एक लम्बे अर्से से ऐसे किसी उपयुक्त अवसर की तलाश मे थी। आज वह यह अवसर खोना नही चाहती। उसके मन म एक लहर, एक अतिरेक उठ रहा था, जिसे दबा देना, उसके बस म नही था। वह दौडकर, कमरे के भीतर

गई।

उसने कमरे में जाकर शीघ्रता के साथ कपड़ों को उतार फेंका, जैसे वे वस्त्र जल रहे हों और जलते हुए वस्त्रों को फेंककर, वह अपने शरीर और प्राणों की रक्षा करना चाह रही हो। कमरे में जाकर, नग्न हो जाने के बाद, उसने पुकारा—"गुरुजी, एक मिनट के लिए भीतर तो आइए।"

राजू की समाधि टूटी। उसने देखा, इधर उधर दृष्टि घुमाई। पद्मा वहां नहीं थी। पद्मा की आवाज सामने कमरे से आई थी, जैसे लोहा चुम्बक के पीछे खिंचा हुआ चला जाता है, वैसे ही राजू पद्मा के पीछे खिंचा हुआ चला गया। कमरे में जाकर उसने देखा पद्मा नग्न खड़ी है। वह अपनी ओर से कुछ प्रतिक्रिया व्यक्त करता उससे पहले ही पद्मा ने अपनी लम्बी भुजाएं पसारकर, राजू को कैद कर लिया। कैद में एक और कैद। वह भी बेकाबू हो गया। उसने कुछ ही समय में पद्मा के भीतर जल रही आग के साथ ही अपने अन्दर धधक रहे शोलों को भी ठंडा कर दिया।

14

जेल अधीक्षक की पत्नी के पांव बाहर निकल चुके थे। अब वह घर में नही टिकती थी। कभी धर्म भाई के घर जाने की कहकर जाती तो कभी बाजार से कुछ सामान लाने के बहाने, कभी अस्पताल से दवाई लाने की कहकर तो कभी धोबी को कपड़े देने या लाने के बहाने से वह निकल जाती तो घण्टो वापस लौटकर नही आती। वह चाहे जिस बहाने से घर छोड़कर बाहर निकलती लेकिन उस धर्म भाई के यहा अवश्य पहुचती थी।

उसका धर्म भाई एक युवक डॉक्टर था। वह प्राइवेट प्रेक्टिस करता था और निजी तौर पर एक चिकित्सालय चलाता था। वह भी मूलत पजाब का रहने वाला था और पजाबी बोलता था। वह अभी अविवाहित था और अकेला ही रहता था। उसकी प्रेक्टिस खूब चलती थी और उसकी मासिक आमदनी हजारो पर जाकर ठहरती थी।

एक बार सरदारनी सख्त बीमार हो गई थी। जेल अधीक्षक सरदारजी ने अपनी पत्नी का उपचार कई वैद्यो, हकीमो और डॉक्टरो से करवाया, मगर कोई लाभ नही हुआ, आखिर इस युवक डॉक्टर की दवाई लग गई। तभी से इस डॉक्टर का सरदारजी के घर तथा सरदारनी का डॉक्टर के घर आना जाना है। गत वर्ष रक्षा व धन के अवसर पर सरदारनी ने डॉक्टर के हाथ मे राखी बाध दी थी, और वह उसका धर्म भाई बन गया।

धर्म भाई बन जाने के बाद डॉक्टर ने सरदारनी को कई उपहार दिये थे। वे दोनो परस्पर, एक दूसरे के प्रति पहले ही दिन से आकर्षित थे और बाद म उनका सगम हो गया था।

सरदारजी ने पद्मा की मा का देहात हो जाने के बाद जब दूसरी शादी रचायी थी, उस समय उनकी आयु 45 वर्ष थी और सरदारनी की आयु 15 वष। अब सरदारजी 55 के आसपास पहुच चुके थे और सरदारनी भरपूर जवानी मे थी, गया पच्चीसी के आसपास। सरदारजी अपनी वृद्धावस्था और काम व्यस्तता के कारण सरदारनी के प्रति उदासीन रहते थे और उनकी इस उदासीनता ने ही सरदारनी को डॉक्टर की ओर आकर्षित किया था।

सरदारनी जब डाक्टर के चक्कर के कारण अक्सर घर से बाहर रहती तो पद्मा को भी एकात मिल जाता। पद्मा जब-तब अपने किसी छोटे भाई अथवा बहिन को भेजकर राजू को बुला लेती और फिर भाई-बहिनो का किसी बहाने से भुला ठगाकर, घर म बाहर कर देती। पद्मा और राजू ने उस एकात वातावरण मे एक दूसरे के लिए लुट जाने और लुटा देने मे कोई कसर नही छोडी। वे अब घी मे शकर की तरह घुल गये थे। दोनो के बीच मे कोई अलगाव या दुराव नही रह गया था।

पद्मा के अतर म छिपे हुए सेक्स के भाव जब कुछ शात हो गये और उसकी प्यास बुझ गई, उसे कुछ सतोष हो गया तो वह दत्तचित्त होकर पढने भी लगी। अब तक उसकी बुद्धि पर पडा एक मोटा पर्दा उठ चुका था और मन पर जमी हुई कई परतें हट चुकी थीं इसलिए उसे पढाई म भी रस आने लगा। वह अपने नये पाठ्यक्रम की सभी पुस्तकों को प्रारम्भ से अत तक चाट गई। इस बार जब वह प्राइवेट छात्रा की हैसियत स मैट्रिक की परीक्षा म सम्मिलित हुई तो अच्छी पोजीसन से उत्तीर्ण भी हो गई। राजू को यश और श्रेय मिल गया। पद्मा का जिस दिन परिणाम आया, उससे ठीक एक दिन पहले सरदारजी को वेतन मिला था। उन्होंने प्रसन्न होकर राजू की मा को सौ रुपये दिये। तीस रुपये तो वह हर महिने राजू की मा को, स्वय उसके घर जाकर देते ही थे।

राजू ने जेल की अवधि समाप्त कर, सरदारजी से विदा ली। वह

जेल से मुक्त होने के एक दिन पहले पद्मा को भी सूचना दे आया था कि कल मैं अपने घर जा रहा हूं। पद्मा ने उसका घर का पता अपनी डायरी में नोट किया था, भीगी आखों से उसे विदाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की थी। सरदारनी को जब यह विदित हुआ कि पद्मा के गुरु को जेल से छुट्टी मिलने वाली है तो उसने भी मानवीय भावनाओं का प्रदर्शन किया और न्यौता देकर, सन्ध्या समय उसे अपने क्वाटर पर भोजन करवाया।

भोजन करते समय सरदारनी ने राजू से पूछा था—"क्या भविष्य में भी आप हमारे घर आना पसन्द करेंगे?" तो राजू ने कहा था—"आप बुलायें और मैं नहीं आऊं यह कैसे हो सकता है।' राजू को पद्मा ने बहुत ही प्रेम और आग्रह पूर्वक भोजन करवाया। सरदारनी ने भी तब भरपूर प्रेम प्रदर्शन किया था, जैसे राजू उन्हीं के घर का कोई सदस्य हो। पद्मा और सरदारनी भोजन के बाद, राजू को दरवाजे से बाहर तक छोड़ने के लिए शिष्टाचारवश गई और सबने परस्पर अभिवादन किया। अगले दिन बड़े तड़के ही राजू को रिहा कर दिया गया और वह अपने घर चला गया।

15

राजू का मन उस शहर मे लग नही रहा था। जेल जीवन काट कर आने के बाद, उसे अपने मित्रा और परिचिता से मिलने म लज्जा सी अनुभव होती थी। उसे लोगा से मिलने मे एक हिचक सी होती थी। वह दिन भर घर ही म पडा रहता। उसका कोई मित्र आता और उसे बाहर निकलने को कहता तो वह कोई न कोई बहाना करके उसे टाल देता। मगर बाहर नही जाता।

कभी वह घर के वातावरण से बोर होकर, घर स निकलता तो उसके पाव जगल की ओर बढ जाते। वह जगल म दूर तक जाता और निरुद्देश्य इधर-उधर भटकता रहता और साझ पडे तक घर लौट आता। कभी-कभी मा उससे पूछती—"इस तरह बेकार बठे रहने से काम कसे चलेगा बेटा ?" तो वह अयमनस्क भाव से कह देता—'कोई न कोई धधा करूँगा ही मा।' "लेकिन घर बैठे रहने और जगल म भटकने से तो कोई धधा मिलेगा नही। काम काज के लिए तो शहर म जाकर प्रयत्न करना पडेगा।' मा कहती।

सरकारी नौकरी करने का तो अब प्रश्न ही नही था। उस पर एक ऐसा दाग लग चुका था, जिसके कारण सरकारी नौकरी उसे मिल ही नही सकती थी। वह कोई प्राइवेट नौकरी अथवा स्वतत्र व्यवसाय के बारे मे

सोचने लगा। स्वतंत्र व्यवसाय पूंजी के अभाव मे हो नही सकता था। आखिर उसने निश्चय किया किसी दूसरे शहर म जाकर, नौकरी कर लेनी चाहिए। एक दिन उसने अपनी मा से कहा—"कल मैं जोधपुर जाता हू। वहा प्राइवेट सेक्टर मे एक नया कारखाना लगा है और कर्मचारियो तथा मजदूरो की भर्ती हो रही है। शायद वहा कोई काम मिल जाये।" उत्तर मे मा ने कहा—"यहा नही तो बाहर ही सही, मजदूरी तो करनी ही पड़ेगी।"

और एक दिन वह जोधपुर चला गया। जोधपुर मे किसी सेठ ने जो नया कारखाना लगाया था, जिसकी सूचना किसी मित्र के द्वारा राजू को मिली थी, उसमे भर्ती का काम पूरा हो चुका था। जितने मजदूर और कार्यकर्ता भर्ती होने थे, हो चुके थे। अब कोई गुजाइश नही थी। इस स्थिति मे राजू इधर-उधर भटकने लगा। उसे नौकरी की तलाश थी।

एक दिन बाजार मे किसी व्यापारी ने उसे चक्कर काटते हुए देख लिया। व्यापारी को अपनी एक दुकान के लिए किसी कर्मचारी की आवश्यकता थी। व्यापारी ने पूछा—"तुम कहा के रहने वाले हो भाई?"

राजू ने बताया—"गंगानगर का।"

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"राजू।"

"कही नौकरी करते हो।'

"नहीं, नौकरी की तलाश मे हू।"

"दुकान मे काम करोगे?"

"काहे की दुकान है?"

"एक कपड़े की है, दूसरी परचून की।"

"किस दुकान मे रखोगे?"

'जिसमे रहना चाहो?"

"कपड़े की दुकान मे रख लो।"

"पगार क्या लोगे?"

"आप ही बता दीजिए।"

"रोटी, कपड़ा और पचास रुपया।" व्यापारी ने कहा—"इस तरह

डेढ सौ रुपये पड जायेंगे।"

"मुझे मजूर है सेठजी।" राजू न अपनी ओर से स्वीकृति दे दी। वह दो दिना से भूखा था। उसन मन ही मन साचा—रोटी तो मिलेगी। सेठ ने उसे अपने साथ चलने को कहा और राजू सेठ के साथ उसके घर चला गया। सेठ ने घर पहुचते ही राजू का एक नई धोती, कुर्ता और तौलिया दिया तथा स्नानघर म जाकर, स्नान कर लन का निर्देश दिया।

स्नान कर आने के बाद, सेठ न उस भोजन करवाया और तब उसे अपने साथ दुकान ले गया। रास्त म सेठ ने राजू को गल्ले वाली दुकान भी दिखाई और बाद म कपड़े वाली दुकान पर छोड आया। सेठ ने दुकान पर पहले से काय कर रहे कमचारिया को राजू का परिचय दिया और कहा—"तुम लाग इसको काम सिखाओग। सेठ राज को दुकान पर छोडकर वापस अपने घर आ गया। सेठ अक्सर अपने घर पर ही रहता था, वह सुबह शाम कभी कभी घण्ट दो घण्ट के लिए दुकाना पर जाता था। दुकानो का पूरा काम काज उसके नौकर और मुनीम गुमास्ते ही देखत थे।

राजू शाम को सेठ के घर चला जाता वहीं भाजन करता, सुबह नहा धोकर, भोजन करने के बाद दुकान चला जाता और दिन भर वहा मुनीम गुमास्तो की आज्ञानुसार काम काज करता रहता, दूसरे कमचारियो की सहायता करता रहता। साथ ही वह कारोबार म पूरी दिलचस्पी लेते हुए, व्यापार की खूबियो को सीखने की चेष्टा करता रहता था।

सेठ की दुकान मे काम करत हुए वह अनेक व्यापारियो के सम्पक मे आया। कभी कभी मुनीम उसको अन्य व्यापारियो के यहा से सामान लाने भेज देता। वह गाडियो या हाथ गाडा म सामान डलवाकर ले आता। सामान वह बहुत ही देख भाल करके लाता था, मुनीम गुमास्तो को उसमे कोई शिकायत नहीं होती। वे उसकी सूझ बूझ पर दाद देते थे। कभी कभी राजू को उगाई करने के लिए भेजा जाता तो कभी बक म रकम जमा करवाने या रकम लाने के लिए भी भेजा जाता था। वह हर काम मे खरा उतरता था।

राजू को वही खातो का काम भी सिखाया गया। वह पढा लिखा तो था ही। उसन बहुत शीघ्र वही-खातो का काम समझ लिया और निपुणता

प्राप्त कर ली। अब तक उसे कपड़ो की जांच भी हो गई थी। वह घटिया-बढ़िया कपड़ो की पहचान कर सकता था, कपड़ो के दाम बता सकता था। उसे यह जानकारी भी मिल गई कि मिल अथवा एजेंसी से कपड़ा किस भाव निकलता है। कम गाठें मगवाने पर कौन-सी दरें लगती हैं और अधिक गाठे मगवाने पर कौन सी दरें।

थोक व्यापारियो को कपड़ा किस भाव बेचा जाता है और खुदरा ग्राहको को किस भाव। ग्राहको से किस तरह बातचीत और कैसा व्यवहार करना चाहिए। कपड़ा बेचते समय ग्राहक को निर्धारित दरो से कितना अधिक मूल्य बताना चाहिए और अन्त मे किस भाव तक कपड़ो को बेच देना चाहिए। कट पीस अथवा डिफेक्ट माल कम कीमत पर क्यो बेचा जाता है, उनमे कितना मुनाफा रहता है? इन सब बारीकियो के बारे मे उसको जानकारी मिल चुकी थी।

कपड़े के व्यापार म उसको रस आने लगा था। उसकी बुद्धि रात दिन इसी व्यापार की गुत्थियो मे उलझी रहती। वह सदव सेठ के हित म सोचता रहता था और उसके अनुरूप ही काम करता था। सेठ के समक्ष उसके मुनीम गुमास्ते राजू की बड़ी प्रशसा करते रहते थे और उसकी व्यापार बुद्धि के विकास की सम्भावनाओ पर चर्चा करते रहते थे। राजू के परिश्रमी, व्यवहार कुशल और व्यापार चातुर्यपूर्ण व्यक्तित्व से वह सेठ बहुत प्रसन्न था।

सेठ न हर महिने दस रुपये की बढोत्तरी प्रारम्भ कर दी। देखते ही देखते पचास रुपया से उसकी तनख्वाह प्रारम्भ होकर, डेढ सौ तक पहुच गई। राजू भी इस उपकार का बदला चुकाने के लिए सदैव तत्पर रहता था। वह रात म देर तक सेठ के घर म बैठा बैठा बही खातो का काम करता रहता। उसे यह भी ज्ञात हो गया था कि एक नम्बर और दो नम्बर की रकम मे क्या भेद होता है। एक नम्बर की रकम कहां से आती है और दो नम्बर के खाते कौन कौन से हैं। एक नम्बर को कहा खर्च किया जाता है और दो नम्बर का उपयोग कहा होता है?

व्यापार के छोट-बड़े सभी भेद उसकी बुद्धि ग्रहण करती जा रही थी। कपड़े के व्यापार से उसको काफी लगाव हो गया था। वह जिज्ञासा-

वश सेठजी से घण्टों बातें करता रहता और व्यापार भेद की बातें पूछता रहता। सेठजी भी उससे स्नेह भाव रखते थे और निसकोच भाव से गुप्त-प्रकट सभी बातें बताते रहते थ।

यद्यपि उस सेठ के पाच बेटे थे। और पाचो व्यापार म लगे हुए थ। लेकिन सेठजी उन पाचो की तुलना मे राजू को कही अधिक योग्य और प्रतिभा सम्पन्न समझते थे। सेठजी मुनीम-गुमास्तों की तुलना म भी राजू को अधिक विश्वस्त और व्यवहार कुशल मानते थे। इसलिए सेठजी को राजू से लगाव था और राजू भी सेठजी के प्रति विशेष श्रद्धा एव भक्ति-भाव रखता था। सेठजी को एक बार विचार आया कि क्यो नही राजू को नई दुकान खुलवा दी जाये?

सेठ ने एक दिन राजू से पूछा—"कपडे का व्यापार समझ मे आ रहा है?" राजू ने उत्तर दिया—"बहुत कुछ समझने की चेष्टा की है। लेकिन सेठजी, व्यापार तो अपार है। जिन्दगी भर इसमे लगे रहो, तब भी भेद तो मिलता नही।'

सेठ ने कहा—"ऐसी कौन सी भेद की बात बाकी रह गई, जो तुम्हारी समझ मे नही आई।"

'अभी तो जुम्मे-जुम्मे आठ रोज हुआ है। मैंने सीखा ही क्या है? आप सात पीढियो से इस धधे म लगे हुए हैं, जन्म जात व्यापारी हैं, फिर भी आपके सामने अनेक गुत्थियां आ खडी होती हैं और उन्हें सुलझाने में आपको कठिनाई होती है।

'कठिनाइया तो जीवन मे आती ही रहती हैं। जहा जीवन है वहा कठिनाइया हैं। जो लोग व्यापार नही करते उनके सामने भी कम कठि-नाइया नही।

'मैं सोच रहा हू कि तेरे नाम से एक स्वतत्र काय कायम कर दिया जाये और कपडे का व्यापार अलग से शुरू कर दिया जाये।' सेठजी ने कहा—'मुझे तेरी योग्यता और ईमानदारी म कोई शक नही है। मुझे विश्वास है कि नये व्यापार मे तुझे सिद्धि मिलेगी।'

"आपने सदैव जोखिम उठाई है।' राजू ने कहा—'अगर ऐसा ही विचार है तो एक जोखिम और उठा लीजिए। मैं जैसा भी हू तैयार हू।"

"पूजी मेरी लगेगी, श्रम और बुद्धि तुम्हारी। हानि होगी तो मेरी और लाभ होगा तो आधा आधा।" सेठ ने कहा—"क्यो है मजूर ?"

"यह तो बहुत ही आसान शर्त है सेठजी।" राजू ने कहा—"मुझे इसमे क्या आपत्ति हो सकती है ?"

"तुम कल ही रकम लेकर बम्बई जाओ, साथ मे गिरधर बाबू भी होगा।" सेठ ने कहा—"मिलो से माल खरीदो और किसी ट्रासपोर्ट कम्पनी म माल पहुचाकर, बिल्टिया साथ म ले आओ, राम नवमी के दिन नई दुकान का मुहूर्त होगा। मैंने पहले से ही बाजार मे एक दुकान देख ली है। और पगडी के पाच हजार रुपये जमा करवा दिये हैं।"

गिरधर बाबू सेठ लालचन्द का सबसे बडा पुत्र है। माल खरीदने के लिए अक्सर वही बम्बई जाता है। अन्य भाइयों की तुलना मे वह है भी अधिक समझदार तथा सयाना। राजू के प्रति वह भी सदभावना रखता है। राजू को कपडे की व्यापारिक विशेषताओ के बारे मे गिरधर बाबू ने ही बहुत कुछ बताया था। राज भी उसको बडे भाई की तरह आदर देता है। दोनो मे परस्पर गहरा प्रेम है।

सन्ध्या समय सेठजी ने अपने बडे पुत्र गिरधर बाबू के सामने अपने विचार रखे और राजू को कपडे की एक नई दुकान खुलवाकर, देने की बात कही तो उसने भी सहमति प्रकट कर दी। गिरधर बाबू को राजू की व्यवसाय बुद्धि पर तनिक भी सदेह नही था। वह राजू को हर तरह से योग्य और विश्वस्त मानता था। लेकिन यहा आवश्यक काय होने से वह साथ नही जा सकता था। और उसने असमर्थता प्रकट कर दी। उसने कहा—"राजू कई बार मेरे साथ बम्बई गया है, सभी मिल मालिक और दलाल इसको जानते हैं। मेरी कोई आवश्यकता तो है नही। यहा इन्कम टैक्स की तारीख है। इसलिए मेरा रुकना आवश्यक है।" गिरधर बाबू की बात सुन लेने पर, स्थिति को देखते हुए सेठजी ने राजू को अकेले ही बम्बई भेजने का निश्चय किया और अगले दिन सुबह की गाडी मे राजू बम्बई के लिए विदा हो गया।

16

बम्बई के जिस आनन्द हिन्दू लॉज में राजू ठहरा था, उसमें किसी मारवाड़ी व्यापारी की हत्या कर दी गई। वह व्यापारी पाकिस्तान से आया हुआ तस्कर का सोना बेचने के लिए बम्बई आया हुआ था, और कई गुण्डे उसके पीछे लगे हुए थे। गुण्डे भी उस लॉज में ठहर गये और आधी रात के समय उस व्यापारी के कमरे में घुस गये। उन्होंने छुरा मारकर उसकी हत्या कर दी और उसके अधिकार का सोना लेकर भाग गये।

इसी घटना के संदर्भ में लाज के मैनेजर और वहां ठहरे हुए पांच अन्य व्यक्तियों को भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। उन पांच व्यक्तियों में एक राजू भी था। राजू के लिए यह दूसरी अनहोनी घटना थी। राजू ने बम्बई के उन मिल मालिकों और दलालों को, जिनसे उसके व्यापारिक सम्बन्ध थे, सूचित किया और उनके आने पर सहायता की मांग की।

व्यापारियों ने पुलिस के अफसरों से भेंट की और राजू के बारे में बताया कि यह इस तरह का ऐरा गैरा आदमी नहीं है। उन व्यापारियों ने पुलिस अधिकारियों को बताया कि यह एक सच्चरित्र और प्रतिष्ठित व्यक्ति है तथा जोधपुर के एक वस्त्र प्रतिष्ठान का कर्मचारी है। उन्होंने कहा कि इस हत्या से राजू का कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता।

व्यापारियों ने राजू को पुलिस के फंदे से छुड़वाने और उसकी जमा

नत देने के लिए बहुत प्रयत्न किया। व्यापारी राजू की मुक्ति के लिए पुलिस को रिश्वत मे बड़ी रकम देने के लिए भी तैयार हो गये। लेकिन पुलिस के अफसर राजी नही हुए। राजू के पास मिलो मे जमा करवाने के लिए जो बड़ी रकम थी, वह पुलिस ने पहले ही छीन ली थी।

आखिर उन व्यापारियों ने जोधपुर तार भेजे और सेठ लालचन्द से टेलीफोन पर सम्पर्क स्थापित किया तथा उन्हें राजू की गिरफ्तारी एव सम्पूर्ण घटना क्रम से अवगत करवाया। सेठजी ने गिरधर बाबू को सहायता करने के लिए बम्बई भेज दिया। गिरधर बाबू ने बम्बई पहुच कर पहले तो पुलिस अधिकारियो से ही सम्पर्क स्थापित किया। वह सोचता था कि कुछ ले देकर पुलिस राजू को छोड देगी। लेकिन उसे सफलता नही मिली।

पुलिस ने राजू की गिरफ्तारी का आधार यह बनाया कि उसके कमरे मे रक्तरंजित छुरा मिला था और राजू के कपड़ो पर भी रक्त के छीटे लगे हुए थे। जिन गुण्डो ने उस व्यापारी की हत्या की थी, वे भागते समय अपना छुरा राजू के कमरे मे फेंक, निश्चिन्त हो गये थे। उसी छुरे पर लगे हुए खून के कई छीटे राजू के कपड़ो पर जा लगे थे। इन्ही तथ्यो के आधार पर मामला अदालत मे पेश कर दिया गया था।

गिरधर बाबू ने बम्बई के कई प्रख्यात बरिस्टरो और विधि विशेषज्ञो से मिलकर, सारी स्थिति समझाई और राजू की जमानत तथा उसके मुकद्दमे मे पैरवी करने के लिए कहा। उसने वकीलो को कुछ राशि अग्रिम तौर पर दी। और वकील उसकी पैरवी करने के लिए खड़े हो गये। अब तक पुलिस ने उन चार व्यक्तियो को, जो कि राजू के साथ ही गिरफ्तार किये गये, छोड दिया तथा राजू को अदालत मे पेश कर दिया।

वकीलो ने अदालत मे राजू की जमानत के लिए प्रार्थना पत्र दे दिया। लेकिन सेशन कोर्ट ने उनकी प्रार्थना को ठुकरा दिया। क्योकि पुलिस ने राजू के बारे मे गगानगर से रिपोर्ट मगवा ली थी। गगानगर की पुलिस ने सूचित किया था कि इस व्यक्ति को चोरी के मामले मे पहले भी सजा हो चुकी है। बम्बई की पुलिस ने कोर्ट के समक्ष गगानगर पुलिस की वह रिपोर्ट भी पेश कर दी थी। फलस्वरूप मजिस्ट्रेट को राजू के बारे मे कुछ

सन्देह हो गया था। फिर वह मामला भी हत्या का था। कई तथ्य सामने थे। इसलिए मजिस्ट्रेट ने राजू की जमानत नहीं ली और उसे जुडीशल हवालात में तब तक के लिए भेज दिया, जब तक अदालत निर्णय न सुना दे।

अब गिरधर बाबू के सामने भी कोई उपाय नहीं था। वह वकीलों तथा अपने कुछ परिचित व्यापारियों को पैरवी के लिए मुलाकात देकर, वापस जोधपुर चला गया। गिरधर बाबू ने सेठजी को सारी स्थिति से अवगत करावाया तो उन्हें बहुत कष्ट हुआ। नई दुकान के बारे में सोची हुई योजना पर भी पानी फिर गया। लेकिन वे भी निरुपाय थे। राजू के हवालात में होते हुए भी सेठजी उसकी मां को पचास रुपये हर महिने भेजते रहे। राजू पहले भी मां को पचास रुपया महिना भेजता था। सेठजी ने राजू की मां को यह नहीं लिखा कि तुम्हारा बेटा फिर गिरफ्तार हो गया है। क्योंकि वह जानते थे कि इस समाचार से राजू की बुड्ढी मां को व्यर्थ ही दुःख होगा और वह उपाय तो कुछ कर नहीं सकेगी।

राजू की मां किसी व्यक्ति से लिखवाकर, जब जोधपुर चिट्ठी भिजवाती तो सेठजी ही राजू की ओर से उसे चिट्ठी का उत्तर भिजवा देते थे। चिट्ठी कुछ इस तरह लिखी जाती थी, जैसे वह स्वयम राजू ने ही लिखी हो। जब कभी मां उसको एक बार गंगानगर आकर, मिलने के लिए लिखवाती तो उसे झूठा आश्वासन लिखकर भेज दिया जाता। पत्रों में लिखा जाता—"फिलहाल काम बहुत है या सीजन चल रहा है या मैं किसी जरूरी काम से बाहर जा रहा हूं और अगले महिने तक आ सकूंगा।" महिने के बाद महिना आता और चला जाता, लेकिन राजू कभी अपनी मां पास पहुंचता नहीं।

मां मन ही मन में सोचती—राजू अब बदल गया है। उसके पास बहुत पैसे हो गये हैं और उसका दिमाग फिर गया है। वह मां की ममता को भूल गया है। कभी कभी मां सोचती—वह अब जवान हो गया है। किसी स्त्री के जाल में फंस गया होगा। वह जानती है कि कोई भी बेटा जवान होने और किसी स्त्री के चक्कर में आजाने के बाद मां बाप को भूल सकता है। उनकी अवलेहना कर सकता है। मां को कभी कभी इस बात

पर बहुत दुःख होता कि उसने एक ही पुत्र को जन्म दिया। यदि उसको और भी कई बेटे-बेटियाँ होती तो आज उसे राजू के इस व्यवहार से इतना दुःख नहीं होता।

कभी-कभी उसकी यह इच्छा होती कि हर महिने आने वाले पचास रुपल्ली के मनीआर्डर को वह लौटा दे, और भूख से झगड़ा करते हुए प्राणों का त्याग दे। वह विचार करती कि राजू की मनोवृत्ति इतनी कैसे बदल गई। केवल मात्र पचास रुपये भेजकर वह अपना कर्तव्य की इतिश्री समझ लेता है। क्या मैं कोई किराये की कोठरी हूं जिसमें उसने कभी नौ महिने तक निवास किया था और अब उसका बकाया किराया चुका रहा है।

मैंने किस तरह मेहनत मजदूरी करके बड़ी कठिनाई के साथ, खुद भूखे रहकर उसका पालन पोषण किया था, उसे पढ़ाया लिखाया था। कितनी उम्मीदें थीं, कितने सपने थे? सब के सब चकनाचूर हो गये हैं। वह अपने भाग्य को कोसती और बड़बड़ाती—"मुझे पहले यह पता होता कि राजू इतना नालायक निकलेगा तो मैं पैदा होते ही उसका गला घोंट देती।"

राजू की मां पहले सोचा करती थी कि लड़का जब पढ़ लिख कर सयाना हो जायेगा तो खूब कमायेगा और बाद में उसकी शादी हो जायगी, एक सुन्दर सी बहू आयेगी, पानी पीते होंगे। और मैं स्वर्ग का सा सुख भोगूंगी। लड़का मुझे एक दिन के लिए भी अलग नहीं करेगा। मां दिन भर यही विचार करती रहती। रात में अचानक वह नींद से जाग उठती और फिर इन्हीं विचारों में खो जाती। कभी-कभी अपने पुत्र की निर्ममता और निर्दयता पर सोचते-सोचते उसके अन्तर की पीड़ा आंखों की राह से बह निकलती।

मां के दुःख की सीमा नहीं रहती और वह जोर-जोर से रोने लगती। निरन्तर रोने धोने और दुःख करते रहने से उसकी आंखों की रोशनी बहुत क्षीण हो गई थी, उसे प्रतीत होता था कि मैं शीघ्र ही अन्धी हो जाऊंगी। अन्धेपन की आशंका मात्र से वह कांप उठती। सोचती—तब कौन घर का काम-काज करेगा, कौन रोटियां बनायेगा?

अब भी उसे कुए से पानी लाने मे बडी दिक्कत होती थी। रास्ते म कभी वह किसी पत्थर से टकरा जाती, कभी कोई पशु रास्ते मे आ जाता, तो उसे दिखाई नही देता। एक दिन वह किसी पत्थर से टकरा कर गिर पडी थी, पानी से भरा हुआ घडा फूट गया था। एक दिन सुबह जब वह मदिर जा रही थी तो रास्ते मे खडी एक गाय से जा भिडी और गाय ने उसके बुढढे शरीर पर सीग से दो चार चोटें मार दी थी। कई दिनो तक घी और हल्दी से भिगोकर रुई की पट्टी बाधने से वे घाव ठीक हुए थे।

जवानी मे उसने शरीर तोड कर कडी मेहनत की थी, इसलिए अब बुढापे मे उसका अग-अग दुखता था। दुखत हुए अगो को दबाने वाला कोई नही था। कल्पना तो यह थी कि बुढापा आने तक बेटे की बहू आ जायेगी और वह रात मे देर तक, बेटे के साथ सोने से पहले दुखत हुए शरीर को दबाएगी और तब मुझे सुख तथा सतोष के साथ नीद आ जायेगी। लेकिन अब वह अनुभव कर रही थी कि सभी कल्पनायें कपोल कल्पित होकर रह गई हैं।

रोटिया बनाने मे भी उसे अब बडी कठिनाई होती थी। कोई रोटी जल जाती तो कोई कच्ची ही रह जाती। स्मरण शक्ति कमजोर हो जाने से कभी वह दाल मे नमक डालना भूल जाती कभी मिर्च डालना। कभी उसे लाख सर पटकने पर भी माचिस नही मिलती। कभी लकडिया तोडते समय उसकी सलवटो वाली बुढ्ढी और गीली चमडी मे कोई काटा या लकडी का टुकडा फस जाता। इन्ही सब कारणो से वह बहुत दु खी हो रही थी और जब दु ख असह्य हो गया तो वह एक दिन रेल म बठ कर जोधपुर पहुच गई।

एक बार वह अपने बटे से झगडा करना चाहती थी। उसे अपने कष्ट-मय जीवन की गाथा सुनाना चाहती ... सुनाकर ... हल्का करना चाहती थी। उसे उपा- ... । लेकिन ... पूछने-पाछने सेठ मालचन्द की ... उसका बेटा तो गत छह माह से ... पर हत्या का मुकद्दमा चल रहा है ... रही। ... कष्टो को भूल ...

कर, व्याकुल हो गई। पागल हो गई। उससे यह आघात सहन नहीं हुआ और आखिर उसने जोधपुर में उस सेठ के घर ही अपनी इह लीला समाप्त कर दी।

अब भी उसे कुए से पानी लाने म बडी दिक्कत होती थी। रास्ते म कभी वह किसी पत्थर से टकरा जाती, कभी कोई पशु रास्ते म आ जाता, तो उसे दिखाई नही देता। एक दिन वह किसी पत्थर से टकरा कर गिर पडी थी, पानी से भरा हुआ घडा फूट गया था। एक दिन सुबह जब वह मदिर जा रही थी तो रास्ते म खडी एक गाय से जा भिडी और गाय ने उसके बुड्ढे शरीर पर सींग से दो चार चोटें मार दी थी। कई दिनों तक घी और हल्दी से भिगोकर रुई की पट्टी बाधने से वे घाव ठीक हुए थे।

जवानी म उसने शरीर तोड कर बडी मेहनत की थी, इसलिए अब बुढापे म उसका अग-अग दुखता था। दुखते हुए अगों को दबाने वाला कोई नहीं था। कल्पना तो यह थी कि बुढापा आने तक बेटे की बहू आ जायेगी और वह रात म देर तक, बेटे के साथ सोने से पहले दुखते हुए शरीर को दबाएगी और तब मुझे सुख तथा सन्तोष के साथ नींद आ जायेगी। लेकिन अब वह अनुभव कर रही थी कि सभी कल्पनायें कपोल कल्पित होकर रह गई हैं।

रोटियां बनाने मे भी उसे अब बडी कठिनाई होती थी। कोई रोटी जल जाती तो कोई कच्ची ही रह जाती। स्मरण शक्ति कमजोर हो जाने से कभी वह दाल मे नमक डालना भूल जाती, कभी मिर्च डालना। कभी उसे लाख सर पटकने पर भी माचिस नही मिलती। कभी लकडिया तोडते समय उसकी सलवटो वाली बुड्ढी और गीली चमडी म कोई काटा या लकडी का टुकडा फस जाता। इन्ही सब कारणो से वह बहुत दुखी हो रही थी और जब दुख असह्य हो गया तो वह एक दिन रेल मे बैठकर जोधपुर पहुच गई।

एक बार वह अपने बेटे से झगडा करना चाहती थी। उसे अपने कष्ट-मय जीवन की गाथा सुनाना चाहती थी। खरी खोटी सुनाकर मन को हल्का करना चाहती थी। उसे उपालम्भ देना चाहती। लेकिन जब वह पूछते-पाछते सेठ लालचन्द की हवेली पहुची और उसे ज्ञात हुआ कि उसका बेटा तो गत छह माह से बम्बई की किसी हवालात मे है तथा उस पर हत्या का मुकद्दमा चल रहा है तब तो उसके दुख की सीमा ही नही रही। वह स्वय के कष्टो को भूल गई और बेटे के कष्टों की कल्पना

कर, व्याकुल हो गई। पागल हो गई। उससे यह आघात सहन नहीं हुआ और आखिर उसने जोधपुर में उस सेठ के घर ही अपनी इह लीला समाप्त कर दी।

17

राजू महिने दो महिने की अवधि के बाद अदालत मे पेश होता। उसके वकील पैरवी करते। पुलिस की ओर से हत्या का आरोप सिद्ध करने के लिए चेष्टा की जाती। दलीलें दी जाती। कल्पित और मिथ्या मनगढ़ंत तथ्य तक दिये जाते और इस प्रकार करीब एक साल का समय व्यतीत हो गया। आखिर उस अदालत ने राजू को आजीवन कारावास सजा सुना दी। वकीलो का परिश्रम काई काम नही आया। सेठजी द्वारा खर्च किये गये धन का कोई परिणाम नही निकला, मजिस्ट्रेट की दृष्टि मे अपराध प्रमाणित हो चुका था और उसके द्वारा सुनाये गये निर्णय के अनुसार हत्या के लिए राजू ही दोषी था, राजू ही हत्यारा था।

राजू को किस्मत के फेर और ग्रहो की कुदृष्टि के कारण एक बार फिर जेल मे बन्द कर दिया गया। राजू अब बम्बई की एक जेल मे था। इस जेल मे गंगानगर की जेल की तरह न तो कोई सहृदय जेल अधीक्षक था, न पढने के लिए पद्मा जैसी कोई जीवित पुस्तक। इस जेल मे राजू से कठोर परिश्रम करवाया जाता था, उसे चक्की चलाने और एक ही बैठक मे दस दस सेर अनाज पीसने के लिए बाध्य किया जाता था।

खड्डे खुदवाये जाते और फिर उन खड्डो को रेत से भरवाने के लिए कहा जाता। सुबह शाम उसको निरन्तर दौडने के लिए कहा जाता। एक मैदान मे, जो कि जेल के भीतर ही था। वह घण्टो एक ही रफ्तार मे

दौड़ता। रफ्तार धीमी होने के साथ ही उसकी पीठ पर कोड़े बरस जाते और वह चीख पड़ता। राजू घोर नारकीय और कष्टप्रद जीवन जी रहा था। खाने के नाम पर उसे दो वक्त रूखी सूखी चार-चार रोटियां मिलतीं। उनमें भी कोई जली हुई होती तो कोई बिलकुल कच्ची। दाल के नाम पर नमक मिर्च मिला गर्म पानी होता था और उसमें होते थे दाल के दो-चार दाने। कड़ी मेहनत करने के कारण उसकी भूख बेहद बढ़ गई थी। वह सदैव अपने आपको भूखा ही महसूस करता था। जब कभी राजू के मन में यह विचार आता कि इसी तरह बीस वर्ष की लम्बी अवधि व्यतीत करनी है तो वह बहुत दुखी और उदास हो जाता। उसका आने वाला समय बहुत ही लम्बा और कठोर प्रतीत होता।

जेल जीवन का एक एक क्षण उसे भारी प्रतीत होता था और उस भारीपन से उसका दम घुटता था। वह इस जीवन से मौत को बेहतर समझने लगा। और किसी तरह से आत्महत्या करने की सोचता। लेकिन उसे आत्महत्या करने के लिए भी कोई उपयुक्त उपाय दिखाई नहीं दे रहा था।

इधर गिरधर बाबू ने उस न्यायालय द्वारा राजू के विरुद्ध सुनाए गये निर्णय की जानकारी मिलते ही पुराने वकीलों के साथ दो और प्रतिष्ठित बैरिस्टरों को खड़ा कर, उच्च न्यायालय में अपील दायर करवा दी। राजू को उच्च न्यायालय में भी दो वर्ष तक लगातार पेशियां भुगतनी पड़ीं। सेठ लालचन्द को हजारों रुपये खर्च करने पड़े। इस बार राजू की पैरवी के लिए जिन बैरिस्टरों को खड़ा किया गया था, उनमें से एक ने उच्च न्यायालय के समक्ष यह प्रश्न उठाया कि क्या उस छुरे पर लगे हुए हाथ के निशान की वैज्ञानिक और तकनीकी जांच करवा ली गई है, जिनके फोटो आज भी पुलिस के पास विद्यमान हैं। अन्ततः हाथ के निशान की जांच विशेषज्ञों से करवाई गई। विशेषज्ञों की राय में वे निशान राजू के हाथ के नहीं थे। इसलिए राजू को संदेह की स्थिति का लाभ मिल गया। आखिर उच्च न्यायालय की दृष्टि में राजू पर लगाया गया हत्या का वह आरोप सिद्ध नहीं हुआ और उच्च न्यायालय ने राजू के पक्ष में निर्णय सुना दिया और राजू मुक्त हो गया।

18

राजू जब बम्बई से वापस लौट कर जोधपुर आया तो उसे विदित हुआ कि उसकी मा मर चुकी है। राजू को मा की मृत्यु से भयकर वेदना हुई। उसे इस बात का बेहद दुख था कि वह मा का ऋण नही चुका सका, मा की सेवा नहीं कर सका। वह इस बात को स्मरण कर, बहुत व्यथित होता कि उसकी मा ने बडी बडी आशाए लगाकर, सुदर सुदर सपने सजोकर मेरा पालन-पोषण किया था, मुझे पढाने के लिए, मेरे स्कूल की फीस जमा करवाने के लिए वह कई कई दिनो तक बिना किसी को कुछ कहे भूखे पेट सो जाती थी। और मैं अभागा उसके लिए कुछ भी नही कर सका।

दरअसल जब से राजू कमाने-खाने लायक हुआ है, तभी से राहू केतू और शनि उसके पीछे हाथ धोकर पडे हैं। वह शांति से कब कमा सका? वह सोचता अगर मैं शांतिपूर्ण जीवन जीता और परिस्थितिया अनुकूल रहती तो अवश्य ही मा की सेवा करता, उसे सुख पहुचाता। वह प्राय स्वत ही बोल उठता—"काश! मैं भी अपनी मां के किसी काम आता।"

उसे मा का ऋण न चुकाने की बात को लेकर बेहद पीडा होती थी। उसकी मन स्थिति उखड चुकी थी। ससार के प्रति उसके मन में एक गहरी विरक्तिपूर्ण भावना उदित हो गई थी। वह सोचता—अब मैं किस

के लिए काम करू ? किसके लिए कमाऊ और धन जोड़ ? कभी कभी वह ऐसा भी सोचता कि निकट भविष्य मे मेरे ऊपर फिर कोई मिथ्या आरोप लगने वाला है। मैं फिर जेल जाने वाला हू। उसके मन मे एक ऐसी आशका उत्पन्न हो गई थी, जिसके कारण वह रात दिन भयभीत रहता था। उदास उदास और खिन्न। समाज, सरकार और न्याय के प्रति उसके मन मे कोई आदर अथवा निष्ठा नही रह गई थी। कोई आस्था शेष नही रह गई थी।

वह समाज के हर व्यक्ति को सन्देह और शका की दृष्टि से देखता था, लेकिन जब कभी वह सेठ लालचन्द और उसके परिवार की ओर देखता तो फिर उसके मन मे एक आस्था बनती। वह सोचता, सेठ के परिवार ने मेरी कितनी सहायता की है। आखिर इन लोगो के साथ मेरा कौन सा नाता रिश्ता था ? आखिर मैं इनके यहा अदना सा एक नौकर ही तो था। इन्होने मेरे को जेल से छुडाने के लिए इतना खच क्यो किया ? अगर यह चाहते तो मुझे भगवान भरोसे भी छोड सकते थे। मेरा यदि पूरा जीवन भी जेल म व्यतीत हो जाता तो इन्हे क्या हानि हो सकती थी। वह सेठ और उसके परिवार की उदारता के बारे म सोचने लगता तो सोचता ही रहता।

कभी कभी इसी प्रसग मे वह खन्ना साहब को भी याद कर लेता। उसकी दृष्टि म खन्ना साहब भी एक परोपकारी जीव थे। कभी-कभी उसे गगानगर की जेल वाले सरदारजी और वह पथा भी याद आ जाती। बम्बई की जेल से छूट कर आने के बाद वह बहुत ही गम्भीर तथा विचारो म खोया हुआ रहता था। सेठजी उसकी मन स्थिति को जानते थे और इसीलिए काम काज के लिए विशेष दबाव नही देते थे।

कभी कभी वह सेठजी से पूछता—"मेरी मुकद्मेबाजी मे आपका कुल कितना खच हो गया।" सेठजी एक ही जवाब देते—"मुझे पता नही।" वह कभी कभी गिरधर बाबू और उनके भाइयो से भी यही प्रश्न करता, लेकिन कभी किसी ने उसको आकडे बताए नही, जसे राजू पर उन्होने कुछ भी खच नही किया। असल मे सेठ ने जो कुछ भी खच किया वह मानवीय भावनाओ से, अपने एक कर्तव्य से प्रेरित होकर ही खच किया

था। वह इस खर्च के बदले में कोई अपेक्षा नहीं रखते थे। और इसीलिए वे राजू को आंकड़े बताने की आवश्यकता भी नहीं समझते थे।

आखिर राजू को किसी मुनीम के जरिए इस बात का पता चल गया कि बम्बई जाने और वहां से लौटने की तिथि तक सेठजी के कुल तीस हजार रुपये खर्च हुए हैं। और बीस हजार तो बम्बई जाते समय वह स्वयं ले गया था। इस प्रकार वह अपने-आपको पचास हजार का कर्जदार समझने लगा। वह अपने मन से सेठ लालचन्द का ऋणी था। अब वह मन ही मन विचार करने लगा कि किसी भी तरह सेठ से उऋण होना चाहिए।

ऋण मुक्त होने के उद्देश्य से वह पुनः उस कपड़े की दुकान पर बैठने लगा। धीरे धीरे उसकी मन स्थिति में सुधार होता गया। समय के साथ मां की मृत्यु और जेल जीवन के घाव भरने लगे। वह अपने आपको सभाल लेने में सफल हो गया। सेठ ने अब उसका वेतन भी दो सौ रुपये मासिक कर दिया था। रोटी तो वह पहले दिन से ही सेठ के यहां खाता था, आवश्यक कपड़े भी उसे वहां से मिल जाते थे। उसकी अतिरिक्त कोई आवश्यकता नहीं थी। वह अपने वेतन में से केवल पांच पच्चीस रुपये ही उठाता, बाकी रकम सेठ के यहां जमा करवा देता। लेकिन जब वह सोचता कि इस तरह वेतन जमा करवा देने से तो पचास हजार के ऋण से वह आजीवन उऋण नहीं होगा। और इसी प्रसंग में सोचता सोचता वह फिर स्वतंत्र व्यवसाय करने की सोच लेता। वह जानता था कि व्यापार अपार है, उसमें यदि गाड़ी चल पड़े तो ऋण भी चुकाया जा सकता है और भविष्य के लिए कुछ राशि जमा की जा सकती है।

एक दिन स्वयं राजू ने ही सेठ का मूड देखकर एकान्त में कहा—'आप मेरे लिए अलग कपड़े की दुकान करवाने वाले थे?' "लेकिन वह समय तो चला गया।" सेठ ने कहा—'अब कपड़े का व्यापार मन्दा पड़ता जा रहा है, पहले इस व्यापार में जो कमाई थी, अब नहीं रही। तुम अपनी दुकान का हाल देख ही रहे हो, पहले जहां तीन हजार की बिक्री रोज होती थी, अब हजार-बारह सौ भी नहीं बटते।

सेठ ने कुछ रुककर कहा—"शहर में कपड़े की दुकानें भी बहुत हो

गई हैं।"

राजू ने कुछ सोचते हुए कहा—"और कोई व्यापार शुरू करवा दीजिए।"

"तुम अलग कोई व्यापार करना चाहते हो?"

"अलग तो मैं आप से सात जन्म में भी नहीं होऊंगा।" राजू ने कहा—"व्यापार करने की इच्छा जरूर रखता हूं। नौकरी आखिर नौकरी है।"

"ठीक है।" सेठ ने कहा—"तुम मुझे कोई स्कीम दो, मैं उस पर विचार करूंगा। माथे में बात बैठ गई तो रकम की व्यवस्था भी कर दूंगा।"

राजू सेठजी से रकम का आश्वासन प्राप्त कर आश्वस्त हो गया। वह अब किसी नई व्यापार योजना को ढूंढने लगा। उसने यह तय कर लिया था कि नौकरी नहीं, व्यापार ही करूंगा।

19

राजस्थान सरकार ने देश प्रदेश के प्राय सभी छोटे बड़े समाचार-पत्रो मे एक विज्ञापन प्रकाशित करवाया था—"राजस्थान मे उद्योग लगाइए और विशेष सुविधाए प्राप्त कीजिए।" सयोग से राजू का ध्यान एक समाचार-पत्र पढते समय ऐसे किसी विज्ञापन की ओर चला गया। उस विज्ञापन मे लिखा था कि राज्य का द्रुत गति से औद्योगीकरण करने के लिए सरकार उद्योगपतियो को कई तरह की छूट दे रही है। सस्ते मूल्य अथवा लीज पर भूमि, सस्ती बिजली, मशीनें और अन्य उपकरण मगवाने के लिए विदेशी मुद्रा की छूट और आयात की सुविधा, कच्चे माल के लिए लाइसेंस, उत्पादित माल की बिक्री म सहयोग, चुगी तथा आयकरो मे अतिरिक्त छूट, आवश्यक ऋण सुविधाए और निशुल्क तकनीकी तथा व्यवस्था एव प्रशासनिक सम्बन्धी सलाह।

उस विज्ञापन मे यह भी लिखा था—इस सम्बन्ध मे जिला उद्योग अधिकारी से सम्पर्क स्थापित कर, विस्तृत जानकारी ली जा सकती है। विज्ञापन मे यह भी दर्शाया गया था कि किन किन स्थानो मे उद्योगपतियो को प्राथमिकता दी जायेगी। प्राथमिकता वाले स्थानो मे अन्य कई स्थानो के साथ ही जोधपुर का नाम भी अंकित था। विज्ञापन को भली भाति पढ लेने के बाद, राजू के मन मे कोई उद्योग स्थापित करने का विचार

आया। उसने वह अखबार एक फाइल में लगा लिया और तब जिला उद्योग अधिकारी से सम्पर्क स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

वह अगले दिन जिला उद्योग अधिकारी के कार्यालय में पहुंचा। जिला उद्योग अधिकारी के पद पर जोधपुर का ही कोई कृष्ण बिहारी माथुर नया-नया नियुक्त हुआ था। वह अधिकारी नवयुवक ही था, और अभी-अभी आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त कर, इस पद पर आया था, यह कार्यालय और पद भी नया ही था तथा वह अधिकारी भी नया-नया।

नव युवक अधिकारी के मन में अपने शहर जोधपुर की प्रगति और उसके औद्योगीकरण के प्रति गहरी दिलचस्पी थी। वह राज्य सरकार के उद्योग विभाग को अपनी कार्यकुशलता और कार्य की प्रगति का प्रमाण भी देना चाहता था। इसलिए उद्योग स्थापित करने की इच्छा से जो कोई व्यक्ति उसके निकट आता, उससे वह भद्रता के साथ पेश आता, अच्छा व्यवहार करता और सम्भावित उद्योगों के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा करता तथा हर तरह से आगन्तुक व्यक्ति को प्रभावित तथा प्रेरित करता।

उसकी एकमात्र इच्छा यही थी कि अधिकाधिक संख्या में उद्योगपति आकर्षित हों तथा नगर में नये नये उद्योग स्थापित करें। वह जानता था कि नये-नये उद्योग स्थापित होने से शिक्षित या अशिक्षित लोगों को रोजगार मिलेगा और कुछ अंशों में बेकारी की समस्या का समाधान होगा। बेकारी की पीड़ा से वह स्वयं परिचित था। इस पद पर आने से पूर्व वह स्वयं बेरोजगार ही था। बी० एस-सी० करने के बाद, वह तीन वर्ष तक लगातार बेकार बना शहर की सड़कों को तोड़ता रहा है।

कई बार जयपुर गया है। मंत्रियों सचिवों और अधिकारियों के तलुए चाटे हैं, सड़कों पर धूल फांकी है और भूखा-प्यासा रहा है। वह जानता है कि बेकारी की पीड़ा कितनी हृदयविदारक होती है। इसीलिए वह इस समस्या का समाधान करने में यथाशक्ति योगदान देना चाहता है। वह समझता है कि इस समस्या का समाधान औद्योगीकरण में निहित है और यही सोचकर वह उद्योगपतियों को प्रोत्साहन देता है।

राजू जब पहले-पहल नवयुवक उद्योग अधिकारी से उसके कार्यालय में मिला तो उसने दो घंटे का समय दिया। और इन दो घंटों में कई उद्योगों

पर विस्तार से प्रकाश डाला। उद्योग अधिकारी ने राजू को सलाह दी कि यदि आप बीस हजार रुपये तक की व्यवस्था कर लें तो एक लाख रुपया आपको सरकार से उधार मिल सकता है और सवा लाख मे लोहे का एक कारखाना खडा हो सकता है।

उसने बताया कि जोधपुर तथा देश के अन्य बाजारों म लोहे के सामान की विशेषत खिडकिया, दरवाजा और जालिया की बेहद माग है। फावडे, गेन्ती, हथौडे और लोहे के बन बतन भाडे भी खप सकते हैं। उस अधिकारी ने यह भी बताया कि सरकार कच्चा लोहा उपलब्ध करवाने म सहायता करती है और लाइसेंस देने म कोई विलम्ब नही करती।

अधिकारी ने एक रहस्य की बात भी समझाइ। उसने कहा—"आप अगर कच्चे लोहे का अच्छा-खासा कोटा मजूर करवा लेते हैं और उत्पादन पर्याप्त मात्रा मे नही होता तो उस कच्चे लोहे को भी बाजार म आसानी से बेचा जा सकता है और एक टन माल पर छह सौ से आठ सौ रुपये तक बिना किसी परिश्रम और माथा पच्ची के कमा सकते हैं।' उसने कहा—"बडी फायदे की स्कीम है आप आज ही एप्लीकेशन पेश कर दें। मैं कल की डाक से जयपुर भेज दूगा। और वहा से आदेश आने पर स्टीमेट बनाकर तत्काल भेज दूगा। मुझे उम्मीद है कि चार छह महीने म धन्धा शुरू हो सकता है।

राजू के दिल दिमाग पर उद्योग अधिकारी की बात ने प्रभाव जमाया, वह सहमत हो गया और कहने लगा— आज रात मे मैं अपने सेठ स रकम के बारे मे फाइनल बात कर लूगा और कल सुबह आपको एप्लीकेशन दे जाऊगा।'

राजू वहा से कपडे की दुकान पर आया और रात मे सेठ लालचन्द से बातचीत के दौरान सारी वस्तुस्थिति कह सुनाई। सेठ को भी धन्धा लाभ का प्रतीत हुआ और उसने जब चाहे बक से बीस हजार रुपये उठाने की स्वीकृति प्रदान कर दी। सेठ न इस प्रस्तावित उद्योग मे अपना हिस्सा रखने की बात भी खुलासा कर ली। सेठ ने कहा—"गिरधर बाबू के नाम चार आना हिस्सा पत्ती रखोगे ?"

राजू ने कहा—"मुझे कोई आपत्ति नही।" रकम पर ब्याज आदि की

बात भी स्पष्ट की गई और अंततः राजू आश्वस्त हो गया।

अगले दिन बारह बजे राजू पुनः उद्योग अधिकारी से मिला और उसने 'राज इंडस्ट्री' के नाम से एक आवेदन पत्र प्रस्तुत कर दिया। वह उद्योग अधिकारी से समुचित सहयोग का वचन लेकर चला आया।

20

सप्ताह भर बाद राजू को दुकान के पते पर डाक से आई एक चिट्ठी मिली। चिट्ठी राजू के नाम की थी और प्रेषित करने वाला था, जिला उद्योग अधिकारी। उस चिट्ठी म यह निर्देश था कि आवेदन कार्यालय के समय म तीन दिन की अवधि म आकर उद्योग अधिकारी से मिलें और राज इन्डस्ट्री की रूपरेखा तथा आगामी कार्यवाही के बारे म विचार-विमर्श करें।

राजू की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं था। वह भागता हुआ, उसी दिन जाकर, उद्योग दाधिकारी से मिला। बैठते ही उद्योग अधिकारी ने राजू को बधाई दी और कहा कि "राज्य सरकार ने आपके प्रार्थना पत्र पर स्वीकृति दे दी है। आप तत्काल किसी बैंक मे और हो सके तो स्टेट बैंक म राज इन्डस्ट्री के नाम का खाता खोल लें और बीस हजार रुपये जमा करवा दें।"

अधिकारी ने कहा—"मैं दो-चार दिन मे स्टीमेट बनाकर उद्योग मत्रालय को भेज दूगा।' उसने सलाह दी, "आप पाच सात दिनो के लिए जयपुर चले जाइए और वहा डिप्टी सेक्रेट्री जेलदार सिंह से मिलिए। आप उसके सामन मेरा नाम लेंगे तो वह आपकी सहायता अवश्य करेगा। वह मेरा अच्छा मित्र है। बस, एक ही ऐब है, शराब बहुत पीता है। आप उसके शौक के लिए सौ-दो-सौ रुपये खर्च कर देंगे तो काम बहुत जल्दी हो जायेगा।"

राजू ने कहा—"आप जब भी कहेंगे, मैं जयपुर चला जाऊंगा। और दो-चार सौ रुपये खर्च करने में भी मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। आखिर लाखों रुपयों की स्कीम है। पार पड जाये तो आपका हमारा सबका बेडा पार समझिए।"

राजू ने प्रसन्न होकर ऑफिस में चाय और नाश्ता मंगवाया तथा अधिकारी के साथ खा पी लेने के बाद, वह वहा से निश्चिन्त हो चला गया। उसी दिन उसने स्टेट बैंक में राज इन्डस्ट्री के नाम खाता खोला और सेठ से चैक लेकर किसी अन्य बैंक से रुपये लेकर, जमा करवा दिये। इधर अधिकारी ने भी बड़ी तत्परता दिखाई और दूसरे ही दिन स्टीमेट बनाकर, डाक से भेज दिया तथा राजू को चपरासी के साथ संदेश भेज दिया और जल्दी जयपुर पहुंचने को कहलवा दिया।

राजू सन्ध्या समय, उद्योग अधिकारी से उसके घर पर मिला। और रात की गाडी से जयपुर के लिए रवाना हो गया। अगले दिन करीब एक बजे वह सचिवालय में उद्योग विभाग के डिप्टी सेक्रेट्री सरदार जैलदार सिंह से उसके कमरे में मिल सका। उसने अपने जिला उद्योग अधिकारी माथुर की चर्चा की और कहा—"राज इन्डस्ट्री का स्टीमेट आपके पास आया हुआ है। यदि आपकी कृपा हो तो आगामी कार्यवाही शीघ्र हो सकती है।

डिप्टी सेक्रेट्री ने घण्टी बजाकर चपरासी को बुलवाया और कहा—"रहमान बाबू को भेजो।" दो ही मिनट बाद रहमान आया, जिसके पास स्टीमेट के कागज रहते हैं। डिप्टी साहब ने कहा—"इन्ही दिनों में जोधपुर से राज इन्डस्ट्री का स्टीमेट आया है, आप उसकी फाइल ले आइए।" रहमान गया और तत्काल एक फाइल ले आया। हल्के गुलाबी रंग की एक फाइल, जिस पर काली स्याही से अंग्रेजी में मोटे मोटे अक्षर लिखे हुए थे—राज इन्डस्ट्रीज। साहब ने फाइल देखी, मूल प्रार्थना पत्र पढ़ा, स्टीमेट के कागज पर नजर दौडाई और वह फाइल वापस रहमान बाबू को दे दी। बाबू वापस अपने कमरे में चला गया—तब डिप्टी साहब ने कहा—"आप शाम को मेरे घर आयें, वहां तसल्ली से बैठकर इस बारे में खुलासा बात करेंगे।"

राजू ने कहा—"अच्छी बात है, आप अपने घर का पता बता दीजिए, मैं शाम को वहां पहुंच जाऊंगा।"

डिप्टी साहब ने कहा—"प्लाट नम्बर 10, कमला मार्ग, सी० स्कीम।"

राजू ने पता नोट किया और 'धन्यवाद' कहकर चला गया। शाम को उसने बाजार से विलायती शराब की एक बोतल खरीदी। कीमती शराब। एक ही बोतल के बत्तीस रुपये, पन्द्रह आने देने पड़े। और बोतल भी नाम की बोतल थी। मुश्किल से ढाई छटाक शराब होगी। राजू ने कुछ फल और मेवे भी खरीदे और रिक्शा लेकर, ठीक सात बजे वह डिप्टी साहब की कोठी पर पहुंच गया।

साहब बाहर ही लान में खड़े थे, जैसे उन्हें किसी नए शिकार की खोज थी, भूख थी। राजू को देखते ही बोले—"आइए मिस्टर वर्मा, मैं आप ही की प्रतीक्षा कर रहा था।" और वे दोनों एक कमरे में चले गये। राजू ने वह उपहार भेंट किया तो साहब जोर से हँस पड़े।

बिना किसी तकल्लुफ के उन्होंने वह भेंट स्वीकार की, अपने अभ्यस्त हाथों से बोतल की सील तोड़ी और बोतल को मुंह से लगाकर एक घूट पी ली। फिर वे भीतर गये और एक ग्लास में थोड़ी सी बर्फ डाल लाये। बोतल उन्होंने ग्लास में उंडेली और एक एक घूंट पीने के बाद फिर कहने लगे—'आपको कैसे पता चला कि मैं पीता हूं।'

"माथुर साहब ने बता दिया था। राजू ने जवाब दिया।

"साला, बदमाश।" साहब ने शरारतपूर्ण हँसी हँसते हुए कहा—प्रचार कर रहा है।

फिर एक घूट खींचते हुए उन्होंने पूछा—"आप कितना कर्ज चाहते हैं?"

"अधिक से अधिक कितना मिल सकता है?"

'बैंक में कितने रुपये हैं?"

'बीस हजार।'

"तब तो एक लाख तक की स्वीकृति मिल सकती है।'

"एक लाख ही दिलवाइए साहब।" राजू ने कहा—"नया नया काम

है, जितना अधिक रुपया होगा, कामयाबी भी उतनी ही करीब होगी।"

राजू देख रहा था और साहब उसके द्वारा खरीदे हुए मेवा पर हाथ मार रहे थे। उनका मुह बराबर चल रहा था। मुह के साथ ही उनका दिमाग भी चल रहा था। वे सोच रहे थे, आदमी काफी समझदार लगता है। इसकी हैल्प करेंगे तो यह अपनी सेवा भी करेगा। उन्होने कुछ क्षण मौन के बाद कहा—"मैं ट्राई करूगा।"

"मैं आपके हक का खयाल रखूगा, साहब।"

"आप खयाल रखेंगे तो भूलेंगे हम भी नही।" साहब ने कहा और फिर जोर से हँस दिये। अब तक उनका ग्लास खाली हो चुका था। वे मेवे खाकर ही सतोष कर रहे थे। राजू को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उनको पीने से पूरी तसल्ली नही हुई है और प्यास अभी तक लगी हुई है।

"मैं आपसे कल सचिवालय मे मिलू ?"

"कल मिलने की आवश्यकता नही, आप जोधपुर जा सकते है। आपका काम हो जाय तो फिर यहा आकर मिल लेना और जो भी आप से बन पडे, सेवा कर देना।"

"जरूर" राजू ने वायदा किया और साहब को 'कष्ट के लिए क्षमा' कहकर, वह उठ खडा हुआ।

राजू जब कोठी से बाहर जाने लगा तो उसकी नजर भीतर आगन मे पडी। उसने दरवाजे के पास आते-आते मुडकर देखा था। भीतर एक युवती खडी थी, गम्भीर और उदास उदास। उसको देखकर, राजू ने एक बार तो वापस कमरे म जाकर, साहब से उस युवती के बारे म पूछने की सोची। फिर उसे खयाल आया कि साहब की पत्नी ही होगी। उसके बारे म कुछ पूछेंगे तो साहब नाराज भी हो सकता है। दारू पीया हुआ आदमी और किसी कुर्सी पर बैठे हुए अफसर का कोई भरोसा नही। गले पड सकता है। मुफ्त मे आफत आ सकती है। मुफ्त की आफत की आशका ने उसके विचार बदल दिये और वह बाहर खडे रिक्शे पर जा बैठा। उस युवती मे राजू को पद्मा की छवि दिखाई दी थी। लेकिन तत्काल ही उसने सोचा—अब पद्मा कहा ? उसके तो सपने ही आयेंगे।

21

अब तक राज इन्डस्ट्री के लिए राज्य सरकार की ओर से 90 साल की लीज पर भूमि आवंटित हो चुकी थी और उस विशाल भूखंड पर कारखाने का एक विशाल और भव्य भवन बनकर तयार हो चुका था। विदेशों से भारी भरकम यन्त्र आकर उस भवन मे यथास्थान लगाये जा चुके थे, और लोहा गलाने के लिए कई भट्ठिया बना दी गई थी।

कच्चे माल का कोटा तय होकर, माल की पहली किश्त कारखाने की गोदाम मे पहुच चुकी थी। कुशल कारीगरो और मजदूरो का चयन किया जा चुका था। कार्यालय के लिए एक प्रशिक्षित व्यवस्थापक और कर्मचारियो की नियुक्ति हो चुकी थी।

आज रामनवमी का दिन है और राज इन्डस्ट्री का विधिवत उदघाटन होने वाला है। राज्य के एक मन्त्रीजी कारखाने का उद्घाटन करने के लिए आये हुए हैं। दिन के दस बजे नगर के उद्योगपति, व्यापारी, नेता, कार्यकर्ता, पत्रकार और विभिन्न वर्गों के चुने हुए प्रतिष्ठित नागरिक कारखाने के प्रागण मे विशेष तौर स बने हुए पण्डाल के भीतर आकर बैठ गये। मच पर कई व्यक्ति बैठे हैं, जिनमे एक सेठ लालचन्द भी हैं।

ठीक सवा दस बजे मन्त्रीजी की कार राज इन्डस्ट्री के भीतर आकर, पण्डाल के निकट रुकी, मन्त्रीजी तथा उनका एक व्यक्तिगत सचिव मच पर

आकर बैठ गये। उनके आगमन पर उपस्थित जन समुदाय एक बार सम्मान प्रदर्शित करने के लिए खड़ा हो गया और जब मन्त्रीजी ने स्थान ग्रहण कर लिया तो उपस्थित लोग भी एक एक कर, अपनी कुर्सिया पर बैठ गये। लोगों ने तालियां बजाकर हर्ष ध्वनि की और मन्त्रीजी ने अपनी चिर परिचित ढंग द्वय लम्बी मुस्कान बिखेरकर, लोगो द्वारा किये गये सामूहिक अभिवादन का उत्तर दिया तथा मच पर बैठे ही बठे हाथ जोड दिये।

दस बजकर, बीस मिनट होने पर, मच पर बठे लम्बी चोटी वाले तिलकधारी पण्डितजी ने गणेश पूजन का मन्त्रोच्चारण प्रारम्भ कर दिया। राज इन्डस्ट्री के उद्घाटन मुहूर्त का यही समय था। पूजन के बाद पडित जी ने पहले सेठ लालचन्द के माथे पर और उसके बाद मन्त्रीजी के उन्नत भाल पर कुमकुम का लम्बा तिलक लगाया और चावल मढाये। बाद मे पण्डितजी ने पूजन का थाल अपने एक सहायक को दे दिया। वह व्यक्ति पण्डाल मे बैठे एक एक व्यक्ति की कुर्सी के पास गया और बारी-बारी सभी लोगों के माथे पर तिलक लगा दिया।

इधर पण्डितजी का वह सहायक लोगों के माथों पर तिलक लगा रहा था और उधर कुछ लोग मन्त्रीजी को फूल-मालाओ से लाद रहे थे। सबसे पहले सेठ लालचन्द ने और उसके बाद राजू ने मन्त्रीजी को मालाए पहनाई। उन दोनों के बाद अन्य अनेक व्यक्तियो ने मन्त्रीजी को पुष्प हार समर्पित किये, जिनमे एक गिरधर बाबू भी था।

मन्त्रीजीने मुस्कराते हुए, अपने गले मे पड़े हारा का निकाला और मच पर एक ओर मालाओ के उस ढेर को रख दिया। तब व खड़े हुए और मच पर लग हुए माइक के निकट आकर खड़े हो गये। फिर कुछ सोचते हुए बोले—"माननीय सेठ, लालचन्दजी साहब और उपस्थित महानुभावो!" मन्त्रीजी एक क्षण के लिए रुके और फिर कहने लगे—"आपके इस नगर मे आज से औद्योगीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो रही है। इस प्रक्रिया की पहली कड़ी के रूप म आज मैं इस राज इडस्ट्री का उदघाटन कर रहा हू। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि सेठ लालचन्दजी ने इस उद्योग को यहा स्थापित कर, अत्यन्त ही दूरदर्शिता का परिचय दिया है और जन साधारण के हित मे एक महान् क्रान्तिकारी और उद्देश्यपूर्ण कदम उठाया है।'

मन्त्रीजी ने आगे कहा—"इस कारखाने की स्थापना से क्षेत्र की बेकारी समस्या का समाधान भी होगा। साथ ही दूसरे उद्योगपतियों को प्रेरणा मिलेगी। मुझे विश्वास है कि आने वाले समय म अन्यान्य उद्योगपति भी इस नगर म कारखाने स्थापित करेंगे और इस प्रकार इस क्षेत्र की प्रगति सुनिश्चित होगी।"

मन्त्रीजी ने कहा—"मैं इस कारखाने की प्रगति क लिए अपनी ओर से शुभ कामनाए प्रकट करता हू तथा मेरी ओर से जो भी सम्भव होगा, सहयोग देने का वचन देता हू।" और फिर मन्त्री महोदय पुन अपने स्थान पर विराजमान हो गये। मन्त्रीजी का उद्घाटन भाषण जब समाप्त हुआ तो राजू मच पर आ गया, अब तक वह अन्य लोगो के साथ, एक कुर्सी पर मच के सामने बैठा था। राजू ने धन्यवाद भाषण दिया और तब मन्त्रीजी सहित सभी लोग उठकर, पण्डाल के निकट ही बने दूसरे शामियाने मे चले गये जहा स्वल्पाहार की व्यवस्था थी। स्वल्पाहार के बाद उद्घाटन समारोह की इतिश्री हो गई। मन्त्रीजी अपनी कार म बैठकर, डाक बगले म चले गये और लोग अपने-अपने घरो को चले गए।

उद्घाटन की रस्म के साथ ही कारखाने की चिमनिया धुआ उगलने लगी। कारखाने की चारो भट्ठिया एक ही साथ चालू हो गई थी। और उन भट्ठियो के साथ ही दूसरे यन्त्र भी अपना अपना काय करन लग थे। इधर लोहा पिघल रहा था तो उधर साचो म नये नये औजार तथा बतन ढल रहे थे। इस प्रकार राज इडस्ट्री मे उत्पादन प्रारम्भ हो गया था।

राजू सध्या पाच बजे तक कारखाने म अपने लिए बने कक्ष म बैठा रहा। सायकाल जब मजदूरो की छुट्टी हो गई, कार्यालय के कमचारी भी अपने अपने घरो को चले गये तो कारखाने का प्रबन्धक कमल किशोर राजू के कमरे मे आया और उसने एक दिन की मुकम्मिल रिपोट दी। रिपोट पढ-सुनकर राजू बहुत प्रभावित हुआ और सुन्दर भविष्य की कल्पना करने लगा। उसने प्रबन्धक को भी छुट्टी कर दी और वह अकेला अपनी कुर्सी पर आखें मूदे हुए देर तक बैठा रहा। विचारमग्न सुन्दर और सुखद भविष्य की कल्पना मे खोया हुआ। सोचते सोचते अचानक जब उसे ध्यान आया कि एक लाख रुपया राज्य सरकार का तथा सत्तर हजार रुपया सेठजी

का ऋणस्वरूप पड़ा हुआ है। वह इस वस्तुस्थिति से साक्षात्कार कर, एक बार तो सिहर उठा। ताश के पत्तों की तरह उसके सुन्दर सपनों का वह महल एक तो गिर ही पड़ा, जो उसने अभी-अभी कल्पना-लोक में विचरण करते हुए बनाया था। कर्ज के बोझ से उसने अपने-आपको दबा हुआ महसूस किया। और फिर वह उदास हो गया। अभी कुछ ही क्षणों पूर्व उसके चेहरे पर जो प्रसन्नता का भाव था, सुन्दर और सुखद भविष्य की कल्पना मात्र से उसकी आकृति पर जो सन्तोष की भावना उभर आई थी, वह लुप्त हो गई।

किस तरह यह ऋण चुकाया जा सकेगा? किस तरह मैं कभी उऋण होकर, इस संसार में सिर ऊंचा कर सकूंगा?? इन्हीं प्रश्नों पर विचार करते हुए, उसने अपनी कुर्सी छोड़ी और विचारों में डूबते तिरते वह बरामदा पार कर, सीढ़ियों से उतरा तथा दो एक मिनट के लिए लॉन में रुक गया। उसने गर्दन उठाकर इधर उधर घुमाई। वह उस कारखाने की विशाल और भव्य इमारत को निहार रहा था। शायद उस इमारत को देखकर ही उसके अशान्त मन को कुछ शान्ति मिले।

फिर वह शाम ढले चला। कारखाने के चौकीदार ने मालिक को आते हुए देखकर मुख्य द्वार का फाटक खोल दिया और जब वह अपने स्कूटर पर बैठने लगा तो उस नेपाली चौकीदार ने सैनिक ढंग से सल्यूट दी। मालिक का स्कूटर ज्यों ही कारखाने से निकला, चौकीदार ने फाटक बन्द कर दिये। राजू ने चलते स्कूटर पर ही गर्दन घुमाकर, चौकीदार की तत्परता देखी थी। राजू सीधा अपने सेठ की हवेली पहुंचा। अब तक वह सेठ की हवेली में ही रहता है। उस सन्ध्या सेठजी बहुत ही प्रसन्न प्रतीत हो रहे थे।

22

आगामी तिमाही के लिए कच्चे माल का कोटा तय हो गया था। और इसकी सूचना राजू को मिल चुकी थी। परमिट लाने के लिए उसे जयपुर जाना पड़ा। जयपुर पहुचने के और भी कई कारण थे। उत्पादन की बिक्री का प्रबन्ध करना और मत्री, सचिव तथा सम्बन्धित अधिकारियो और कर्मचारियो को उनके द्वारा किये गए सहयोग का बदला चुकाने की बात भी उसके ध्यान मे थी।

राजू जानता था कि उसकी सफलता का रहस्य बहुत कुछ अशो मे डिप्टी सेक्रेट्री जेलदार सिंह के सक्रिय योगदान म छिपा हुआ है। और भावी सफलता भी उसी के सहयोग पर निभर करती है। इसलिए जिस दिन वह जयपुर पहुचा, उसी दिन सध्या समय वह नोटो का एक भारी सा बण्डल और बढिया विलायती शराब की एक बोतल तथा साथ ही कुछ मेवे मिष्ठान, नमकीन और फ्रूट आदि लेकर, जेलदार सिंह की कोठी पर पहुच गया।

रविवार होने के कारण उस दिन सचिवालय तो बन्द था। वह दिन भर होटल मे ही रहा। रात को गाडी में उसे नीद नही आ सकी थी, सो वह दिन भर होटल मे सोता रहा। उसने विचार किया कि आज जेलदार सिंह से मिलने के बाद, कल दिन मे सचिवालय जाऊगा तो ठीक रहेगा।

जब वह जेलदार सिंह की कोठी पर पहुचा तो बाहर ही चपरासी ने उसको बता दिया कि डिप्टी साहब तो पंजाब गये हुए हैं। उन्होंने दस दिन की छुट्टी ले रखी है।

राजू ने सोचा, साथ लाया हुआ सामान और नोटों का बण्डल मेम साहब को दे दू। मेम साहब खुद ही जेलदार सिंह को सब कुछ बता देंगी। यही सोचकर वह कोठी के भीतर चला गया।

मेम साहब कोठी के भीतर घुसते ही दायी ओर बने कमरे मे अकेली बैठी रेडियो सुन रही थी। नमस्ते—नमस्ते के बाद, राजू ने वह सामान मेम साहब के आगे रखा और अपनी छोटी सी अटेची को खोलकर, नोटो का वह बण्डल निकाला। बण्डल मेम साहब के हाथो मे थमाते हुए राजू ने पूछा—"साहब कब तक लौटेंगे ?"

"उनतीस-तीस तारीख तक अवश्य आ जायेंगे। एक तारीख को उन्हें ड्यूटी पर हाजिर होना है।'

मेम साहब जब बोली तो राजू के मन का सन्देह दूर हो गया। वह मेम साहब के मुह की ओर देखने लगा। जी भरकर देख लेने के बाद उसने कहा—"क्या मैं आपका शुभ नाम पूछ सकता ?"

"मुझे पद्मा कहते हैं। ' मेम साहब ने उत्तर दिया।

'पद्मा ?" राजू के मुह से एक ही शब्द निकला और वह चुप हो गया। कुछ समय रुककर उसने कहा—"तू कितनी बदल गई है, पद्मा ! पहचानने मे भी नही आती। तुझे क्या हो गया ? तेरा वह हाथी-सा शरीर कैसे सूख गया है ?"

पद्मा सचमुच सूख कर कांटा हो गई है और उसके स्वभाव मे भी परिवर्तन हो गया है। पहले वह सदैव खुश मिजाज और हँसती खेलती रहती थी। चुहलबाजी उसे बहुत पसंद थी। लेकिन अब तो वह बहुत ही गम्भीर तथा उदास नजर आ रही है। थकी हुई और दुबली-पतली, जैसे उसको किसी असाध्य रोग ने घेर रखा है और वह कई दिनो से बीमार है। न पहले का सा शरीर, न रूप रंग। न हँसी ठट्ठा। इधर राजू के शरीर और स्वभाव मे भी भारी अन्तर आ गया था। पहले वह बहुत दुबला पतला रहता था, अब उसके शरीर पर चर्बी चढी हुई दिखाई देती

है, रग भी पहने की अपेक्षा साफ और उजला हो गया है। पहले वह अक्सर खामोश और गुमसुम रहता था, लेकिन अब वाचाल हो गया है और चेहरे मे प्रसन्नता के भाव उभर रहे हैं। पद्मा उसको पहचान न सकी।

'तूने मुझे पहचाना नही पद्मा ?" पद्मा को अपनी ओर एकटक दखते हुए देखकर राजू ने कहा।

'मेरी स्मरण शक्ति कुछ कमजोर सी हो गई है।" पद्मा न उत्तर दिया।

"मैं वही राजू हू। राजू ने कहा—"जो गगानगर की जेल म तुझे पढाता था।"

"राजू ? वह जोर से चिल्लाई। उसने नाटो के उस बण्डल को, जो अब तक उसने थाम रखा था एक तरफ फेंका और उसके पावो से लिपट गई। राजू न अपनी बाहो म भरकर, उसे उठाया और उसके बालो मे हाथ डालकर, धीरे धीरे सहलान लगा। पद्मा की आखो मे सावन भादो की सी झडी लग गई। उसके आसू थम नही रहे थे।

"रोने धोने से तो कोई लाभ नही पद्मा!' राजू ने कहा— प्रतीत होता है, तुझे बहुत कष्ट है। लेकिन पगली रोने से कही कष्ट दूर होते है ? फिर यह भी सोच कि इस ससार म सुखी कौन है ? ऐसा भाग्यशाली कौन है जिसकी जिन्दगी के साथ कष्टो का नाता रिश्ता नही ?'

यद्यपि राजू की दार्शनिक बातो और उपदेश का तो उस पर कोई असर नही हुआ, लेकिन जब वह रोते रोते थक गई, उसकी आखो के आसू सूख गये तो उसने बाथरूम म जाकर मुह धोया तथा आखो पर छींटे मारे और तब कुछ स्वस्थ सी होकर वापस लौट आई और राजू के निकट एक कुर्सी पर बठ गई।

रेडियो तब भी बज रहा था। बोल फूट रहे थे—कभी सुख है कभी दु ख है, इसी का नाम दुनिया है। पद्मा न बटन घुमाकर रेडियो को चुप कर दिया। और तब बिना पूछे ही अपनी रामकहानी सुनान लगी। कहने लगी—

'मैट्रिक पास कर लेने के साथ ही पिताजी रिटायर हो गये। और हम

लोग पंजाब में अपने गांव चले गये। मैंने अपना अध्ययन जारी रखा। इण्टर और उसके बाद, बी ए की प्राइवेट परीक्षा दी और पास भी हो गई। बी ए पास कर लेने के बाद पिताजी ने इन डिप्टी साहब के साथ मेरी शादी कर दी। शादी के समय यह साहब इसी पद पर था। मैं इसके साथ चली आई।"

पद्मा ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—"यह डिप्टी साहब आदमी नहीं, हैवान है हैवान। दारू पीता है और एक अलग ही दुनिया में रहता है। जहां तक दारू का सवाल है, मुझे कोई विशेष आपत्ति नहीं। इस रोग से आजकल कौन बचा हुआ है? लेकिन यह दारू पीकर, पराई औरतों को घर पर बुलाता है और मेरी आंखों के सामने ही उनसे भोग करता है। कोई और हाथ नहीं लगती तो ड्राइवर की बीवी को ही बुला लेता है। इसके ड्राइवर की बीवी दूसरी पेटेन्ट है।

वह कहे जा रही थी और राजू ध्यानपूर्वक सुन रहा था। पद्मा ने आगे कहा—"और तो और यह शैतान का बच्चा मेरे से खाटे कम करवाना चाहता है। कभी कहता है, इस मन्त्री के पास जा, कभी कहता है, उस नेता के साथ सो, मैं जब इन्कार करती हूं तो यह मुझे शराब पीकर निर्दयता के साथ पीटता है। मैंने आज तक इसकी बात नहीं मानी। मैं अपनी जिद्द पर अड़ी हुई हूं और यह मेरी जान लेने पर उतारू है। बहुत बार सोचती हूं कि आत्म हत्या कर लूं। लेकिन इतना साहस भी मैं अपने भीतर अनुभव नहीं करती। अब सोचती हूं इस शैतान का तलाक दे दूं। लेकिन तलाक देकर जाऊं कहां? पिताजी गत वर्ष स्वर्गवासी हो गये। और जो विमाता है, उसका स्वभाव आप जानते ही हैं। पीहर में कोई स्थान नहीं है। और फिर वहां जाऊं भी तो किसके सहारे दिन काटूं?'

पद्मा कहना चाहती थी कि अगर आप मुझे सम्भाल लें तो मैं इस राक्षस से पिण्ड छुड़ा सकती हूं। लेकिन वह कह नहीं सकी। राजू ने भी अपने विगत जीवन की घटनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक बताया और अन्त में कहा—"अभी तक मैंने शादी नहीं की है।' पद्मा को यह सुनकर कुछ सन्तोष हुआ कि राजू अभी अविवाहित है। उसने सोचा शायद राजू मुझे अपना ले। राजू ने भी एक बार उससे कहना चाहा—"तुम निश्चित

रहो। तुम्हारा यह बन्धन कटने ही वाला है। मैं तुझे इस कैद से मुक्त करके ही रहूंगा।" वह पद्मा को कहना चाहता था—"मैंने अब तक शादी सिर्फ इसलिए नहीं की कि मुझे तेरी प्रतीक्षा थी।" लेकिन वह कुछ भी नहीं कह सका। मौन रहा। अपनी आपबीती सुना देने के बाद, वह चुप हो गया था।

जब रात के दस बज गये और जेलदार सिंह का चौकीदार बार बार उस कमरे का चक्कर काटने लगा तो राजू ने सोचा—अब यहां से उठ ही जाना चाहिए और वह उठकर होटल चला आया।

23

राजू एक दिन अपने कार्यालय मे बैठा डाक देख रहा था। जयपुर से जो पत्र आये थे, उनमे एक पत्र उसके नाम का था और उस पर लिखा हुआ था—व्यक्तिगत। राजू ने सबसे पहले उसी लिफाफे को खोला और पत्र पढ़ने लगा। लिखा था—

"प्रिय राजू !"

मैंने जैलदारसिंह से नाता तोड़ने का निश्चय कर लिया है। और अदालत में तलाक की अर्जी दे दी है। मैं अब अलग एक मकान मे रहती हू। अदालत की ओर से निर्णय होने पर मैं जयपुर छोड दूगी। जयपुर छोडकर मैं जाऊगी कहा इसका मुझे पता नही है। लेकिन देश बहुत लम्बा चौडा है। कही भी चली जाऊगी। आखिर पढ़ी लिखी [redacted]। ग्रेजुएट हू। पेट भरने लायक कही भी नौकरी मिल जायेगी। कही बाहर जाकर नौकरी करने का ही विचार है। लेकिन जयपुर मे हरगिज नही रहूगी। हा, अगर आप अपने कारखाने मे मुझे नौकरी दे दें तो मैं अपने आपको अधिक सौभाग्यशाली, सतुष्ट और सुखी अनुभव करूगी।

" आप मेरी इस प्रार्थना पर विचार करें और भविष्य मे जब कभी जयपुर आयें तो मुझसे अवश्य मिलने का कष्ट करें। यहा मेरा पता है—

प्लाट नम्बर 32। हाथी बाबू का बाग।" नीचे ही नीचे लिखा था।

आपकी ही—पद्मा

राजू ने उस पत्र को कई बार पढ़ा और मन ही मन उसकी हिम्मत पर दाद देने लगा। निकट भविष्य में उसने जयपुर जाने का निश्चय भी कर लिया। इस बार जब राजू जयपुर आया और पद्मा से मिला तो उसे विदित हुआ कि अदालत ने उसकी अर्जी मंजूर कर ली है और जेलदार सिंह से उसका सम्बन्ध विच्छेद हो गया है। उसे यह भी जानकारी मिली कि जेलदार सिंह ने अपने ड्राइवर की पत्नी को घर में डाल लिया है और वह ड्राइवर तबादला करवाकर, कहीं अन्यत्र चला गया है। इस बार राजू न तो सचिवालय गया, न जेलदारसिंह अथवा अन्य किसी अधिकारी से मिला। वह पद्मा को साथ लेकर सीधा जोधपुर चला आया। पद्मा उसकी पी ए बन चुकी थी।

24

राज इंडस्ट्री तेजी से प्रगति कर रही थी। उसका कारोबार दिन दो गुना, रात चौगुना बढ रहा था। नये-नये मकान बन रहे थे, मशीनें आ रही थी और कारखाने मे फिट हो रही थी। मजदूरो तथा कर्मचारियों की सख्या बढाई जा रही थी। देखते ही देखते हजारो लोगो को उस कारखाने मे काम मिल गया था और लगभग दस एकड जमीन पर वह कारखाना फैल गया था।

उत्पादन तेजी से बढ रहा था और कच्चे माल की गाडियां भर भर कर आ रही थी। राज इन्डस्ट्री द्वारा उत्पादित सामान की बाजार मे बेहद माग थी और उस माग को पूरा करना सम्भव नही था। सामान का जो भी भाव इडस्ट्री मे तय हो जाता, उसी भाव मे बाजार उत्पादित माल को खरीद लेता था। मुनाफे की पूजी बढ रही थी।

राज इडस्ट्री का सरकार से सीधा सम्बन्ध था। कई मत्रियो और बडे अफसरो ने बेटो पोता के नामसे उस इडस्ट्री मे शेयर खरीद लिये थे। उन्हे भी अच्छा खासा मुनाफा हाथ लग रहा था। राज इडस्ट्री सरकारी विभागो को विशेषत निर्माण विभाग को सामान बेचती थी और सरकारी विभागो से मनमाना मूल्य वसूल किया जाता था। कभी-कभी तो किसी-किसी विभाग मे हजारो, लाखो के फर्जी बिल बन जाया करते थे और वे

बिल आसानी से पास भी हो जाते थे। इस तरह जो कच्चा माल बच जाया करता था, वह ब्लैक मे बेच दिया जाता था।

सरकार की ओर से पूरा पूरा सहयोग मिल रहा था। आमदनी के स्रोत चारो तरफ से खुल गये थे। राजू ने बहुत शीघ्र ही सेठजी के सत्तर हजार रुपये वापस कर दिये थे। बीस हजार की रकम तो उन्होने इस कारखाने मे लगाई थी, बीस हजार रुपये लेकर वह बम्बई पहुचा था और तीस हजार रुपये सेठजी ने उसके मुकद्दमे म खर्च किये थे। इस प्रकार कुल सत्तर हजार और उसका उचित ब्याज राजू ने सेठजी को दे दिया था। उसने सरकार से ली हुई एक लाख की रकम और उसका ब्याज भी जमा करवा दिया था। सरकार ने नये सिरे से राज इडस्ट्री के लिए दस लाख का एक ऋण और ढाई लाख का अनुदान दे दिया था। राजू अब किसी का कर्जदार नही था। यदि कर्जदार थी तो राज इडस्ट्री, जिसके लिए वह अकेला जिम्मेदार था। उससे सम्बन्धित कई भागीदार थे, कई डायरेक्टर जिनमे बडे बडे मिनिस्टर थे, अफ्सर थे, व्यापारी थे। और उद्योगपति थे। एक अर्थ मे कर्ज देने वाली सरकार स्वय ही उस कर्ज के लिए जिम्मेदार थी।

राजू अब तक नकली हिसाब तयार करवाने और जाली रेकार्ड बनवाने म पारगत हो गया था। कारखाने मे अगर एक करोड की वार्षिक आय होती तो वह मुश्किल से दस-बीस लाख रुपया की आय दिखाता और बाकी रकम ऊपर ही ऊपर डकार जाता। और इस बात का किसी को पता तक नही चलता। यदि राजू का किसी को भेद था तो एक पद्मा को था। वह पद्मा से कुछ भी छिपाकर नही रखता था। वह उसकी पी ए तो थी ही, अन्तरग मित्र भी थी। पद्मा पर उसका पूरा भरोसा था। वह जाली रेकार्ड और हिसाब पद्मा की सहायता से ही तयार करता था।

उसने विभिन्न बको मे विभिन्न नामो से जो खाते खोल रखे थे, उनमे कई खाते पद्मा के नाम से भी थे और उसके नाम लाखो रुपयो की पूजी विभिन्न बको म जमा थी। उसने बाजार तथा इडस्ट्री के बीच म कई एजेंसिया कायम कर रखी थी, और इन एजेंसियो मे से कई एजेंसियो की मालिक पद्मा ही थी।

कई बार राजू सोचता, अगर यह पपा कभी बदल खड़ी हुई तो? लेकिन फिर वह विचार करता, पपा ऐसा नहीं कर सकती। राजू के इस विचार का आधार यह था कि वह पपा को अपने से अलग नहीं समझता था। और असल में वे थे भी दो शरीर एक प्राण।

25

राज इडस्ट्रीज अब उत्पादन मे नये-नये तरीके ईजाद कर रही थी तथा देश के विकास मे काम आने वाली मशीनें बनाने लगी थी।

सरकार ने राज इडस्ट्रीज को अपने उत्पादन के निर्यात के लिए एवार्ड दिया। साथ ही देश के अन्य एवार्डेड पन्द्रह औद्योगिक सस्थानो के प्रबन्ध निदेशको का डेलीगेशन योरोप व ऐशिया के विभिन्न देशो मे भेजने की घोषणा की।

इस डलीगेशन मे राज इडस्ट्रीज के प्रबन्ध निदेशक राजेन्द्र कुमार वर्मा का नाम भी था। साथ ही हर निदेशक को अपने साथ अपने पी ए को ले जाने की अनुमति थी अत राजू के साथ पद्मा भी पी ए की हैसियत से गई।

इस डेलीगेशन ने योरोप व ऐशिया के कई देशो का भ्रमण किया। आखिर मे वे चीन पहुचे। जहा से उन्हें टूर समाप्त कर भारत पहुचना था।

चीन म उन्होने उनके पुराने म्यूजियम देखे तथा वहा उन्हें बुद्ध की प्रतिमाए भी देखने को मिली।

वापसी से पूव सध्या बडी सुहावनी सध्या थी—उस दिन उनके लिए पीकिंग के एक भव्य थियेटर म एक सास्कृतिक कायक्रम रखा गया

जिसे देखने सभी लोग गये। वहा उन्होंने एक चीन की लोक-कथा पर आधारित एक नृत्य नाटिका देखी।

जिसमे राजू और पद्मा का अलग-अलग अपने जीवन का साम्य लगा।

वहां से वे मंत्रमुग्ध होकर अपने होटल पहुंचे।

राजू और पद्मा दोना अपने विचारो मे मग्न थे। रात्रि के भोजन के बाद जब पद्मा अपने कमरे म गई तो राज कपडे बदल उससे मिलने उसी के कमरे मे चला गया।

राजू उस कमरे मे जब पहुंचा तब वह निणय करके गया था कि वह पद्मा से अपना जीवन साथी बनन का प्रस्ताव रखेगा। उधर पद्मा भी एक निणय कर चुकी थी कि वह राजू को किसी के साथ शादी कर व्यवस्थित जीवन बिताने की पेशकश करेगी।

दोनो जब मिले दोना मौन व विचारमग्न थे। पद्मा ने मौन तोडा, उसने कहा, "राजू बाबू! मैं सोचती हू कि आप अब कोई अच्छी सी लडकी देख अपना जीवन व्यवस्थित कर लें।"

राजू ने सुनकर कहा, "हा पद्मा! आज मैं भी इसी तरह सोचकर आया था—अब मैं भी व्यवस्थित होना चाहता हू। क्या तुम मेरी जीवन साथी बन मुझे व्यवस्थित करने की कृपा करोगी?"

पद्मा भाव विह्वल हो उसके चरणो में गिर पडी। राजू ने उसे उठा हृदय से लगा लिया।

हिमालय के उस पार से पद्मा अब श्रीमती पद्मा राजेन्द्र कुमार वर्मा बन कर लौटी।

• • •